

श्रीगणेशाय नमः ।

गोसाईं श्रीतुलसीदासजी-कृत

रामायण

(लंका-कांड)

जिसमें

वानरी सेना को साथ में लेकर, श्रीरामचन्द्रजी का लंका
पर चढ़ाई करना, वहाँ पर युद्ध-विजयी रावण आदि
राक्षसों को मारकर, लंका का राज्य विभीषण को
देना और वहाँ से जानकीजी और लक्ष्मण
को साथ में ले, पुनः अयोध्या पुष्पक-
विमान द्वारा आकर भरत जी से
मिलने तक वृत्तांत वर्णित है ।

कानपुर

मुं० नवलकिशोर सी० आई० ई० के यंत्रालय में प्रकाशित
जनवरी सन् १९०७ ई० दूसरी बार.

श्रीगणेशायनमः

रामायण तुलसीकृत

लंकाकाण्ड

श्लोक

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुंशार्दूलचर्म्माम्बरं। कालव्यालकरालभूषणाधरंगंगाशशांकप्रियम् ॥ काशीशंकलिकल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं। नौमीड्यंगिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहम् ॥ १ ॥ योददातिशतांशम्भुःकैवल्यमपिदुर्लभं ॥
खलानांदण्डकृत्योसौ शंकरः सन्तनोतुमे ॥ २ ॥

दो॰ लव निमेष परमाणु युग वर्ष कल्प शर चण्ड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ काल जासु कोदण्ड

सो॰ सिन्धु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ
अब बिलम्ब केहि काम करहु सेतु उतरै कटक।
सुनहु भानु कुल केतु जामवन्त कर जोरि कह।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं ।

यह लघु जलधि तरत कत बारा। अस सुनि पुनि कह पवन कुमारा
प्रभु प्रताप बडवानल भारी। सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी

तब रिपु नारि रुदन जल धारा। भर्‍यो बहोरि भयो तेहि खारा।
सुनि अस युक्ति पवनसुत केरी। बिहँसे रघुपति कपि तन हेरी
जामवन्त बोले दोउ भाई। नल नीलहि सब कथा सुनाई ।
राम प्रताप सुमिरि उर माहीं। करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं
बोलि लिये कपि निकर बहोरी। सकल सुनहु बिनती इक मोरी
राम चरण पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू
धावहु मर्कट बिकट बरूथा। आनहु बिटप गिरिन के यूथा
सुनि कपि भालु चले करि हूहा। जय रघुबीर प्रताप समूहा।

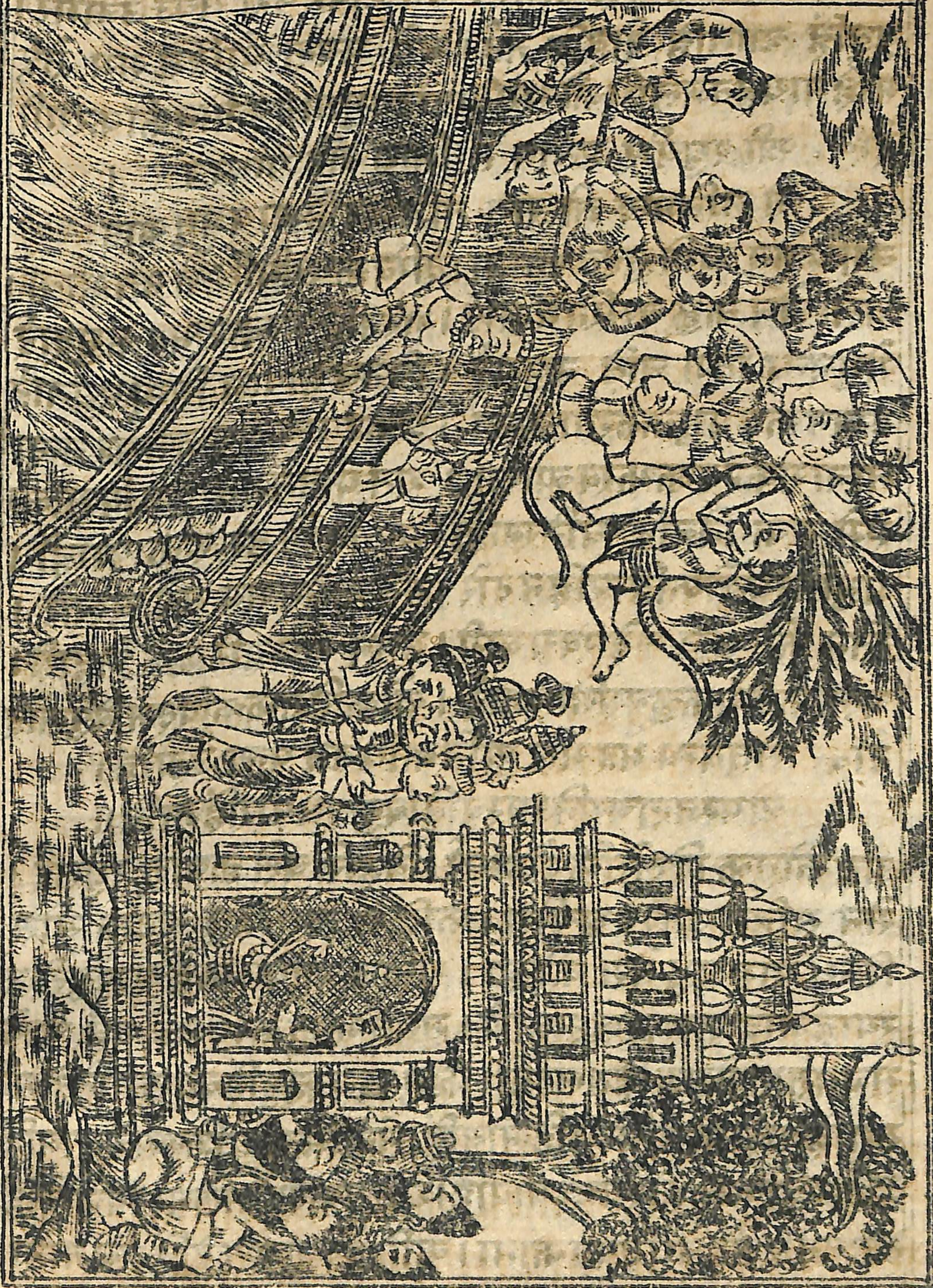
दो० अति उतंग तरु शैल गण लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नील कहँ बिरचहिं सेतु बनाइ।

शैल बिशाल आनि कपि देहीं। कन्दुक इव नल नील सो लेहीं
देखि सेतु अति सुन्दर रचना। बिहँसि कृपानिधि बोले बचना
परम रम्य सुन्दर यह धरणी। महिमा अमित जाइ नहिं बरणी
करिहौं यहाँ शम्भु थापना। मोरे हृदय परम कल्पना।
सुनि कपीश बहु दूत पठाये। मुनिवर निकर बोलि ले आये
लिंग थापि विधिवत करि पूजा। शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा
शिव द्रोही मम दास कहावै। सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै
शंकर बिमुख भक्ति चह मोरी। सो नर मूढ़ मन्द मति थोरी

दो० शंकर प्रिय मम द्रोही शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्प भर घोर नरक महँ बास।।

जो रामेश्वर दरशन करिहैं। सो तनु तजि मम धाम सिधरिहैं
जो गंगा जल आनि चढ़ाई। सो सायुज्य मुक्ति नर पाई
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भक्ति मोरि तेहि शंकर देइहि
मम कृत सेतु जो दरशन करिहैं। सो बिनु श्रम भवसागर तरिहैं।
राम वचन सब के मन भाये। मुनिवर निज निज आश्रम आये

श्रीरामचन्द्र जीकी आज्ञानुसार नल नीलादि कपियों को समुद्र में सेतु बाँधना और-
श्रीरामचन्द्र को रामेश्वरजी महादेव कास्थापन करना॥



गिरिजा रघुपति की यह रीती। सन्तत करहिं प्रणत पर प्रीती।
बाँधेउ सेतु नील नल नागर। राम कृपा यश भयउ उजागर।
बूड़हिं आनहिं बोड़हिं जेई। भये प्रबल बोहित सम तेई।
महिमा यह न जलधि की बरणी। पाहन गुण न कपिन की करणी।

दो॰ श्री रघुबीर प्रताप तें सिन्धु तरे पाषाण।
ते मतिमन्द जो राम तजि भजहिं जाय प्रभु आन

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा।
चली सेन कछु बरणि न जाई। गरजहिं मर्कट भट समुदाई।
सेतुबन्ध ढिग चढ़ि रघुराई। चितव कृपाल सिन्धु बहुताई।
देखन कहँ प्रभु करुणा कन्दा। प्रकट भये सब जलचर वृन्दा।
नाना मकर नक्र झख व्याला। शत योजन तन परम विशाला।
ऐसे एक तिनहिं धरि खाहीं। एकनि के डर एक पराहीं।
प्रभुहिं विलोकहिं टरहिं न टारे। मन हर्षित सब भये सुखारे।
तिन की ओट न देखिय वारी। मगन भये हरि रूप निहारी।
चला कटक कछु बरणि न जाई। को कहि सक कपि दल बिपुलाई।

दो॰ सेतुबन्ध भइ भीर अति कपि नभ पन्थ उड़ाहिं।
अपर जलचरनि उपर चढ़ि बिनु श्रम पारहिं जाहिं॥

यह कौतुक बिलोकि दोउ भाई। बिहँसि चले कृपालु रघुराई।
सेन सहित उतरे रघुबीरा। कहि न जात कछु यूथप भीरा।
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकल कपिन कहँ आयसु दीन्हा।
खाहु जाइ फल फूल सुहाये। सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये।
सब तरु फले राम हित लागी। ऋतु अनऋतुहिं काल गति त्यागी।
खाहिं मधुर फल बिटप हिलावहिं। लंका सन्मुख शिखर चलावहिं।
जहँ कहुँ फिरत निशाचर पावहिं। घेरि सकल मिलि नाच नचावहिं।
दशनन काटि नासिका काना। कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना

जिन कर नासा कान निपाता। तेइ रावणहिं कही सब बाता
सुनत श्रवण वारिधि बन्धाना। दश मुख बोलि उठा अकुलाना
दो॰ बाँधेउ जलनिधि नीरनिधि जलधि सिन्धु वारीश।
सत्य तोयनिधि कम्पनिधि उदधि पयोधि नदीश
व्याकुलता निज समुझि बहोरी। बिहँसि चला गृह करि भय भोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये। कौतुकही पाथोधि बँधाये
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी।
चरण नाइ शिर अंचल रोपा। सुनहु बचन प्रिय परिहरि कोपा
नाथ बैर कीजे ताही सों। बुधि बल जीति सकिय जाही सों
तुमहिं रघुपतिहिं अन्तर कैसा। खल खद्योत दिवाकर जैसा।
अति बल मधु कैटभ जिन मारा। महावीर दिति सुत संहारा।
जेहि बलि बाँधि सहस भुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महि भारा
तासु विरोध न कीजिय नाथा। काल कर्म गुण जिन के हाथा।
दो॰ रामहिं सौंपहु जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुत कहँ राज्य देइ बन जाय भजहु रघुनाथ ॥
नाथ दीनदयाल रघुराई। बाघौ सन्मुख गये न खाई।
चाहिय करन सो सब करि बीते। तुम सुर असुर चराचर जीते।
वेद कहहिं अस नीति दशानन। चौथे पनहिं जाइ नृप कानन।
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता। जो कर्त्ता पालन संहर्त्ता।
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी। भजहु नाथ ममता मद त्यागी।
मुनि वर यतन करहिं जेहि लागी। भूप राज्य तजि होहिं बिरागी
सोइ कोशलाधीश रघुराया। आये करन तोहिं पर दाया।
जो प्रिय मानहु मोर सिखावन। होइहि सुयश तिहूं पुर पावन
दो॰ अस कहि लोचन वारि भरि गहि पद कम्पित गात
नाथ भजहु रघुनाथ पद मम अहिवात न जात।

तब रावण मय सुता उठाई। कहै लागु खल निज प्रभुताई।
सुनु तैं प्रिया मृषा भय माना। जग योधा को मोहिं समाना।
वरुण कुबेर पवन यम काला। भुज बल जिते सकल दिगपाला।
देव दनुज नर सब वश मोरे। कवन हेतु भय उपजा तोरे।
नाना विधि कहि तेहि समुझाई। सभा बहोरि बैठ सो जाई।
मन्दोदरी हृदय अस जाना। काल विवश उपजा अभिमाना।
सभा जाइ मंत्रिन सों बूझा। करिय कवन विधि रिपु सन जूझा।
कहहिं सचिव सुनि निशिचर नाहा। बार बार प्रभु पूछहु काहा।
कहहु कवन भय करिय विचारा। नर कपि भालु अहार हमारा।
दो॰ वचन सबनि के श्रवण सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति विरोध न करिय प्रभु मंत्रिन मति अति थोरि॥
कहहिं सचिव सब ठकुर सुहाती। नाथ न भल होइहि यहि भाँती।
वारिधि लाँघि एक कपि आवा। तासु चरित मन महँ सब गावा।
क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू। जारत नगर न सक धरि खाहू।
सुनत नीक आगे दुख पावा। सचिवन्ह अस मत प्रभुहिं सुनावा।
जो वारीश बँधायउ हेला। उतरे कपि दल सहित सुबेला।
सो जनु मनुज खाब हम भाई। वचन कहहु सब गाल फुलाई।
सुनि मम वचन तात अति आदर। निज मन गुणहु मोहि कहि कादर।
प्रिय वाणी जे सुनहिं जे कहहीं। ऐसे जग निकाय नर अहहीं।
वचन परम हित सुनत कठोरे। कहहिं सुनहिं ते नर प्रभु थोरे।
प्रथम वशीठ पठव सुन नीती। सीतहिं देइ करिय पुनि प्रीती।
दो॰ नारि पाइ फिरि जाहिं जो तौ न बढ़ाइय रार।
नाहिं तो सन्मुख समर महँ नाथ करिय हठ मार॥
यह मत जो मानहु प्रभु मोरा। उभय प्रकार सुयश जग तोरा।
सुत सन कह दशकन्ध रिसाई। असमत तोहिं शठ कवन सिखाई।

अबहीं ते उर संशय होई। बेणु वंश सुत भयसि घमोई।
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा। चला भवन कहि वचन कठोरा।
हित मत तोहिं न लागत कैसे। काल विवश कहँ भेषज जैसे।
सन्ध्या समय जानि दशशीशा। भवन चला निरखत भुजबीसा।
लंका शिखर रुचिर आगारा। अति विचित्र तहँ होत अखारा।
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावण। लागे किन्नर गन्धर्व गावन।
बाजे ताल पखावज बीणा। नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा।

दो॰ सुनासीर शत सरिस सो सन्तत करै विलास।
परम प्रबल रिपु शीश पर तदपि न कछु मन त्रास॥

इहाँ सुबेल शैल रघुबीरा। उतरे सेन सहित अति भीरा।
शैल शृंग इक सुन्दर देखी। अति उतंग सम शुभग विशेषी।
तहँ तरु किशलय सुमन सुहाये। लक्ष्मण रचि निज हाथ डसाये।
तापर रुचिर मृदुल मृग छाला। तेहि आसन आसीन कृपाला।
प्रभु कृत शीश कपीश उछंगा। बाम दहिन दिशि चाप निषंगा।
दुहुं कर कमल सुधारत बाना। कह लंकेश मंत्र लगि काना।
बड़ भागी अंगद हनुमाना। चरण कमल चापत विधि नाना।
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन। कटि निषंग कर बाण शरासन।

दो॰ इहि विधि करुणा शील गुण धाम राम आसीन।
धन्य सो नर यह ध्यान रत रहत सदा लवलीन॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु देखा उदित मयंक।
कहेउ सबहि देखहु शशिहि मृगपति सरिस अशंक॥

पूरब दिशि गिरि गुहा निवासी। परम प्रताप तेज बल राशी।
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी। शशि केहरी गगन बन चारी।
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा। निशि सुन्दरी केर शृंगारा।
कह प्रभु शशि महँ मेचकताई। कहहु कहा निज निज मति भाई।

कह सुग्रीव सुनहु रघुराया । शशि महँ प्रकट भूमि की छाया ।
मारेउ राहु शशिहि कह कोई । उर महँ परी श्यामता सोई ।
कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा । सार भाग शशि कर हरि लीन्हा ।
छिद्र सो प्रकट इन्दु उर माहीं । तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं ।
कह प्रभु गरल बन्धु शशि केरा । अति प्रीतम उर दीन्ह बसेरा ।
विष संयुत कर निकर पसारी । जारत बिरहवन्त नर नारी ।

दो० कह मारुतसुत सुनहु प्रभु शशि तुम्हार प्रिय दास
तव मूरति तेहि उर बसत सोइ श्यामता भास ।
पवन तनय के वचन सुनि बिहँसे राम सुजान
दक्षिण दिशा बिलोकि पुनि बोले कृपानिधान ।

देखु बिभीषण दक्षिण आशा । घन घमण्ड दामिनी बिलासा ।
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा । होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा ।
कहत बिभीषण सुनहु कृपाला । होइ न तड़ित न वारिद माला ।
लंका शिखर रुचिर आगारा । तहँ दश कन्धर केर अखारा ।
छत्र मेघ डम्बर शिर धारी । सो प्रभु जलद घटा अति कारी ।
मन्दोदरी श्रवण ताटंका । सो प्रभु जनु दामिनी दमंका ।
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सो रव सरस सुनहु सुर भूपा ।
प्रभु मुसुकान देखि अभिमाना । चाप चढ़ाय बाण सन्धाना ।

दो० छत्र मुकुट ताटंक सब हते एकही बान ।
सब के देखत महि गिरे मर्म न काहू जान ॥
यह कौतुक करि राम शर प्रविश्यो आइ निषंग
रावण सभा सशंक सब देखि महा रस भंग ।

कम्प न भूमि न मरुत बिशेषा । अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देखा ।
सोचहिं सब निज हृदय बिचारी । अशकुन भयउ भयंकर भारी ।
रावण दीख सभा भय पाई । बिहँसि वचन कह युक्ति बनाई ।

लंका के शिखर पर रावण को मन्दोदरी सहित नाच राग करना श्रीरामचन्द्र के बाण करके रावण के मुकुट मन्दोदरी के ताटंक कट के पृथ्वी पर गिरना ॥



शिरो गिरे सन्तत सुभ जाही। मुकुट गिरे कस अशकुन ताही
शयन करहु निज निज गृह जाई। गवने भवन सकल शिर नाई।
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ। जब ते श्रवण पूर महि खसेऊ।
सजल नयन कह युग कर जोरी। सुनहु प्राण पति विनती मोरी
कन्त राम विरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ उर धरहू।
दो॰ विश्वरूप रघुवंश मणि करहु वचन विश्वास
लोक कल्पना वेद कह अंग अंग प्रति जासु।
पद पाताल शीश अज धामा। अपर लोक अंगन्ह विश्रामा
भृकुटि विलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घनमाला
जासु घ्राण अश्विनी कुमारा। निशि अरु दिवस निमेष अपारा
श्रवण दिशा दश वेद बखानी। मारुत श्वास निगम निजवानी
अधर लोभ यम दशन कराला। माया हास बाहु दिगपाला।
आनन अनल अम्बु पति जीहा। उत्पति पालन प्रलय समीहा।
रोमावली अष्ट दश भारा। अस्थि शैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अध गो जातना। जग मय प्रभु की बहु कल्पना
दो॰ अहंकार शिव बुद्धि अज मन शशि चित्त महान
मनुज वास चर अचर मय रूप राशि भगवान।
अस विचारि सुनु प्राण पति प्रभु सन वैर बिहाइ
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिबात न जाइ।
बिहँसा नारि वचन सुनि काना। अहो मोह महिमा बलवाना
नारि स्वभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं।
साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक अशोच अदाया।
रिपु कर रूप सकल तैं गावा। अति विशाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज बस मोरे। समुझि परा प्रभाव अब तोरे
जानेउं प्रिया तोरि चतुराई। इहि मिमि कहेउ मोरि प्रभुताई

तब बत कही गूढ़ मृग लोचनि। समुझत सुखद सुनत भय मोचनि
मन्दोदरि मन महँ यह ठयऊ। प्रियहि काल वश मति भ्रम भयऊ।

दो॰ बहु विधि जल्पेसि सकल निशि प्रात भये दशकंध
सहज अशंक सो लंक पति सभा गयो मति अंध

सो॰ फूले फले न बेत यदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरंचि सम।

क्षेपक.

दो॰ मंत्रिन सहित दशानन चढ़ेउ धवरहर जाय ।
सारन कह तब राज सन देखहु कपि समुदाय॥

ये जो सिंह नाद किलकरहीं। सप्त ताल उन्नत संचरहीं।
सहस कोटि अतुलित बलवाना। इन के संग बानर परिमाना।
रणं अजीत ये सहज अशंका। नाद सुने काँपै गढ़ लंका।
नभ निरखहु इन के लंगूरे। जनु ऋतु पावस युग धनु पूरे
विश्वकर्मा के सुत गुण खानी। इन्ह परसे पय शिल उतरानी
बसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं। गोदावरी विमल जल पाहीं।
अति बल आगे धावहिं वीरा। इन्ह पर कृपा करहिं रघुवीरा
करहिं यमहु कर संगर ढीला। कज्जल बरण नाम नल नीला।

दो॰ पदुम अठारह कपि कटक चल इन की भुज छांह
निज कर सुरभि सुमन लै रघुपति पूजी बांह ।

यह जो आवत अचल समाना। चौदह ताड़ ऊँच परिमाना।
बास पुलिन्दा के तट करई। अम्बुद निकर निरखि कर धरई
रक्त कमल दल सम सब देहा। जनु विकसेउ सन्ध्या कर मेहा
हते मेदिनी पूँछ भवाई। लंका सोह चितव जनु खाई
तारा सुवन बालि को जायो। अति जुझार रघुपति मन भायो
हृदय गगन इहि के प्रभु भानू। पंच पदुम कपि निकर पयानू

कैरे वज्र बासव कर भंगा । उदयाचल कहँ लेइ उछंगा
परम चतुर सेनप इहि लागी । रघुपति कृपा करत बड़ भागी

दो॰ पाउ धरा धरि चापै पन्नग होइ अकाज ।
सेन अग्रसर देखहु यह अंगद युवराज ॥

यह जो श्वेत वरण तन रेखा । मनहुं रजत गिरि शृंग विशेखा ।
दीर्घ केश दारुण भुज दण्डा । चपल चलत बल बुद्धि प्रचण्डा ।
बास करै जलनिधि के तीरा । पान करै गोमती सु नीरा
नृप सुग्रीव केर अधिकारी । सबल व्यूह यह रचै सँवारी ।
जन्मत चन्द्रहि ग्रसन उड़ाना । इहि कर पुरुषारथ जग जाना
निरखि गगन राका शशि सोहा । शिशु अजान तेहि लखि मन मोहा
धरणी धरन कि धरन जब उड़ेऊ । सत्तरि योजन तें पुनि फिरेऊ

दो॰ कोटि पंच शत मर्कट रहहं सर्व्वदा साथ ।
कालहु तेरण लरि सकै कुमुद नाम कपि नाथ ।

ये देखहु जे चहुं दिशि घुमड़े । मनहुं लंक सावन घन उमड़े
आगू पीछू दश दिशि धावहिं । शिला शृंग तरु तोरत आवहिं
सहस नाग बल सबहि समाना । सप्त पदुम इन कर परमाना ।
काशीपुरी वास इन्ह केरी । समर कतहुं जिन्ह पीठन फेरी
तीक्षण दन्त नखायुध धारी । द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी ।
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा । लंका निकट कीन्ह जेहि डेरा ।
इहि कर जेठ बन्धु जमवन्ता । तेहि के बल कर पाव को अन्ता ।
देव दनुज को जूझै ताही । धरा होइ कर दन्तुक जाही
बसै अशंक नर्म्मदा तीरा । अशनि समान अभेद शरीरा

दो॰ सचिव सुकण्ठ राज कर रघुवर कर प्रिय दास
सो जड़ मन्द जो याहि रण चह जीतन की आस

अब देखहु यह यूथ अपारा । पीत बरण है गयउ पहारा ।

बाल अरुण मरीचि जस फूटी। निशिचर निकर तमीचर छूटी
चौबिस अर्बुद इन कर जूहा। सहस बृन्द सम कोटि समूहा
शिला शैल जे आगे परहीं। पायन मर्दि गर्द सम करहीं
कंचन गिरि कन्दर के बासी। इन कर यूथ नाथ अबिनाशी
अतिबल बासव कर हितकारी। सखा सुकण्ठ केर सुखकारी
पान करै गंगा कर नीरा। पर्ब्बत शृंग समान शरीरा
क्षण क्षण सिंहनाद जो होई। गर्जत आवत है कपि सोई।

दो॰ यथा सिंहु मण्डल गलित गज बल कर नाहिं न अंत
यह कपि राजा केसरी सुवन जासु हनुमन्त ॥

उत्तर दिशि ऐरावत रजधानी। जनु दुकाल लगि शलभ उड़ानी।
मरकट निकर बिकल बल टूटे। आवत उदधि कूल जनु छूटे
इहि दल यूथ नाथ जो अहई। अति बलवन्त राज सँग रहई
कपि के रूप अनल अबिनाशी। ये द्वौ पारि पात्र के बासी।
अति सुन्दर अरु समर बिपक्षा। महा बली द्वौ गवय गवक्षा
ये द्वौ गर्जत अति रण धीरा। पीवहिं तुंगभद्र कर नीरा।
सत्तरि सहस नाग बल जाही। इन महँ एक कहौं मैं ताही
अमर बली गंधमादन नामा। रण अजेय पुनि सब गुण धामा

दो॰ बासव बिबुध बृन्द महँ तेजन महँ जस भानु ।
पनस नाम यह बानर अति बल नीति निधानु॥

यह जो कुमुद पत्र सम देहा। जस कैलास शरद कर मेहा।
लोचन मधु पिंगल अति लोने। काम रूप चितवत चहुँ कोने
लंका सोंह लँगूर फिराई। गर्जत प्रलय मेघ की नाई।
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ। तब ते काम रूप यह भयऊ
मघवा इहि सन कीन्ह मिताई। करै सदा यह सेव सहाई
सहस कोटि कपि इहि के संगा। राते पीत श्वेत बहु रंगा।

वचन मृषा मम प्रभु यह नाहीं। अपर बालि जानहु मन माहीं
दरदुर शैल सदन इहि केरा। मन बच कर्म राम कर चेरा।
दो॰ गिरिवर लाँघत आवत चलत उड़ावत रेगु।
तरगि तेज इन रूपेउ तारा तनय सुषेगु॥
यह कपि लसत मनहुं गिरि गेरू। रवि मुख छवि जसि लसत सुमेरू
सोइ कपि प्रथम लंक जेहि जारी। प्रभु के हित लगि आवत इहि बारी
अंजनि गर्भ जनम जब भयऊ। क्षुधित जननि सन अरतस ठयऊ
तेइ कहहु सुपक्व अरुण फल खाहू। सुनत चित बइ तउत चित चाहू
बाल अरुण लखि गगन उड़ाना। प्रेमसित तरणि वासव तब जाना
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढ़ी। कोपि पवन समीर सब बेढ़ी
देव निकलहैं अस्तुति कीन्हा। कुलिश होउ तन अस वर दीन्हा
विद्या पढन भानु के पाहीं। उलटी गति रवि आगे जाहीं
वारिधि लाँघेउ गोपद जैसे। यहि कपीश सन जूझब कैसे
दो॰ अस्यक पीत बाल रवि वदन तेज अति राज
पवन ते वेग अधिक जनु अनल नितम्ब सुभ्राज
अतसी कुसुम वरण तनु रेखा। पुरुष पुराण धरे नर वेषा।
मत्त गजेन्द्र शुराड भुज दराडा। धनुष वाण असि धरे प्रचराडा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर। कम्बु कराठ रेखा प्रसन्न वर
मुख छवि की उपमा कवि जोहै। शशि सरोज सम कोहै न सोहै
दशन पाँति की कांति कहै को। ललकत मन परतीय लहै को
देखत अधरन की अरुणाई। विम्बा फल बन्धूक लजाई
शुक तुराड हि नासिका लजावै। यक्ते सुक विनहिं परतर आवै
शीश जटा के मुकुट बनाये। भाल विशाल तिलक अति भाये
दाहिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा। राम बाहु सम अनि रणधीरा
दो॰ बाम भाग विभीषण शिर अभिषेका राज॥

बीज मंत्र सब जानहिं अकसर करहिं सुकाज।

अब देखहु यह सेन सुहाई भादों मेघ घटा जनु छाई।
कन्या एक ब्रह्म उपजाई नयन भूरि अस रूप लुनाई
बालभाव दिनकर बल दीन्हा। ऋतु जानी वासव रति कीन्हा
जातक जमल वीर द्वौ जाये। देव अंश बानर तनु पाये।
किष्किन्धा पर इन कर थाना। देव सरिस मधुबन उद्याना।
ऋष्यमूक इन कर विश्रामा। चातुर्मास्य बसे जहँ रामा।
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा। यहि कहँ राज तिलक प्रभु सारा
तारा तासु भई पटरानी। जेहि कर सुत अंगद अति ज्ञानी।
सहस संकु कर अर्बुद एका। अर्बुद सहस कि बिन्दु विवेका।
सहस बिन्दु गण कनगरि माना। महापद्म तेहि कर परिमाना
ऐसे पद्म अठारह साजा। विग्रह चढ़ेउ राम के काजा
वीर वेष अरु नयन विशाला। कम्बु कण्ठ मोतिन की माला

दो॰ हस्ती साठि सहस्र बल सदा धर्म की सीव।
श्वेत छत्र शिर शोभित यह राजा सुग्रीव।
इहि विधि सकल दिखाये शारन कपि दल यूह।
गनै न रावण काल वश अतिशय गर्ब्ब समूह।

इति.

इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बुलाई
कहहु बेगि का करिय उपाई। जामवन्त कह पद शिर नाई
सुनु सर्व्वज्ञ सकल उर वासी। सर्व रूप सब रहित उदासी।
मंत्र कहब निज मति अनुसारा। दूत पठाइय बालि कुमारा।
नीक मंत्र सब के मन माना। अंगद सन कह कृपा निधाना
बालि तनय बुधि बल गुण धामा। लंका जाहु तात मम कामा
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं। परम चतुर मैं जानत अहऊं

काज हमार तासु हित होई। रिपु सन करहु बतकही सोई
सो॰ प्रभु आज्ञा धरि शीश चरण बन्दि अंगद कहेउ।
सोइ गुण सागर ईश राम कृपा जा पर करहिं।
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदर दयउ।
अस बिचारि युवराज तन पुलकित हर्षित भयउ
बन्दि चरण उर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहिं शिर नाई
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका। रण बाकुरा बालि सुत बंका।
पुर पैठत रावण कर बेटा। खेलत रहा सो है गइ भेंटा।
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई। युगुल अतुल बल पुनि तरुणाई
तेहि अंगद कहँ लात उठाई। गहि पद पटकेउ भूमि भ्रमाई।
निशिचर निकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
एक एक सन मर्म न कहहीं। समुझि तासु बल चुप ह्वै रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मझारी। आवा कपि लंका जेइ जारी।
अब धौं कहा करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं विचारा
बिनु पूछे मगु देहिं बताई। जेहि बिलोकु सो जाहिं सुखाई।
दो॰ गयउ सभा दरबार रिपु सुमिरि राम पद कंज
इंस ठवनि इत उत चितै धीर बीर बल पुंज।
तुरित निशाचर एक पठावा। समाचार रावणहिं सुनावा।
सुनत बचन बोलेउ दशशीशा। आनहु बोलि कहां कर कीशा
आयसु पाइ दूत बहु धाये। कपि कुंजरहि बोलि ले आये
अंगद दीख दशानन बैसा। सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा
भुजा बिटप शिर शृंग समाना। रोमावली लता तरु नाना।
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कन्दरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा। बालि तनय अति बल बांकुरा
उठी सभा सब कपि कहँ देखी। रावण उर भा क्रोध विशेषी

दो॰ यथा मत्त गज यूथ महँ पंचानन चलि जाय।
राम प्रताप सँभारि उर बैठ सभहिं शिर नाय॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर। मैं रघुबीर दूत दशकन्धर।
मम जनकहि तोहिं रही मिताई। तव हित कारण आयउँ भाई॥
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती। शिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती॥
वर पायउ कीन्हेउ सब काजा। जीतेहु लोकपाल सुरराजा॥
नृप अभिमान मोह वश किम्बा। हरि आनेउ सीता जगदम्बा॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा। सब अपराध क्षमहि प्रभु तोरा॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी। पुरजन संग सहित निज नारी॥
सादर जनकसुता करि आगे। इहि विधि चलहु सकल भय त्यागे॥

दो॰ प्रणतपाल रघुवंशमणि त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनतहिं आरत वचन प्रभु अभय करहिंगे तोहिं॥

रे कपि पोच बोलु सम्भारी। मूढ़ न जानेसि मोहिं सुरारी॥
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नाते मानिये मिताई॥
अंगद नाम बालि कर बेटा। तो सों कबहूं भइ होइ भेटा॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना। रहा बालि बानर मैं जाना॥
अंगद तहिं बालि कर बालक। उपजेउ वंश अनल कुलघालक॥
गर्भ न गयउ वृथा तुम जाये। निज मुख तापस दूत कहाये॥
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई। बिहँसि वचन अंगद अस कहई॥
दिन दश गये बालि पहँ जाई। पूछेहु कुशल सखा उर लाई॥
राम विरोध कुशल जस होई। सो सब तुमहिं सुनाइहिं सोई॥
सुनु शठ भेद होइ मन ताके। श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके॥

दो॰ हम कुलघालक सत्य तुम कुलपालक दशशीश।
अन्धो बधिर न कहहिं अस श्रवण नयन तोहिं बीस॥

शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरण सेवकाई।

तासु दूत है हम कुल बोरा। ऐसी मति उर बिहर न तोरा
सुनि कठोर बाणी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं। नीति धर्म्म सब जानत अहऊं
कह कपि धर्म शीलता तोरी। हमहूं सुनी कृत परतिय चोरी
देखेउं नयन दूत रखवारी। बूड़ि न मरहु धर्म ब्रत धारी
नाक कान बिनु भगिनि निहारी। क्षमा कीन्ह तुम धर्म बिचारी
धर्म शीलता तव जग जागी। पावा दरश हमहुं बड़ भागी।

दो॰ जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि शठ बिलोकु मम बाहु
लोकपाल बल बिपुल शशि ग्रसन हेतु जिमि राहु।
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन पर बास
शोभित भयउ मराल इव शंभु सहित कैलास ॥

तुम्हरे कटक माह सुनु अंगद। मो सन भिरहिं कवन योधा बद।
तव प्रभु नारि बिरह बलहीना। अनुज तासु दुख दुखित मलीना।
तुम सुग्रीव कुल द्रुम दोऊ। बन्धु हमार भीरु अति सोऊ
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा। सो कि होइ समर आरूढ़ा।
शिल्प कर्म जानत नल नीला। है कपि एक महा बल शीला।
आवा प्रथम नगर जेहि जारा। सुनि हँसि बोलेउ बालि कुमारा।
सत्य बचन कह निशिचर नाहा। साँचहु कीश कीन्ह पुर दाहा।
रावण नगर अल्प कपि दहई। को अस झूठ कहै को सुनई
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन।
चलै बहुत सो बीर न होई। पठवा खबरि लेन हम सोई।

दो॰ अब जाना पुर दहेउ कपि बिनु प्रभु आयसु पाइ
गयउ न फिरि निज नाथ पहँ तेहि भय रहेउ लुकाइ
सत्य कहसि दशकण्ठ तैं मोहिं न सुनि कछु कोह
कोउ न हमारे कटक अस तुम सन लरत जो सोह

प्रीति विरोध समान सन करिय नीति अस आहि
जो मृगपति वध मेडुकहि भलो कहै को ताहि।
यद्यपि लघुता राम कहँ तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दशकण्ठ सुनु क्षत्रिजाति कर रोष।
हँसि बोलेउ दशमौलि तब कपि कर गुण बड़ एक
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक
धन्य कीश जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा।
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करत कर्म निपुणाई।
अंगद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभु गुण कस न कहसि इहि भाँती।
मैं गुण गाहक परम सुजाना। तव कटु वचन करौं नहिं काना।
कह कपि तव गुण गाहकताई। सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई।
बन विध्वंसि सुत वधि पुर जारा। तदपि न तेइ कृत कछु अपकारा।
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई। दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई।
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा।
दो॰ वक्र उक्ति धनु वचन शर हृदय दह्यो रिपु कीश
प्रति उत्तर गर्जसि मनो काढ़त भट दश शीश।
जो अस मति पितु खायहु कीशा। कहि अस वचन हँसा दशशीशा।
पितहि खाइ खातेउँ अब तोहीं। अबहीं समुझि परा कछु मोहीं।
बालि विमल यश भाजन जानी। हतौं न तोहिं अधम अभिमानी।
कहु रावण रावण जग केते। मैं निज श्रवण सुने सुनु तेते
बलिहि जीतन इक गयउ पताला। राखा बाँधि शिशुन हय शाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई। दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई।
एक बहोरि सहस भुज देखा। धाइ धरा जनु जन्तु विशेषा।
कौतुक लागि भवन लै आवा। सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा।
दो॰ एक कहत मोहिं सकुच अति रहा बालि की काँख

तिन महँ रावण कवन तैं सत्य कहहु तजि माख।
सुनु शठ सोइ रावण बलशीला। हर गिरि जानु जासु भुज लीला
जानु उमापति जासु सुराई। पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई
शिर सरोज निज करन उतारी। पूजे अमित बार त्रिपुरारी।
भुज विक्रम जानहिं दिगपाला। शठ अजहूं जिन के उर शाला।
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई। जब जब भिरेउं जाइ बरिआई।
जिन के दशन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे।
जासु चलत डोलत इमि धरणी। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरणी
सोइ रावण जग विदित प्रतापी। सुने न श्रवण अलीक प्रतापी।
दो॰ तेहि रावण कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ज्ञान॥
सुनि अंगद सकोप कह वानी। बोलु सँभारि अधम अभिमानी
सहसबाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जासु कुठारा।
जासु परशु सागर खर धारा। बूड़े नृप अगणित बहु वारा।
तासु गर्व जेहि देखत भागा। सो नर किमि दशकण्ठ अभागा
राम मनुज कस रे शठ बंगा। धन्वी काम नदी पुनि गंगा
पशु सुर धेनु कल्पतरु रूखा। अन्न दान पुनि रस पीयूखा
वैनतेय खग अहि सहसानन। चिन्तामणि की उपल दशानन
सुनु मति मन्द लोक वैकुण्ठा। लाभ कि रघुपति भक्ति अकुंठा
दो॰ सेन सहित तव मान मथि वन उजारि पुर जारि।
कस रे शठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि
सुनु रावण परिहरि चतुराई। भजसि न कृपा सिन्धु रघुराई
जो खल भयसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला। राम वैर होइहि अस हाला
तव शिर निकर कपिन के आगे। परिहैं धरणि राम शर लागे।

तब तब शिर कन्दुक इव नाना। खेलहिं भालु कीश चौगाना।
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक। छूटहिं अति कराल बहु शायक॥
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा। अस बिचारि जनु राम उदारा॥
सुनत वचन रावण परजरा। बरत अनल महँ जनु घृत परा॥

दो॰ कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्ध शक्रारि।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं जितेउं चराचर झारि॥

शठ शाखा मृग जोरि सहाई। बाँधा सिन्धु इहै प्रभुताई॥
लाँघहिं खग अनेक बारीशा। शूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा॥
मम भुज सागर जल बल पूरा। जहँ बूड़े सुर नर बर शूरा॥
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस वीर जो पावहिं पारा॥
दिगपालन मैं नीर भरावा। भूप सुयश खल मोहिं सुनावा॥
जो पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुण गाथा॥
तौ बसीठ पठवा केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा॥
हरगिरि मथन निरखि मम बाहू। पुनि शठ कपि निज स्वामि सराहू॥

दो॰ शूर कवन रावण सरिस निज कर काटे शीश।
हुमेउ अनल महँ बार बहु हर्षित साखि गिरीश॥

जरत बिलोकेउं जबहिं कपाला। विधि के लिखे अंक निज भाला॥
नर के कर आपन वध बाँची। हँसेउ जानि बिधि गिरा असाँची॥
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरे॥
आन वीर को शठ मम आगे। पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावण तोहिं समान कोउ नाहीं॥
लाजवन्त तव सहज सुभाऊ। निज गुण निज मुख कहसि न काऊ॥
शिर अरु शैल कथा चित रही। तातें बार बीस तैं कही॥
सो भुजबल राखेउ उर घाली। जितेउ न सहस बाहु बल बाली॥
सुनु मति मन्द देहि अब पूरा। काटे शीश न होइय शूरा॥

बाजीगर कहँ कहिय न बीरा। काटै निज कर सकल शरीरा
दो० जरहिं पतंग बिमोह वश भार बहहिं खर बृन्द।
ते नहि शूर कहावहीं समुझि देखु मति मन्द।
अब जनि बतबढ़ाव खल करही। सुनु मम वचन मान परिहरही
दश मुख मैं न बशीठी आयउ। अस विचारि रघुबीर पठायउ
बारबार इमि कहेउ कृपाला। नहिं गजारि यश बधेउ शृगाला
मन महँ समुझि वचन प्रभु केरे। सहेउं कठोर वचन शठ तेरे।
नाहि त करि मुख भंजन तोरा। लै जातेउं सीतहि बरजोरा ।
जानेउं तव बल अधम सुरारी। सूने हरि आनी पर नारी
तैं निशिचर पति गर्व बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता
जो न राम अपमानहिं डरऊं। तव देखत अस कौतुक करऊं
दो० तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करतेउं गाउं
मन्दोदरी समेत शठ जनक सुतहि लै जाउं।
जो अस करउं न तदपि बड़ाई। मुये बधे कछु नहिं मनुसाई।
कौलि कामबश कृपण विमूढ़ा। अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा
सदा रोगबश सन्तत क्रोधी। राम विमुख श्रुति सन्त विरोधी
तन पोषक निन्दक अघखानी। अनजीवत सम चौदह प्रानी
अस विचारि खल बधौं न तोही। अब जनि रिस उपजावसि मोहीं
सुनि सकोप कह निशिचरनाथा। अधर दशन गहि मीजत हाथा
रे कपि पोच मरण अब चहसी। छोटे बदन बात बड़ि कहसी
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके। बुधि बल तेज प्रताप न ताके
दो० अगुण अमान विचारि तेहि दीन्ह पिता बनबास
सो दुख अरु युवती बिरह पुनि निश दिन मम त्रास
जिन के बल को गर्व तोहिं ऐसे मनुज अनेक।
खाहिं निशाचर दिवस निशि मूढ़ समुझ तजि टेक।

जब ते कीन्ह राम कर निन्दा। क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा
हरि हर निन्दा सुनहिं जे काना। होइ पाप गो घात समाना।
कटकटाइ कपि कुंजर भारी। दोउ भुज दण्ड तमकि महि मारी।
डोलत धरणि सभासद खसे। चले भागि भय मारुत ग्रसे।
गिरत दशानन उठा सँभारी। भूतल परेउ मुकुट षट चारी
कछु निज कर ले मुकुट सँभारे। कछु अंगद प्रभु पास पबारे।
आवत मुकुट देखि कपि भागे। दिनहीं लूक परन विधि लागे
कै रावण करि कोप चलाये। कुलिश चारि आवत अति धाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहू। लूक न असनि केतु नहिं राहू
ये किरीट दश कन्धर केरे। आवत बालि तनय के प्रेरे।

दो॰ कूदि गहे कर पवन सुत आनि धरे प्रभु पास।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकाश

उहाँ दशकन्ध रिसाई। धरि मारहु कपि भागि न जाई
इहि विधि वेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु
महि अकीस करि फेरि दुहाई। जियत धरहु तपसी दोउ भाई।
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा। गाल बजावत तोहिं न लाजा।
मरु गरु काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि बिहरत नहिं छाती
रे तिय चोर कुमारग गामी। खल मल राशि मन्द मति कामी।
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा। भयसि कालवश शठ मनुजादा
याको फल पावहुगे आगे। बानर भालु चपेटनि लागे।
राम मनुज बोलत अस बानी। गिरहिं न तव रसना अभिमानी
गिरिहैं रसना संशय नाहीं। शिरन समेत समर महि माहीं

सो॰ सो नर क्यों दशकन्ध बालि बधेउ जेहि एक शर।
बीसहु लोचन अन्ध धृग तव जन्म कुजाति जड़।
तव शोणित की प्यास तृषित राम शायक निकर

तजेउ तोहिं तेहि आश करु जल्पसि निशिचर अधम
मैं तव दशन तोरिबे लायक। आयसु पै न दीन्ह रघुनायक
अस रिसि होत दशो मुख तोरों। लंका गहि समुद्र महँ बोरों।
गूलर फल समान तव लंका। बसहिं मध्य जनु जन्तु अशंका
मैं बानर फल खात न बारा। आयसु दीन्ह न राम उदारा।
युक्ति सुनत रावण मुसकाई। मूढ़ सिखेसि कहँ अधिक झुठाई
बालि कबहुँ अस गाल न मारा। मिलि तपसिन तैं भय सि लबारा
साँचेहु मैं लबार भुज बीहा। जौं न उपारौं तव दश जीहा
रामप्रताप सुमिरि कपि कोपा। सभा माझ करि प्रण पद रोपा।
जो मम चरण सकसि शठ टारी। फिरहिं राम सीता मैं हारी
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा। पद गहि धरणि पछारहु कीशा
इन्द्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना
झपटहिं करि बल विपुल उपाई। पद न टरै बैठहिं शिर नाई
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती। टरै न कीश चरण इहि भाँती
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी। मोह विटप नहिं सकहिं उपारी
दो॰ भूमि न छोड़े कपि चरण देखत रिपु मद भाग।
कोटि विघ्न जिमि सन्त कहँ तदपि नीति नहिं त्याग
कपि बल देखि सकल हिय हारे। उठा आप कपि के परचारे।
गहत चरण कह बालि कुमारा। मम पद गहे न तोर उबारा।
गहसि न राम चरण शठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भये तेज हत श्री सब गई। मध्य दिवस जिमि शशि सोहई
सिंहासन बैठा शिर नाई। मानहु सम्पति सकल गँवाई
जगदाधार प्राणपति रामा। तासु बिमुख किमि लह विश्रामा
उमा राम कर भृकुटि विलासा। होइ विश्व पुनि पावै नाशा
तृण ते कुलिश कुलिश तृण करही। तासु दूत पद कहु किमि टरही

रावण की सभा में अंगद को जाना और पद रोपना और मेघनादादि
राक्षसयोधाओं से अंगद का पैर न हटना॥



पुनि कपि कही नीति विधि नाना। मानत नाहिं काल नियराना ॥
रिपुमद मथि प्रभु सुयश सुनाये। अस कहि चले बालि नृप जाये॥
अबहीं मुख का करौं बड़ाई। हति हौं तोहिं खेलाइ खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावण भयउ दुखारा॥
यातुधान अंगद बल देखी। भेअ्राकुल अति हृदय विशेषी॥
दो॰ रिपु बल धर्षि हर्षि हिय बालि तनय बल पुञ्ज।
सजल नयन तन पुलकि मन गहे राम पद कञ्ज॥
साँझ जानि दशकण्ठ तब भवन गयो बिलखाइ।
मन्दोदरी अनेक विधि बहुरि कहा समुझाइ॥
कंत समुझि मन तजहु कुमतिही। सोह न समर तुमहिं रघुपति ही॥
राम अनुज धनु रेख खँचाई। सो नहिं लाँघेहु अस मनुसाई ॥
पिय तेहि ते जीतब संग्रामा। जाके दूतन के अस कामा ॥
कौतुक सिन्धु लाँघि तब लंका। आयउ कपि केहरी अशंका॥
रखवारे हति विपिन उजारा। देखत तुमहिं अक्षय जिन्ह मारा॥
जारि नगर जेइ कीन्हेसि क्षारा। कहाँ रहा बल गर्ब्ब तुम्हारा ॥
अब पति मृषा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदय विचारहु ॥
पति रघुपतिहि मनुज जनि जानहु। अगजग नाथ अतुल बल मानहु
बाण प्रताप जानि मारीचा। तासु कहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनक सभा अगणित महिपाला। रहेउ तहाँ तुम गर्ब्ब विशाला॥
भंजि धनुष जानकी बिवाही। तब संग्राम जितेहु नहिं ताही॥
सुरपति सुत जाना बल थोरा। राखा जियत आँख इक फोरा ॥
सूर्पनखा की गति तुम देखी। तदपि हृदय नहिं लाज विशेषी॥
दो॰ वधि विराध खर दूषणहिं लीला हतेउ कबन्ध।
बालि एक शर मारेउ तेहि नर कह दशकन्ध ॥
जेहि जलनाथ बँधायो हेला। उतरे कपि दल सहित सबेला॥

कारुणीक दिनकर कुल केतू। दूत पठायहु तव हित हेतू ॥
सभा माँझ जेइ तव बल मथा। करि वरूथ महँ मृग पति यथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रण बाँकुरे वीर अति बाँके ॥
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद गहहू ॥
अहह कन्त कृत राम विरोधा। काल विवश मन होय न बोधा ॥
काल दण्ड गहि काहु न मारा। हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ॥

दो० दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर अजहुं पूरि पिय देहु ।
कृपा सिन्धु रघुवीर भजि नाथ विमल यश लेहु ॥

नारि वचन सुनि विशिख समाना। सभा गयउ उठि होत बिहाना ॥
बैठा जाइ सिंहासन फूली। अति अभिमान त्रास सब भूली ॥
इहाँ राम अंगदहिं बुलावा। आइ चरण पंकज शिर नावा ॥
अति आदर समीप बैठारी। बोले विहँसि कृपाल खरारी ॥
वालि तनय अति कौतुक मोहीं। तात सत्य कहु पूछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका। भुजबल अतुल जासु जग लीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये। कहहु तात कवने विधि पाये ॥
कहा वालि सुत सुनहु खरारी। मुकुट न होइ भूप गुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड विभेदा। नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा ॥
नीति धर्म्म के चरण सुहाये। अस जिय जानि नाथ पहँ आये

दो० धर्म्म हीन प्रभु पद विमुख काल विवश दश शीश ।
आये गुण तजि रावणहिं सुनहु कोशलाधीश ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि विहँसे राम उदार ।
समाचार तब सब कहे गढ़ के वालि कुमार ॥

रिपु के समाचार जब पाये। राम सचिव तब निकट बुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा। केहि विधि लागिय करहु विचारा ॥

तब कपीश ऋक्षेश विभीषण । सुमिरि हृदय दिनकर कुल भूषण
करि विचार तिन मंत्र दृढ़ावा । चारि अनी कपि कटक बनावा
यथा योग सेनापति कीन्हे । यूथप सकल बोलि तिन लीन्हे ॥
प्रभु प्रताप सब कहि समुझाये । सिंह नाद करि सब कपि धाये ॥
हर्षित राम चरण शिर नावैं । गहि गिरि शिखर भालु कपि धावैं ॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा । जय रघुवीर कौशल धीशा
जानत परम दुर्ग गढ़ लंका । प्रभु प्रताप कपि चले अशंका ॥
घटाटोप करि चहुं दिशि घेरी । मुखहिं निशान बजावहिं भेरी

दो० जयति राम भ्राता सहित जय कपीश सुग्रीव ।
गर्जे केहरि नाद कपि भालु महा बल सीव ॥

लंका भयउ कोलाहल भारी । सुनेउ दशानन अति हंकारी
देखहु वनरन केरि ढिठाई । विहँसि निशाचर सेन बुलाई ॥
आये कीश काल के प्रेरे । क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
अस कहि अट्टहास शठ कीन्हा । गृह बैठे अहार विधि दीन्हा ।
सुभट सकल चारिहु दिशि जाहू । धरि धरि भालु कीश सब खाहू ॥
उमा रावणहिं अस अभिमाना । जिमि टिटिही खग सुतै उताना ॥
चले निशाचर आयसु माँगी । गहि कर भिंडि पाल वर साँगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा । शूल कृपाण परशु गिरि खंडा ॥
जिमि अरुणोपल निकर निहारी । धाये खग शठ मांस अहारी ।
चोंच भंग दुख तिनहिं न सूझा । तिमि धाये मनुजाद अबूझा

दो० नानायुध शरचाप धरि यातुधान बल बीर ।
कोटि कँगूरन चढ़िगये कोटि कोटि रण धीर ॥

कोट कँगूरन सोहहिं कैसे । मेरु शृंग पर जनु घन बैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ । सुनि सुनि सुभटन के मन चाऊ ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर होइ दरारा ।

देखिन जाइ कपिन की ठट्टा। अति विशाल तनु भालु सुभट्टा॥
धावहिं गनहिं न औघट घाटा। पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा॥
कटकटाइ कोटिन्ह भट गर्जहिं। दशनन ओंठ काटि अति तर्जहिं॥
उत रावण इत राम दुहाई। जयति जयति करि परी लराई॥
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं। कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं॥

छं॰ धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरण गहि पटकि महि महँ बार बार प्रचारहीं॥
अति तरुण तरल प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ पर चढ़िगये।
कपि भालु चढ़ि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावत भये॥

दो॰ एक एक गहि रजनिचर पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपुन तर असुर गिरहिं धरणि पर आइ॥

राम प्रताप प्रवल कपि यूथा। मर्दहिं निशिचर निकर वरूथा॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर। जय रघुवीर प्रताप दिवाकर॥
चले तमीचर निकर पराई। प्रवल पवन जिमि घन समुदाई॥
हाहाकार भयो पुर भारी। रोवहिं आरत बालक नारी॥
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी। राज करत जेइ मृत्यु हँकारी॥
निज दल विचल सुना जब काना। फिरे सुभट लंकेश रिसाना॥
जो रण विमुख फिरा मैं जाना। तेहि मारिहौं कराल कृपाना॥
सर्वसु खाइ भोग करि नाना। समर भूमि भा दुर्लभ प्राना॥
उग्र वचन सुनि सकल डेराने। फिरे क्रोध करि सुभट लजाने॥
सन्मुख मरण वीर की शोभा। तब तिन तजा प्राण कर लोभा॥

दो॰ बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
कीन्हें व्याकुल भालु कपि परिघ प्रचण्डनि मारि॥

भय आतुर कपि भागन लागे। यद्यपि उमा जीतिहैं आगे॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता। कहँ नल नील द्विविद बलवन्ता॥

निज दल बिचल सुना हनुमाना। पश्चिम द्वार रहा बलवाना॥
मेघनाद तहँ करै लड़ाई। टूट न द्वार परम कठिनाई॥
पवन तनय मन भा अति क्रोधा। गर्जेउ प्रलय काल सम योधा॥
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघनाद पर धावा॥
भंजेउ रथ सारथी निपाला। तासु हृदय महँ मारेउ लाता॥
दूसर सूत बिकल तेहि जाना। स्यन्दन घालि तुरत घर आना॥
दो॰ अंगद सुनेउ कि पवन सुत गढ़ पर गयउ अकेल।
समर बाँकुरा बालि सुत तर्कि चलेउ करि खेल॥
युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर। राम प्रताप सुमिरि उर अन्तर॥
रावण भवन चढ़े दोउ भाई। करहिं कौशलाधीश दुहाई॥
कलश सहित सब भवन ढहावहिं। देखि निशाचर अति भय पावहिं॥
नारि बृन्द कर पीटहिं छाती। अब दोउ कपि आये उतपाती॥
कपि लीला करि सबहिं डरावहिं। रामचन्द्र कर सुयश सुनावहिं॥
पुनि कर गहि कंचन के खंभा। करन लगे उतपात अरंभा॥
कूदि परे रिपु कटक मँझारी। लागे मर्दन भुज बल भारी॥
काहू लात चपेटन केहू। भजहु न रामहि सो फल लेहू॥
दो॰ एक एक सन मर्दि करि तोरि चलावहिं मुराड।
रावण आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुराड॥
महा महा मुखिया जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं॥
कहहिं विभीषण तिनके नामा। देहिं राम ताकहँ निज धामा॥
खल मनुजाद जो आमिष भोगी। पावहिं गति जो याँचत योगी॥
उमा राम मृदु चित करुणाकर। बैर भाव मोहिं सुमिरत निशिचर॥
देहिं परम गति अस जिय जानी। को कृपाल अस अहे भवानी॥
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रम त्यागी। ते मतिमन्द सो पर अभागी॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा। कीन्ह दुर्ग अति कह अवधेशा॥

लंका महँ कपि सोहहिं कैसे। मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे ॥

दो॰ भुजबल रिपुबल दलि मलेउ देखि दिवस कर अंत।
कूदे युगल प्रयास बिनु आये जहँ भगवन्त ॥

प्रभु पद कमल शीश तिन नाये। देखि सुभट रघुपति मन भाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे। भये विगत श्रम परम सुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना। फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई। धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपि फिरे। कटकटाइ जहँ तहँ भट भिरे ॥
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारी। लरहिं सुभट नहिं मानहिं हारी ॥
वीर तमीचर सब अति कारे। नाना वरण बली मुख भारे ॥
सबल युगल दल सम अति योधा। विविध प्रकार लरहिं करि क्रोधा ॥
प्रावृट शरद पयोद घनेरे। लरत मनहु मारुत के प्रेरे ॥
अवनि अकंप न अरु अतिकाया। विचरत सेन करी तिन माया ॥
भयउ निमिष महँ अति अँधियारा। काहु न सूझै अपन परारा ॥
मारु खाहु सब करें पुकारा। वृष्टि होहिं रुधिरो पल क्षारा ॥

दो॰ देखि निविड़ तम दशहु दिश कपिदल भयउ खँभार।
एकहि एक न देखत जहँ तहँ करहिं पुकार ॥

सकल मर्म रघुनायक जाना। लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये। सुनत कोपि कपि कुंजर धाये ॥
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा। पावक शायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं। ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं ॥
तबहिं बली मुख पाइ प्रकाशा। धाये कोपि विगत श्रम त्रासा ॥
हनूमान अंगद रण गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागत भट पटकहिं गहि धरणी। करहिं भालु कपि अद्भुत करणी ॥
गहि पद डारहिं सागर माहीं। मकर उरग झष धरि धरि खाहीं।

दो॰ कछु घायल कछु रण परे कछु गढ़ चले पराइ ।
गर्जेउ मर्कट भालु भट रिपु दल बल बिचलाइ ।
निशा जानि कपि चारिहु अनी । आये सब जहँ कोशल धनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं । भये बिगत श्रम बानर तबहीं ॥
उहां दशानन सचिव हँकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटक कपिन संहारा । कहहु बेगि का करिय बिचारा ॥
माल्यवन्त इक जरठ निशाचर । रावण मातु पिता मंत्री वर ॥
बोला बचन नीति अति पावन । तात सुनहु कछु मोर सिखावन ॥
जब ते तुम सीता हरि आनी । अशकुन होहिं न जात बखानी ॥
वेद पुराण जासु यश गावा । तासु बिमुख सुख काहु न पावा ॥
दो॰ हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।
जेहि मारउ सोइ अवतरेउ कृपा सिन्धु भगवान ॥
कालरूप खल बल दहन गुणागार घन बोध ।
जेहि सेवहिं शिव कमल भव तिहि सन कौन बिरोध ॥
परिहरि बैर देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥
ताके बचन बाण सम लागे । करिया मुख करि जाहु अभागे ॥
बूढ़ भयसि न तु मरतेउं तोहीं । अब जनि बदन देखावसि मोहीं ॥
तेहि अपने मन अस अनुमाना । बधै चहत एहि कृपा निधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा । करिहौं बहुत कहत हौं थोरा ॥
सुनि सुत बचन भरोसा आवा । प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत बिचार भयउ भिनुसारा । लगे भालु कपि चारिहु द्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा । नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
बिबिध अस्त्र गहि निशिचर धाये । गढ़ ते पर्बत शिखर ढहाये ॥
छं॰ ढाहे महीधर शिखर कोटिन बिबिध बिधि गोला चले ।

घहरात जिमि पवि पात गर्जत प्रलय के जनु बादले ॥
मर्कट विकट भट जुटत कटत न लरत तन जर्जर भये ॥
गहि शैल ते गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचर हये ॥

दो० मेघनाद सुनि श्रवण अस गढ़ पुनि छेंका आइ ।
उतरि दुर्ग तें वीर वर सन्मुख चला बजाइ ॥

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता । धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
कहँ नल नील दुविद सुग्रीवा । कहँ हनुमंत अंगद बल सींवा ॥
कहाँ विभीषण भ्राता द्रोही । आजु शठहि हठि मारउं ओही ॥
अस कहि कठिन बाण सन्धाने । अतिशय कोपि श्रवण लगि ताने ॥
शर समूह सो छांड़न लागा । जनु सपक्ष धावें बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखिये बानर । सन्मुख होइ न सकत तेहि अवसर ॥
भागे भय व्याकुल कपि रच्छा । बिसरी सबहि युद्ध की इच्छा ॥
सो कपि भालु न रण महँ देखा । कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेशा ॥

दो० मारेसि दश दश विशिष उर परे भूमि सब बीर ।
सिंहनाद करि गर्ज तब मेघनाद रण धीर ॥

देखि पवन सुत कटक बेहाला । क्रोधवंत धावा जनु काला ॥
महा महीधर तमकि उपारा । अति रिसि मेघनाद पर डारा ॥
आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरंग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना । निकट न आव मरम सो जाना ॥
राम समीप गयउ घन नादा । नाना भाँति कहत दुर्बादा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे । कौतुक हीं प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना । करै लाग माया विधि नाना ॥
जिमि कोउ करै गरुड़ सन खेला । डरपावहि गहि स्वल्प सपेला ॥

दो० जासु प्रबल माया विवश शिव विरंचि बड़ छोट ।
ताहि देखावै रजनिचर निज माया मति खोट ॥

नभ चढ़ि बरषै विपुल अँगारा। महि ते प्रकट होइ जल धारा॥
नाना भाँति पिशाच पिशाची। मारु काटु ध्वनि बोलहिं नाची॥
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कच हाड़ा। बरषै कबहुँ उपल बहु छाड़ा॥
बर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा। सूझ न आपन हाथ पसारा॥
अकुलाने कपि माया देखे। सब कर मरण बनाइ हि लेखे॥
कौतुक देखि राम मुसकाने। भये सभीत सकल कपि जाने॥
एकहि बान काटि सब माया। जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया॥
कृपा दृष्टि कपि भालु विलोके। भये प्रबल रण रहहिं न रोके॥
दो॰ आयसु माँगी राम पहँ अंगदादि कपि साथ।
लक्ष्मण चले सकोप तब बाण शरासन हाथ॥
जलज नयन उर बाहु विशाला। हिमि गिरि बरण कछुक इक लाला॥
वहाँ दशानन सुभट पठाये। नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये॥
भूधर विटप आयुध धरि भारी। धाये कपि जय राम पुकारी॥
भिरे सकल जोरी सन जोरी। इत उत जय इच्छा नहिं थोरी॥
मुष्ठिक न लातन दाँतन काटहिं। कपि गिरि शिला मारि पुनि डाटहिं॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू। शीश तोरि गहि भुजा उपारू॥
अस ध्वनि पूरि रही नव खराडा। धावहिं जहँ तहँ रुराड प्रचराडा॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा। कबहुँ क विस्मय कबहुँ अनंदा॥
दो॰ जमेउ गाड़ भरि भरि रुधिर ऊपर धूरि उड़ाइ।
जिमि अंगारन राशि पर मृतक धूम रहि छाइ॥
घायल वीर विराजहिं कैसे। कुसुमित किंशुक के तरु जैसे॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा। भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा॥
एकहि एक सकै नहिं जीती। निशिचर छलबल करै अनीती॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता। भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता॥
नानायुध प्रहार करि शेषा। राक्षस भयउ प्राण अवशेषा॥

मेघनाद और लक्ष्मणजीका घोर युद्ध और संग्राम विषे मेघनाद की शक्ति करके लक्ष्मणजीका मोहित होना और हनुमानजीको लक्ष्मणजीका उठाकर श्रीरामचंद्रजीके निकट लेजाना



रावण सुत निज मन अनुमाना। संकट भये हरिहि मम प्राना।
वीर घातिनी छांड़िसि सांगी। तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी।
मूर्छा भई शक्ति के लागे। तब चलि गयउ निकट भय त्यागे
दो॰ मेघनाद सम कोटि शत योधा रहे उठाय।
जगदाधार अनन्त सो उठहि न चला खिसाय॥
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू। जरे भुवन चारिहु दश आसू॥
सक संग्राम जीति को ताही। सेवहिं सुर नर अग जग जाही॥
यह कौतुक जानहि जन सोई। जेहि पर कृपा राम की होई॥
सन्ध्या भई फिरी दोउ सेनी। लगे सँभारन निज निज सैनी॥
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर। लक्ष्मण कहँ पूछा करुणाकर
तब लगि लै आये हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना
जामवन्त कह वैद्य सुखेना। लंका रह पठइय कोउ लेना॥
धरि लघु रूप गये हनुमन्ता। आनेहु भवन समेत तुरन्ता॥
दो॰ रघुपति चरण सरोज शिर नायउ आइ सुखेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लैन॥
राम चरण सरसिज उर राखी। चलेउ प्रभंजन सुत बल भाखी॥
उहाँ दूत इक मरम जनावा। रावण कालनेमि गृह आवा॥
दशमुख कहा मरम तेहि सुना। पुनि पुनि कालनेमि शिर धुना॥
देखत तुमहिं नगर जेहि जारा। तासु पंथ को रोकनि हारा॥
भजि रघुपतिहि करहु हित अपना। तजो नाथ अब सब कल्पना॥
नीलकंज तन सुन्दर श्यामा। हृदय राखु लोचन अभिरामा॥
अहंकार ममता मद त्यागू। महा मोह निशि सोवत जागू॥
काल व्याल कर भक्षक सोई। सपनेहु समर कि जीते कोई॥
दो॰ सुनि दशकंध रिसान तब तेइ मन कीन विचार।
राम दूत कर मरण भल यह खल नत मोहिं मार॥

अस कहि चला रची मग माया। सर मन्दिर वर बाग बनाया ॥
मारुत सुत देखा शुभ आश्रम। मुनिहि बूझि जल पियौं जाइ श्रम
राक्षस कपट भेष तहँ सोहा। माया पति दूतहिं चह मोहा ॥
तुरत पवन सुत नायउ माथा। लागा कहन राम गुण गाथा ॥
होत महा रण राम रावणहिं। जीतहिं राम न संशय यामहिं ॥
इहाँ भये मैं देखौं भाई। ज्ञान दृष्टि बल मोहिं अधिकाई ॥
माँगा जल तेइ दीन्ह कमण्डल। कपि कह नहिं अघाउं थोरे जल ॥
सर मंजन करि आतुर आवहु। दीक्षा देउँ ज्ञान जेहि पावहु ॥

दो॰ सर पैठत कपि पद गहे मकरी अति अकुलान ।
मकरी सो धरि दिव्य तन चली गगन चढ़ि यान ॥

कपि तव दरश भयउँ निहपापा। मिटा तात मुनि वर कर श्रापा ॥
मुनि न होय यह निशिचर घोरा। मानहु सत्य बचन कपि मोरा ॥
अस कहि गई अप्सरा जबहीं। निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुरु दक्षिणा लेहू। पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ॥
शिर लंगूर लपेटि पछारा। निज तन प्रकटेसि मरती बारा ॥
राम राम कहि छाँड़ेसि प्राना। सुनि मन हर्षि चले हनुमाना
देखा शैल न औषधि चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहि गिरि निशि नभ धावत भयऊ। अवध पुरी ऊपर कपि गयऊ

दो॰ देखा भरत विशाल अति निशिचर मन अनुमानि ।
विनु फर शायक मारेउ चाप श्रवण लगि तानि ॥

परेउ मूर्छि महि लागत शायक। सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रिय बचन भरत उठि धाये। कपि समीप अति आतुर आये
विकल विलोकि कीश उर लावा। जागत नहिं बहु भाँति जगावा ॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी। कहत बचन भरि लोचन बारी ॥
जेहि विधि राम विमुख मोहिं कीन्हा। तेहि पुनि यह दारुण दुख दीन्हा ॥

जो मोरे मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया॥
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला। जो मोपर रघुपति अनुकूला॥
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा। कहि जय जयति कोशलाधीशा॥

सो॰ लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलक गात लोचन सजल।
प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक॥

तात कुशल कहु सुखनिधान की। सहित अनुज अरु मातु जानकी
कपि सब चरित संक्षेप बखाने। भये दुखित मन महँ पछिताने॥
अहह दैव मैं कत जग जाये। प्रभु के एकौ काज न आये
जानि कुअवसर मन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोलेउ बलवीरा
तात गहरु होइहै तुहि जाता। काज नशाइहि होत प्रभाता॥
चढ़ु मम शायक शैल समेता। पठवौं तोहि जहँ कृपा निकेता॥
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना। मोरे भार चलहि किमि बाना॥
राम प्रताप विचारि बहोरी। वन्दि चरण बोलेउ करजोरी॥
तव प्रताप उर राखि गुसाईं। जैहौं नाथ बाण की नाईं॥
हर्षि भरत तब आयसु दीन्हा। पद शिर नाइ गवन कपि कीन्हा

दो॰ तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरन्त।
अस कहि आयसु पाय पद वन्दि चले हनुमन्त॥
भरत बाहु बल शील गुण प्रभु पद प्रीति अपार।
जात सराहत मनहिं मन पुनि पुनि पवनकुमार॥

उहाँ राम लक्ष्मणहिं निहारी। बोले वचन मनुज अनुहारी॥
अर्द्ध राति गइ कपि नहिं आवा। राम उठाइ अनुज उर लावा॥
सकहु न दुखित देखि मोहिं काऊ। बन्धु सदा तव मृदुल स्वभाऊ॥
मम हित लागि तजे पितु माता। सहेउ विपिन हिम आतप वाता
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु विलोकि मोर विकलाई॥
जो जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू। पिता वचन नहिं मनतेउँ वोहू॥

सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस विचारि जिय जागहु ताता। मिलहि न जगत सहोदर भ्राता
यथा पंख बिनु खगपति दीना। मणि बिनु फणि करिवर कर हीना॥
अस मम जियन बंधु बिन तोहीं। जो जड़ दैव जिआवे मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुंह लाई। नारि हेतु प्रिय बन्धु गँवाई ॥
बरु अपयश सहतेउं जग माहीं। नारि हानि विशेष क्षति नाहीं ॥
अब अवलोकि शोक यह तोरा। सहे कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम प्राण अधारा ॥
सौंपेउ मोहिं तुम्हहिं गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी
उत्तर काहि देहौं का जाई। उठि किन मोहिं समुझावहु भाई॥
बहु विधि शोचत शोच विमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन
उमा अखण्ड एक रघुराई। नरगत भाव कृपालु दिखाई ॥

दो० प्रभु विलाप सुनि कान्न विकल भये वानर निकर ।
आइ गये हनुमान जिमि करुणा महँ वीर रस ॥

हर्षि राम भेटे हनुमाना। अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना॥
तुरत वैद्य तब कीन्ह उपाई। उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई ॥
हृदय लाय भेटे प्रभु भ्राता। हर्षे सकल भालु कपि व्राता ॥
पुनि कपि वैद्य तहां पहुँचावा। जेहि विधि तबहिं ताहि लै आवा
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ। अति विषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ
व्याकुल कुंभकरण पहँ गयऊ। करि बहु यतन जगावत भयऊ ॥
जागा निशिचर देखिय कैसा। मानहु काल देह धरि वैसा ॥
कुम्भकर्ण पूछा सुनु भाई। काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही तेइँ सकल भवानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन निशिचर संहारे। महा महा योधा सब मारे ॥
दुर्मुख सुर रिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी

रावण को कुम्भकरण के पास जाय जगाना और अनेक दुर्वाद बचन कहि रामचन्द्र से युद्ध करने के निमित्त समझाना ॥



अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महँ सब रण धीरा॥
दो० दशकन्धर के बचन सुनि कुम्भकर्ण बिलखान।
जगदम्बा हरि आनि के शठ चाहसि कल्यान॥
भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा, अब मोहिं आनि जगायहु काहा।
अजहु तात त्यागहु अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्याना॥
हैं दश शीश मनुज रघुनायक। जाके हनूमान से पायक॥
अहह बन्धु तैं कीन्ह खुटाई। प्रथमहिं मोहिं न जगायहु भाई॥
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक। शिव बिरंचि सुर जाके सेवक॥
नारद मुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ। कहतेउं तोहिं समय नहिं रहेऊ॥
अब भरि अंक भेंटु मोहिं भाई। लोचन सुफल करौं मैं जाई॥
श्याम गात सरसीरुह लोचन। देखौं जाइ ताप त्रय मोचन॥
दो० राम रूप गुण सुमिरि मन मगन भयउ क्षण एक।
रावण माँगेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक॥
महिष खाइ करि मदिरा पाना। गर्जेउ बज्रघात अनुमाना॥
कुम्भकर्ण दुर्मद रण रंगा। चलेउ दुर्ग तजि सेन न संगा॥
देखि बिभीषण आगे आयउ। पुनि पद गहि निज नाम सुनायउ॥
अनुज उठाय हृदय तेहि लावा। रघुपति भक्त जानि मन भावा॥
तात लात मोहिं रावण मारा। कहत परम हित मंत्र बिचारा॥
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउं। दीन जानि प्रभु के मन भायउं॥
सुनु सुत भयउ काल वश रावन। सो किमि मानै परम सिखावन॥
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषण। भयहु तात निशिचर कुल भूषण॥
बन्धु वंश तैं कीन्ह उजागर। भजहु राम शोभा सुख सागर॥
दो० मन क्रम बचन कपट तजि भजहु तात रघुबीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहिं भयउ काल वश बीर॥
बन्धु बचन सुनि फिरा बिभीषण। आयउ जहँ त्रैलोक्य बिभूषण॥

नाथ भूधराकार शरीरा। कुम्भकरण आवत रण धीरा॥
इतना कपिन सुना जब काना। किलकिलाइ धाये हनुमाना॥
लिये उपारि विटप अरु भूधर। कटकटाइ डारे तेहि ऊपर॥
कोटि कोटि गिरि शिखर प्रहारा। करहिं भालु कपि एकहिं बारा॥
गिरै न मुरै टरै नहिं टारै। जिमि गज आँक फलनि के मारे॥
तब मारुत सुत मुठिका हनेऊ। परेउ धरणि व्याकुल शिर धुनेऊ॥
पुनि उठि तेइ मारेउ हनुमन्ता। घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता॥
पुनि नल नीलहिं आनि पछारेसि। जहँ तहँ पटकि पटकि भट मारेसि॥
वली वली मुख सेन पराई। अति भय त्रसित न कोउ समुहाई॥
दो० अंगदादि कपि मूर्छित करि समेत सुग्रीव।
काँख दाबि कपिराज कहँ चला अमित बल सीव॥
उमा करत रघुपति नरलीला। खेलु गरुड़ जिमि अहि गण मीला॥
भृकुटि भंग जिह कालहि खाई। ताहि कि ऐसी सोह लराई॥
जग पावन कीरति विस्तरहीं। गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं॥
मूर्छा गइ मारुत सुत जागा। सुग्रीवहिं तब खोजन लागा॥
कपिराजहु कर मूर्छा बीती। निबुकि गयउ तब मृतक प्रतीती॥
काटेसि दशन नासिका काना। गर्जि अकाश चला तेहि जाना॥
गहेसि चरण धरि धरणि पछारा। अति लाघव पुनि उठि तेहि मारा॥
पुनि आयउ प्रभु पहँ बलवाना। जयति जयति जय कृपानिधाना॥
नाक कान काटे तेहि जानी। फिरा क्रोध करि मानि गलानी॥
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा। देखत कपि दल उपजा त्रासा॥
दो० जय जय जय रघुवंश मणि धाये कपि करि हूह।
एकहि बार जो तासु पर डारे गिरि तरु जूह॥
कुम्भकरण रण रंग विरोधा। सन्मुख चला काल जनु क्रोधा॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई। जनु टीडी गिरि गुहा समाई॥

कोटिन गहि शरीर महँ मर्दा। कोटिन मीजि मिलायसि गर्दा
मुखनासिकाश्रवणकीबाटा। निकसिपराहिंभालुकपिठाटा
रण मद मत्त निशाचर दर्प्पा। मानहु विश्व ग्रसन जनु अर्प्पा
मुरे सुभट रण फिरहि न फेरे। सूझ न नयन सुने नहिं टेरे।
कुम्भकर्ण कपि फ़ौज बिडारी। सुनि धाये रजनीचर भारी।
देखी राम विकट कटकाई। रिपु अनीक नाना विधि आई

दो॰ सुनु सौमित्र बिभीषण सकल सँभारहु सैन।
मैं देखौं खल दल बलहि बोले राजिव नैन॥

करसारंगविशिखकटिभाथा। मृगपतिठवनिचलेरघुनाथा।
प्रथम कीन्ह प्रभु धनु टंकोरा। रिपुदल बधिर भये सुनि शोरा।
धनु सन्धानि छाड़ शर लक्षा। काल सर्प्प जनु चले सपक्षा
अति बल चले निकर नाराचा। लगे कटन भट विकट पिशाचा
काटहिं चरण शिर उर भुज दण्डा। बहुतेक वीर होहिं शतखण्डा
घुर्मिघुर्मिघायल महि परहीं। उठहिं सँभारि सुभट फिरि लरहीं
लागत बाण जलद जिमि गाजें। बहुतेक देखि कठिन शर भाजें।
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड बिनु धावहिं। धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं

दो॰ क्षण महँ प्रभु के शायकनि काटे विकट पिशाच।
पुनि रघुपति के त्रोण महँ प्रविशे आइ नराच।

कुम्भकर्ण मन दीख बिचारी। क्षण महँ हते निशाचर भारी।
भयउ क्रोध दारुण बल बीरा। करि मृग नायक नाद गँभीरा।
कोपि महीधर लिये उपारी। डारेसि जहँ मर्कट भट भारी।
आवत देखि शैल प्रभु भारे। शरनि काटि रज सम करि डारे।
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक। छाँड़े अति कराल बहु शायक
तन महँ प्रविशि निसरि शर जाहीं। जिमि दामिनि घन माहिं समाहीं
शोणित श्रवत सोह तन कारे। जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे।

कुम्भकर्ण और श्रीरामचन्द्र का अत्यन्त युद्ध होना और अनेक वानरादिकों को एकही वार कुंभकर्ण के ऊपर वृक्ष शिलादिका डालना और सुग्रीव कर के कुंभकर्ण की नाक कान काटना



विकल बिलोकि भालु कपि धाये। बिहँसा जबहि निकट चलि आये॥

दो० गर्जत धायउ बेगि अति कोटि कोटि गहि कीश।
  महि पटके गजराज इव शपथ करै दश शीश॥

भागे भालु कपिन के यूथा। वृक बिलोकि जिमि मेष बरूथा॥
चले भाजि कपि भालु भवानी। विकल पुकारत आरत बानी॥
यह निशिचर दुकाल सम अहई। कपिकुल देश परन अब चहई॥
कृपा वारि धर राम खरारी। पाहि पाहि प्रणतारत हारी॥
करुण वचन सुनत भगवाना। चले सुधारि शरासन बाना॥
राम सेन निज पाछे घाली। चले सकोप महा बल शाली॥
खैंचि धनुष शत शर सन्धाने। छूटे तीर शरीर समाने॥
लागत शर संभारि सो फिरा। कुधर डगमगेउ डोलि धरा॥
लीन्ही तेइ इक शैल उपारी। रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी॥
धावा वाम बाहु गिरि धारी। प्रभु सोउ भुजा काटि महि डारी॥
काटे भुज सोहै खल कैसे। पक्ष हीन मन्दर गिरि जैसे॥
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका। मानहु ग्रसन चहत त्रैलोका॥

दो० करि चिकार मुख घोर अति धावा वदन पसार।
  गगन सकल सुर त्रास अति हाहाकार पुकार॥

सभय देव करुणानिधि जाने। श्रवण प्रयन्त शरासन ताने॥
विशिख निकर निशिचर मुख भरेऊ। तदपि महा बल भूमि न परेऊ॥
शरनि भरा मुख सन्मुख धावा। काल त्रोण जनु तन धरि आवा॥
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा। धड़ ते भिन्न तासु शिर कीन्हा॥
सो शिर परा दशानन आगे। विकल भयउ जिमि फणि मणि त्यागे॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा। तब प्रभु काटि कीन्ह युग खण्डा॥
परे भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दाबि कपि भालु निशाचर॥
तासु तेज प्रभु वदन समाना। सुर मुनि सबहिं अचंभो माना॥

नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं। जय जय कहि प्रसून सुर वर्षहिं
करि बिनती सुर सकल सिधाये। तब तेहि समय देवऋषि आये
गगनोपरि हरि गुरागण गाये। रुचिर वीररस प्रभु मन भाये ।
वेगि हतहु खल मुनि कहि गये। राम समर महँ शोभित भये ।
छं० संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुल बल शोभा धनी।
श्रम बिन्दु मुख राजीव लोचन रुचिर तन शोणित कनी
भुज युगल फेरत कर शरासन भालु कपि बहु दिशि बने
कह दास तुलसी कहि न सक छवि शेष जेहि आनन घने
दो० निशिचर अधम मलायतन ताहि दीन्ह निज धाम
गिरिजा ते नर मन्द मति जे न भजहि श्री राम।
दिन के अन्त फिरी दोउ अनी। समर भये सुभटन सन घनी ।
राम कृपा बल कपि दल बाढ़ा। जिमि तृण पाइ लागे अति डाढ़ा
छीजहिं निशिचर दिन अरु राती। निज मुख कहे सुकृत जेहि भाँती
बहु बिलाप दश कन्धर करई। पुनि पुनि बन्धु शीश उर धरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज बल बिपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर आवा। कहि बहु कथा पितहि समुझावा
देखेहु काल्हि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई
इष्टदेव सन जो वर पायउं। सो वर तात न तुमहिं सुनायउं।
इहि विधि जल्पत भयउ बिहाना। लगे भालु कपि चहुँ दिशि नाना।
इत कपि भालु काल सम वीरा। उत रजनीचर अति रण धीरा
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू। वरणि न जाइ समर खग केतू
दो० मेघनाद माया विरचि रथ चढ़ि गयउ अकाश।
गर्जेउ प्रलय पयोद जिमि भा कपि दल अति त्रास
शक्ति शूल शर परिघ कृपाना। अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना
डारे परसु प्रचण्ड पखाना। लागा वृष्टि करै विधि नाना।

रहे दशहु दिशि शायक छाई। मानहु मघा मेघ झरि लाई।
धरु धरु मारु सुनहिं कपि काना। जो मारे तेहि कोउ न जाना।
गहि गिरि तरु अकाश कपि धावहिं। देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं
अवघट घाट बाट गिरि कन्दर। माया बल कीन्हेसि शर पंजर।
मारुतसुत अंगद नल नीला। कीन्हेसि बिकल सकल बलशीला
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषण। शरन मारि कीन्हेसि जर्जर तन।
पुनि रघुपति सन जूझै लागा। छाड़त शर ह्वै लागहिं नागा
व्याल फाँस बश भये खरारी। स्ववश अनन्त एक अविकारी।
नर इव चरित करत विधि नाना। सदा स्वतंत्र राम भगवाना।
रण शोभा हित आपु बँधावा। देखि दशा देवन भय पावा।
दो० खगपति जाकर नाम जपि नर काटहिं भव फाँस
सो प्रभु आव कि बन्ध तर व्यापक विश्व निवास
चरित राम के सगुण भवानी। तरकि न जाइ बुद्धि बलवानी।
अस बिचारि जो परम बिरागी। रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा। पुनि भा प्रकट कहत दुर्ब्बादा
जामवन्त कह खल रहु ठाढ़ा। सुनि कै ताहि क्रोध अति बाढ़ा।
बूढ़ जानि शठ छाँड़ेउं तोहीं। लागेसि अधम पचारन मोहीं
अस कहि ताहि त्रिशूल चलावा। जामवंत सो कर गहि धावा
मारेउ मेघनाद की छाती। परा धरणि घुर्मित सुर घाती।
पुनि रिसाइ गहि चरण फिरावा। महि पछारि निज बलहि देखावा
वर प्रसाद सो मरै न मारा। तब पद गहि लंका पर डारा
इहाँ देवऋषि गरुड़ पठाये। राम समीप सपदि चलि आये
दो० पन्नगारि खाये सकल क्षण महँ व्याल बरूथ।
भई बिगत माया तुरत हर्षे बानर यूथ॥
गहि गिरि पादप उपल बहु धाये कीश रिसाइ।

चले तमीचर बिकल अति गढ़ पर चढ़े पराइ ।
मेघनाद की मूर्च्छा जागी। पितहि बिलोकि लाज अति लागी ।
तुरत गयउ सो गिरिबर कन्दर। करन अजय मख अस मन हठ धर
सो सुधि पाइ बिभीषण कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई
मेघनाद मख करै अपावन। खल मायावी देव सतावन।
सो प्रभु सिद्ध होइ जो पावहि। नाथ बेगि रिपु जीति न जाइहि।
सुनि रघुपति अति शय सुख माना। बोलि लिये अंगद हनुमाना
लछमण संग जाहु सब भाई। यज्ञ बिध्वंस करहु तुम जाई।
तुम लछमण रण मारेहु ओही। देखि सभय सुर बड़ दुख मोही ।
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई।
जामवन्त कपिराज बिभीषण। सेन समेत रहहु तीनों जन ।
जब रघुवीर दीन्ह अनुशासन। कटि निषंग कर बाण शरासन
प्रभु प्रताप उर धरि रणबीरा। बोलेउ घन इव गिरा गँभीरा
जो तेहि आजु बधे बिनु आवौं। तौ रघुपति सेवक न कहावौं
जो शत शंकर करहिं सहाई। तदपि हतौं रघुबीर दुहाई।

दो० बन्दि राम पद कमल युग चले तुरन्त अनन्त।
अंगद नील मयन्द नल संग सुभट हनुमन्त ॥

जाइ कपिन देखा सो बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा।
तब कीशन कृत यज्ञ बिध्वंसा। जब न उठे तब करहिं प्रशंसा।
तदपि न उठे धरहिं कच जाई। लातन हति हति चलहिं पराई।
लै त्रिशूल धावा कपि भागे। आवा राम अनुज के आगे
आवत परम क्रोध करि मारा। गर्जि घोर रव बारहिं बारा
कोपि मरुतसुत अंगद धाये। हति त्रिशूल उर धरणी गिराये
प्रभु पर छाड़ेसि शूल प्रचण्डा। शर हति कृत अनंत युग खंडा
उठि बहोरि मारुत युवराजा। हतेउ कोपि तेहि धावन बाजा

फिरै वीर रिपु मरै न मारा। सुनि धावा करि घोर चिकारा।
धावत देखि क्रोध जनु काला। लक्ष्मण छांड़े विशिख कराला
आवत देखि बज्र सम बाना। तुरत भयो खल अन्तरधाना।
विविध वेष धरि करै लराई। कबहुँक प्रकट कबहुँ दुरि जाई।
तब त्रिशूल छांड़ेसि लक्ष्मण पर। काटि कीन्ह शत खंड धरणीधर
शिखर सक्ति ले पुनि सो धावा। राम अनुज सो काटि खसावा।

दो० आयुध विविध प्रकार किय रज सम कीन्ह फणीश
हर्ष विवश कपि भट्ट सब विबुध सहित सुरईश

बहुरि विविध शर छांड़न लागा। रण कारण छूटहिं जिमि नागा।
राम अनुज शर गरुड़ समाना। उमा ग्रसत छूटहि अभिमाना।
देखि अजय रिपु डरयेउ कीशा। परम क्रोध तब भयउ अहीशा।
देखिय जिमि रवि तेज समाना। फुंकरत मनहुँ व्याल अनुमाना
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढ़ावा। इहि पापिहि मैं बहुत खेलावा।
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा। शर सन्धान कीन्ह करि दापा।
छांड़ा बाण तासु उर लागा। शीश भुजा काटे नृप नागा।
घन समान सो गर्जि अभागा। मरती बार कपट सब त्यागा।

दो० राम अनुज कहि राम कहि अस कहि छांड़ेसि प्रान
धन्य शक्रजित मातु तव कहि अंगद हनुमान॥

बिन प्रयास हनुमान उठाये। लंका द्वार राखि पुनि आये
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा। चढ़ि विमान आये सुर सर्वा
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं। श्रीरघुवीर विमल यश गावहिं।
जय अनन्त जय जगदाधारा। तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा।
अस्तुति करि सुर सकल सिधाये। लक्ष्मण कृपासिन्धु पहँ आये

क्षेपक

प्रभुहिं विलोकि शीश पद नाये। उठि प्रभु अनुज हर्षि उर लाये।

कृपा दृष्टि करि अनुजहिं हेरा। विगत भयो श्रम जब कर फेरा ॥
बाण बेधि तन देखियत कैसे। कनक श्रोण शर पूरित जैसे ॥
सुख प्रसन्नता देखि छके सब। रिपु बध कहा बिभीषणहू तब ॥
धरेउ शीश आन प्रभु आगे। बानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभु कौतुकी निरखि सो शीशा। राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥
दो० प्रभु आयसु सुनि कीशपति राखेउ यतन कराय।
कटक सहित रघुवंशमणि शोभित अति रोउ भाय ॥
कृपा दृष्टि सब कटक निहारे। भे श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा इहि बिधि रिपु मारे। सुर गंधर्व मुनि भये सुखारे ॥
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी। खग जिमि गई लंक शर प्रेरी ॥
मेघनाद आँगन में परी। बाण बेधि शोणित सन भरी ॥
देखति तहाँ सुलोचनि कैसी। रति तें रुचिर रूप गुण जैसी ॥
नाग सुता दशकन्ध पतोहू। बासव रिपु तिय छबि मय जोहू ॥
हेम सिंहासन सोहत बाला। सेवत विद्याधर अप्स काला ॥
पूजत बिबिध बिनय करि ताही। सुख प्रमोद को सकत सराही ॥
तहँ पति भुजा परी इहि भाँती। मनहुँ सकल सुख तरु की काँती ॥
दो० तब निज दासिन्ह देखि तहँ शोणित श्रवत भुज दंड।
भयउ समर आश्चर्य मय मनहुँ अखण्डन खंड ॥
सुनि कर सकल सखी सुखचैना। तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
प्रेम सुभाय धुकधुकी धरकी। सूचक अशुभ दहिन भुज फरकी ॥
होत महारण रावण रामहिं। बीर धुरीण मोर पिय ता महिं ॥
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी। बिधि बामता परत नहिं बूझी ॥
इतना कहत गई चलि आपू। पति भुज लखि करि कोटि कलापू ॥
कंचन मणि गण भूषण सोई। महा बिटप सम आन न होई ॥
देखत मनहिं न आवत तेही। जासु प्रभाव सुनत किन लेही ॥

नींद नारि भोजन परिहरही। बारह बरष तासु कर मरही
दो॰ करि बिचार मन देखा है मैं पति देवत नारि।
भुज लिखि मेटहु सुचितही सुन कर दीन पसारि॥
लखि रुख तासु सखी उठि धाई। सो तिहि खोज खरी लै आई।
दीन हाथ मणि मय अंगनाई। लिखत लखण कीरति रुचिराई
नींद नारि भोजन शत कोटी। तजत तासु महिमा अति छोटी।
अखय अखंड अलख अबिनाशी। अतुल अमित घट घट के बासी
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरई। निर्गुण रूप त्रय मूरति धरई।
जो कालहु कर काल भयंकर। बरणत शेष शारदा शंकर।
लीला तनु धर सेवक हेतू। जासु नाम भवसागर सेतू।
मुनि मन पुण्डरीक जाके घर। बचन बिबेक बिचार बुद्धि बर।
दो॰ कोटि कल्प बरणत निगम अगम जासु गुण गाथ
नम शरीर जड़ जीव बिनु किमि बरणत लिखि हाथ
मम शिर गयो दरश रघुराई। तब प्रतीत लगि भुजा पठाई
इहि बिधि लिखेउ सकल भुज बाता। परी भूमि तब अति बिकलाता
बाँचि सकल भुज लिखित यथारथ। लक्ष्मण राम नाम परमारथ
त्रिया स्वभाव तदपि बहु भाँती। बिलखत सकल सखिन कर पाँती
गुणगण साहस शील नाह को। कहि रोवत बल बिपुल बाँह को
जेहि भुज बल सुरनाथ बिगोवा। सो भुज आजु समर महि सोवा
मणिगण भूषण बसन बिसारत। महि लोटत करतल शिर मारत।
मगन बिपति निज तन सुधि नाहीं। दारुण बिपति कहिन केहि पाहीं
स्राक प्रबोध सखी कोउ करही। बहुरि शोक दावानल जरही
क्षण क्षण उठत परत धरणी तल। सुनि सुनि सब सराहि पति को बल
दो॰ तिन में सखी सयान इक कहि समुझावत बैन।
शोक छाँड़ि पति देवता सुमति करौ मति सैन

युद्धमें लक्ष्मणजी करके मेघनादवध और हनुमानजीको मेघनादका मृतक शरीर उठाकर लंका
द्वारपर रख आना और मेघनादकी भुजा सुलोचनाके निकट जाय खरीसे संपूर्ण वृत्तांत लिखना



सुन कर सहस्रानन तन जाता। सत्य कहत तुम सखी सुमाता।
विधि निर्मित दुख सों कहँ लाहू। सुख परिपूर भवन सब काहू।
विजय राम लक्ष्मण कहँ आवा। सुयश सकल मर्कट कुल पावा
कुल कलंक बड़ लहेउ बिभीषण। कुल कुठार अस सुनेउं न दीखण
छूटि बन्द अस सुर गण केरी। निज निज पुरन दुहाई फेरी।
मुनि पुलस्त्य कर भा कुल नाशा। अब रवि शशि सुख करहिं प्रकाशा
तेजवन्त पावक परिहरि दुख। बहब समीर आजु अपने सुख
सलिल गंग निर्मल जल आजू। स्ववश बसहिं सुर नायक राजू
* सो॰ यम कुबेर दिगपाल सब प्रमुदित सुर नर नाग।
खान अघाय बिहाय दुख पाय सुयज्ञ बिभाग॥
रचना कह मन्दिर महँ आई। रखत मणि गण धन बहुताई
सुरपति भवन सुपन्तर नाहीं। जहँ ऋधि सिधि तनु धरे कमाहीं
देखत विनयन मन अनुरागा। पति पद प्रेम निपुण मन पागा।
देत दान मणि भूषण चीरा। धेनु बसन मणि हाटक हीरा।
मणिमय शिविका रुचिर सुहाई। भुज मड़ाइ पहिराय बनाई।
आपन चढ़त भई पुनि आई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई
वीतराग जिमि तजत विषयगन। तेहि तस भांति सियो पति पर मन
सुक सारिका सुलोचन ज्याये। कनक पिंजरन राखि पढ़ाये।
व्याकुल कहँ कहँ जात सुनयना। सुनि धीरज परिहरत सुबयना
भये बिकल खग मृग इहि भाँती। अपर दशा कैसी कहि जाती
प्रजा लोग गृह तजि सँग लागे। प्रेम उमगि लोचन जल पागे
सो॰ बाजन लगे निशान बहु ढोल दुन्दुभी भेरि।
पुर जन परि जन संग सब चले पालकी घेरि।
देखि भीर दशकन्धर हारे। सजग भये सब बीर प्रचार।
जानेउ कटक रिपुन कर आवा। अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा

धनु चढ़ाइ कटि तरकस बाँधे । कोउ असि चर्म शरासन साँधे
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि । रोधन चोखे शूल शक्ति गहि
मारु मारु धरु धरु कहि धाये । प्रकट दशानन विजय सुनाये
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा । समर भयंकर निश्चर बीरा ।
निपटहि निकट पालकी आई । चीन्हि सकल भट रहे लजाई
देखि जुहारि नागपति कन्या । सती शिरोमणि त्रिभुवन धन्या

दो० द्वारपाल दशकन्ध चहुँ खबरि जनाई जाय ।
भयउ रजायसु बेगि तब बचन कहत बिलखाय

तुमहिं अछत असदशा हमारी । सुख तजि भई शोक अधिकारी ।
नभ पथ है भुज मम गृह परा । बाण बेधि श्रोणित तन भरा ।
देखि भुजा मन में अति डरी । संशय जानि दीन्ह कर खरी ।
लिखी राम लक्ष्मण महिमा इन । क्रम क्रम सो सब कथा कही तिन
ठगि सी रही बाँचि गुण गाथा । जरऊं संग जो पाऊं माथा ।
रण कबन्ध भुज मम गृह आई । शिर तहँ गयउ जहाँ रघुराई ।
करहु सो यतन मिलहि मोहि शीशा । तुम सामर्थ निशाचर ईशा ।
सुनत कुलिश सम गिरा बधू की । जीवन आश दशानन भूकी
तदपि धीर धरि करसि प्रबोधा । कहि कोउ मोहि समान जग योधा

दो० राम लषण सुग्रीव नल नील द्विविद हनुमन्त ।
माथ बिभीषण ऋषभ कर आनब मारि तुरन्त ॥

अब लगि रहेउ भरोसा भारी । कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ।
सुनहु आजु लगि कीन्ह न जूझा । इन सब कर पुरुषारथ बूझा ।
मरेउ सो नर बानर के मारे । बात सुनत अति लाज हमारे ।
गिनती कवन वीर में तिन की । अति दुर्दशा कीन्ह कपि जिन की
तजहु शोक कुल बधू सलोहू । उन समान जनि मानसि मोहू
सुनि बिलख करौ धरि चारी । देखहु मोर भयंकर भारी ।

आनब सिर तव शत्रुन केरा। बिन प्रयास नहिं लावौं बेरा।
भोगत जन्तु पराकृत भोगा। नतु किन निश्चर बनचर योगा
दो० मेरु उखारन हार जे धरा धरत कर बीच ॥
ते भट खाये मशक शिशु काल कुटिलता नीच
क्रोधावेश प्रगल्भ हि बोली। हृदय शोक तन अचल न डोली
समाधान नहिं मानत सोई। सुनि प्रलाप परितोष न होई।
नरबानर पुरुषारथ देखत। बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत।
तरि सिन्धु कपि लंका जारी। लघु करि मानत ताहि सुरारी।
कुम्भकरण अतिकाय महोदर। मम पति गिरिउ समेत सहोदर
ते रिपु चहत दशानन जीती। देखहु महा मोह कर रीती
उतर देउं तो पातक होई। कहु विचार कर सर्बस खोई
फिरहि राज कछु मोहि न काजू। बिन पिय सकल नरक कर साजू
दो० तुरतहि उठी सुलोचना गइ मय तनया पास।
पद गहि रोवत सकल कहु प्रकट शोक इतिहास
आदिहि ते सब कथा बखानी। सुनि सुनि रोवत शचरण रानी
कह निज पति भुज बिल खिबहोरी। रामलषण महिमा नहिं थोरी
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा। सुत बिडम्बन कीन्हेसि बोधा
सुनि निज पुत्र बधू की बानी। बोली दुखित मँदोदरि रानी
कहत सो मानहु सत्य सयानी। सुनी जो नारद मुनि की बानी
पाछिल बात भई सब साँची। अनुभव कीन्ह न सकहु बाँची
देवि न होइ मृषा ऋषि भाषत। अपने महा मोह मन राखत
अगली कथा समास समेता। सुनु पुत्री ऋषि बसोइ जेता
बैरि भाव दशकन्धर जूझब। प्राणाहु गये नीति नहिं बूझब।
सिया शोक संकट ते छूटहिं। बानर भालु राज घर लूटहिं
सुरमणि भूषण बसन बिमाना। भोग करहिं बन चर कुल नाना

दो॰ राज विभीषण पाय हैं अमर कल्प निरबाह ॥
भावी बश दुख सुख जगत उपदेशिय कह्न काह ।
सुनि बर बचन मोहिं परतीती । अनुभव दोउ हार अरु जीती ।
अब पुत्री परिहरि सब शोका । पति संग बेगि साधु परलोका ।
जाहु राम सँग पति शिर लागी । तजि संकोच आन किन मागी ।
आजन होइ लाज कर भूषण । समय हीन गुण गनिय न दूषण ।
हैं पुनि ससुर विभीषण तोरा । बालि तनय बालक सम मोरा ।
एक नारि ब्रत रघुबर केरा । लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा
जामवन्त मंत्री सुग्रीवा । द्विविद मयन्द महा बल सींवा ।
जानहु ब्रह्मचर्य्य हनुमन्ता । शिव स्वरूप भव हर भगवन्ता ।
सदा नीति रत राम नरेशा । तहाँ जात कहु कवन कलेशा ।
दो॰ विदित तोर पति भुज लिखित लक्ष्मण शस प्रभाव
हमहूं अस भाषित कहेउ अब बिलम्ब जनि लाव ।
सुनत सासु सुख कर हित बानी । जाहु राम पहँ अस जिय जानी ।
बार बार चरणन शिर नाई । चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई ।
देखत कटक भालु कपि केरा । सिन्धु सुबेल महीधर घेरा ।
उमगेउ मनो महोदधि दूसर । हरित पीत कपि धूमर धूसर ।
व्योम लाल भावत अनुहेरी । मनहुं लेत बड़वानल घेरी ।
गिरि तरु धर भुज सहस भयंकर । जहँ तहँ प्रकट होइ जनु जलधर ।
लक्ष्मण शेष सुमंक शीशधर । कटक जलधि सोवत राघव वर ।
अखवट जहँ तहँ बैठ विभीषण । अस सुकृती कहु सुने न दीषण ।
दो॰ देखत डरत सुलोचना धीरज धरत बहोरि ।
महाराज रघुबीर कहँ विनय सुनाओ मोरि ॥
बानर सकल उठे अस बोली । अरि पुर ते इक आवत डोली ।
जानि परत रावण अब बूझा । भइ मति मेघनाद जब जूझा ।

हठ तजि सीतहि दीन्ह पठाई। तजहु शोच अब मिटी लड़ाई
जिहि लगि प्रकट कीन्ह पुर आगी। बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी
सोइ सीता अब बिनुश्रम पाई। जानहु विधि अनुकूल सहाई
विजय राम सुग्रीवहिं आवा। सुयश वीर बानर कुल पावा॥
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा। बिन कलेश लंका गढ़ टूटा॥
युग युग कीरति चलब हमारी। कहँ राक्षस कहँ लघु बन चारी
दो० इहि विधि चारु विचार करि निश्चय धरि मन माहिं।
भयउ काज रघुराज कर बात दूसरी नाहिं॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई। अनवि नारि जनु पर घर आई
आगेहि जाइ देखि रघुबीरा। छवि श्यामल मय गौर शरीरा॥
मरकत कनक छबिहि जनु निन्दत। धन्य सुजन महिमा ते विन्दत
मत्तगयन्द शुण्ड भुज दण्डा। धनुष बाण असि धरिय प्रचण्डा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर। कम्बु कण्ठ रेखा त्रय सुन्दर॥
दशन पाँति की कांति कहै को। लावत मन पट तरहि लहै को
देखत अधरन की अरुणाई। बिम्बा फल बन्धूक लजाई॥
शुक तुण्डक नासिका लजाई। थाकेउ कवि पटनरहि न पाई
दो० छबि मय गुणमय तेजमय राम उदधि अव गाह।
जहाँ न पावत पार सुर किमि वरणै कवि थाह॥
भ्रुकुटी ललित कपोल सुहाये। शीश जटा कर मुकुट बनाये॥
भाल विशाल तिलक युत सोहे। ध्यान समय मुनि मानस मोहे
बलकल वसन तूण कटि बाँधे। कर शर सुभग शरासन काँधे॥
वीरासन आसीन कृपाला। नव पल्लव प्रसून कर माला॥
चरण सरोज बरणि नहिं जाई। जहँ मुनि मधुकर रहे लुभाई॥
प्रकट भई जेहि थल ते गंगा। श्रुति पुराण कह कथा प्रसंगा॥
नवत महेश विरंचि जाहि को। लोचन गोचर होत काहि को

जन आरत भंजन जो कोई। भवसागर तारण के सोई ॥
दो० प्रणत पाल बिरदावली जिन चरणन की बान।
शोक हरण संशय दलन करन सुमंगल खान॥
कर जोरे अंगद हनुमाना। द्विविद मयंद कुमुद बल वाना॥
जामवन्त कपिपति बलशीला। ऋषभ सुषेण सहित नल नीला
महावीर वानर सब राजत। लषण विभीषण दोउ दिशि भ्राजत॥
निति भाषित प्रभु चरण सुसेवक। चितवत रुख रघुनंदन देवक॥
सभा मध्य सोहत घनमोचन। कीन्हेउ सफल निरखि निजलोचन
करन दण्डवत शिर धरि धरणी। तेहि कर। चरित विभीषण वरणी॥
पुत्रवधू दशकंधर केरी। बड़ि पति व्रता जानि प्रभु हेरी॥
मेघनाद की नारि सुशीला। अस गति तव विरोध करलीला॥
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे। करुणा वचन कहत कर जोरे॥
दो० सुये जानि पति भुज हित वलिख समझाई मोहिं।
महाराज रघुवंश मणि याचन आई तोहिं॥
छं० परसे चरण कर प्रेम पूरण प्रणत पाल खरारि के।
जेहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणि भंजन भार के॥
प्रभु जान सो बिनती सुलोचनि करत है बिनती घनी।
जय शोक हरण कृपाल जयजय जयति जय रघुकुल मनी॥
प्रभु ब्रह्म रूप स्वभाव शीतल अतुल बल त्रिभुवन धनी।
जय हरण धरणी भार बाहु विशाल खण्डन खल अनी॥
तव दीनबन्धु दयाल अपरम पार सब गुण आगरे।
करुणा निधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे।
षट अष्ट लोक जो रचत पालत प्रलय सो माया सुरी॥
केहि भाँति वरणों नाथ गुण गण नारि जड़ मति बावरी॥
जे इ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं।

हूँ भूरिभाग सरोज पद सोइ हर्षि सिरसि लगावहीं ॥
छं० गहि कर पाणी सारंग पाणी सब गुणखानी राम बली ।
सुर सुरभी रक्षक राक्षस भक्षक भक्तहि रक्षक मान बली ॥
मैं रिपु सुत नारी जानि ऋघारी ऋधिकारी नहिं दुखभारी ।
हरि विरह दवारी ऋति भयकारी सहि वहु वारी दुख कारी ॥
तव शरणन ऋाई जन सुख दाई रघुराई करुणा सागर ।
पति मस्तक पाऊं जरि संग जाऊं शिर नाऊं शोभा ऋागर ॥
पति संग तन त्यागी ऋलि बड़भागी ऋनुरागी जिन मुक्ति लही ।
ममता किमि नासू वरणूं ऋासू जासु ऋचल जगपति रही ॥
इहि विधि पद पंकज सेव्य रमा ऋज शिर नाई कर जोरि रही ।
सुनि पंकज लोचन वचन सुलोचन लोचन तें जलधार बही ॥
दो० ऋस प्रभु दीनबन्धु हरि कारण रहित दयाल ।
तुलसिदास शठ ताहि भजु छाँड़ि कपट जंजाल ॥
तुम ऋन्तरयामी भगवाना । नहिं तोहिं ऋादि मध्य ऋव साना ॥
करुणा वचन सुनत रघुवीरा । पुलकि रोम भे शिथिल शरीरा ॥
देहूं जिवाय तोर पति ऋाजू । करहू लंक कल्प शत राजू ॥
छांड़ु शोच ऋब मन हर्षाहू । तुरत भवन ऋपने फिरि जाहू ॥
सुनि ऋस सत्य सिन्धु कर बानी । मनमें बनचर ऋतिभय मानी ॥
कहि न सकत कछु प्रभु रुख देखी । कहा करव करतार विशेखी ॥
सब देवन कर शोचन जाई । जो करि कृपा राम इहि ज्याई ॥
दो० राज बिभीषण लंक कर केहि बिधि करिहहिं जाइ ।
समुझि बैर घननाद जब गहब शरासन धाइ ॥
मुख रुख देखि कथिन भय माना । प्रणतपाल भगवंत सुजाना ॥
देखि बहुत रघुवर कर छोहू । विनय करत दशकन्ध पतोहू ॥
तुम उदार सब देवे लायक । करुणा मय देखे रघुनायक ॥

हमहुं विचारि दीख मन माहीं। जीवन ते अस मरण सराहीं॥
भुजबल जीति लोक वश कीन्हें। चौदह भुवन भोग करि लीन्हें॥
रण तीरथ याचत बड़ चीन्हा। प्राण सुधन लक्ष्मण कर दीन्हा
अब न उचित पति दे उपहारा। तेहि पर अधिक सो दरश तुम्हारा॥
हमहूं जाइ मरब सत साधी। मिलब तुमहिं जस मिलत समाधी

दो॰ निर्मल गति अवसर भयउ सुनहु सत्य रघुवीर।
तुमहिं मिलत नहिं होइ भव यथा सिन्धु गत नीर॥

मन की जानन हार सुजेवा। भवसागर तारहु यह खेवा॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई। मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू। सिया विरह सम्भव परि तापू॥
अंचल पोंछत मुख की धूरी। कहि मम प्राण सजीवन मूरी॥
देखि सँदेह कहत सुग्रीवा। भुज गहि लिखत जो विन ग्रीवा॥
हँसि हहिं बदन तो हि है साँची। नातर निशिचर माया याँची॥
कित अस ज्ञान मृतक भुज गावे। जो मुनि वर साधन नहिं पावे॥
प्रभु अस कहेउ हँसब यह शीशा। करत कुतर्क न उचित कपीशा

दो॰ शिरसों कहत सुलोचना हँसहु बेगि मम नाथ।
नातर सत्य न मानिहैं लिखा जो तुम्हरे हाथ॥

क्षणक बिलंब कीन्ह नहिं बोला। मृतक बदन मूँदत नहिं खोला॥
पुनि पुनि कहत सो नागकुमारी। असित भयउ रण में करि मारी॥
लगे लषण कर क्षोभ बढ़ावा। प्रभु समीप कस मोहि लजावा॥
जो मन वचन करम यह देही। पति देवता न आन सनेही॥
तो प्रभु सभा बीच शिर बोलै। रहहि छाय यश सुयश अमोलै॥
जो जानत तव गति यह साँई। बोलि पठावत पितहि सहाई॥
सुनि तिय वचन हँसेउ तब शीशा। चौंके चकित भालु भट कीशा॥
हँसेउ ठठाय बदन सब देखा। बिस्मय भयउ सकल जेहि पेखा॥

कुलिश समान सुना नहिं जाई। रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई॥
सकुच कपीशहिं तोषेउ नारी। बड़ आश्चर्य भयो बन चारी॥
पूँछत कपिपति पद शिर नाई। कारण कवन हँसा शिर सांई॥
प्रभु कह सुनु सुग्रीव कपीशा। शीशहिं से कर सुनहु अदीशा॥
मन क्रम बचन पतिहि सेवकाई। तियहित इहि सम आन उपाई॥
अस जिय जानि करहिं पति सेवा। तेहि पर सानुकूल मुनि देवा॥
यह सतवति अहि राज कुमारी। तेहि सत ते हँसि शीश सुरारी॥
सुनि प्रभु वचन कपिन सुखमाना। पुनि पुनि चरण गहे हनुमाना॥
सुनु गिरिजा अस प्रभु प्रभुताई। केवल भक्तहिं देत बड़ाई॥
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा। अस कौतुक कर कैतिक आशा॥
दो० शीश पाइ प्रभु चरण गहि बहु बिधि विनय सुनाय।
आजु को दिन रण परिहरहु मम हित कोशलराय॥
बहुरि विभीषण पगन परीसो। रघुपति चरण दिये मन पुनि सो॥
तुम पितु सम दशकंधर भाई। इहि कुल की तोहिं लाज बड़ाई॥
सुनि पुलस्त्य परिवार क दीया। पायउ फल रघुवीर समीया॥
महामोह वश अनभल माना। ज्ञान भयो तब गुण पहिंचाना॥
युग युग करहु अकंटक राजू। सहित सुकीरति सुकृत समाजू॥
सुमिरत तुमहिं सुजन गति पावा। रघुपति चरित संग कर गावा॥
सुनत विभीषण मन करुणाभर। प्रकटन कहत समय विरहाकर॥
काल कर्म गति कहि समझाई। चली तुरत गुरु आयसु पाई॥
दो० बाहर करि कपि कटक तें फिरेउ विभीषण आय।
बिसरेउ दशमुख बैर ही हृदय अधिक सन्ताप॥
शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो। रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा। रसना रटत निरंतर नामा॥
सरित सिन्धु संगम जहँ पावन। अस सुधि पाय गयो तहँ रावन॥

संग मंदोदरि सब रनिवासू। मनो शोक रवि कीन्ह प्रकासू ॥
पाय रजायसु सेवक धाये। चन्दन अगर सुगंध बहु लाये ॥
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई। जनु सुर लोक नसैनी लाई ॥
करि प्रणाम सब जन परितोषी। धीरज धरसि तासु मति पोषी ॥
शिर भुज धरि बैठी कर आसन। भइ जनु योग सिद्धकर भाजन ॥
दो॰ देत अनल ज्वाला बढ़ी लपट गगन लगि जाय।
लखी न काहू जात तेहि सुर पुर पहुँची आय ॥

इति ॥

सुत बध सुना दशानन जबहीं। संभ्रम मूर्छि परा महि तबहीं ॥
दुखित भयेउ लोचन भरि आवा। जनु निज मणि अहिराज गँवावा ॥
हा सुत सन्तत आज्ञाकारी। करि बिलाप दश कन्ध पुकारी ॥
शक्र आदि जीतेउ सुर देवा। सुर मुनि बन्दि करायहु सेवा ॥
दूसर रहा न भुजबल दाया। स्वर्ग भूमि तल तपेउ प्रताया ॥
इहि विधि करि विलाप लंकेशा। भयउ तेज हत मनु उर गेशा ॥
मन्दोदरी रुदन करि भारी। उर ताड़लि बहु भाँति पुकारी ॥
नगर लोग सब व्याकुल शोचा। सकल कहहिं दशकंधर पोचा ॥
दो॰ तब दशकन्ध अनेक विधि समुझाई सब नारि।
नश्वर रूप प्रपंच सब देखहु हृदय विचारि ॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावन। आपन मन्द कथा अति पावन ॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
तासु क्रिया करि निशिचर नाहा। भयउ तेज हत अति मन माहा ॥
सचिव आइ सब लागु बुझावन। वाद विवाद करिय जनु रावन ॥
सुत वित नारि विविध सुख केते। उपजहिं घटहिं घने नभ जैसे ॥
यह जिय जानि सुनहु दशभाला। बचहि न कोउ जग आये काला ॥
अब प्रभु यतन विचारहु सोई। रिपु कर नाश जवन विधि होई ॥

सुलोचनाको श्रीरामचन्द्रजीके कटकमें जाय अनेक वार्त्तालापकर अपने पति मेघनाद
का शीश लेय चिता बनाय सती होना॥



क्षेपक

दो० लागेउ करन बिचार पुनि बहु प्रकार दशशीश।
समुझि हृदय अहिरावणहिं आयेउ जहाँ गिरीश॥
दण्ड चारि तब तहं निशि बीती। सन्ध्यावन्दन कीन्ह सप्रीती॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा। करि हर्षित संपुट भुज बीसा॥
शंकर सेवक अति अनुरागी। सुनु खगेश तेहि ते बड़भागी॥
मंत्राकर्षण जपि दशभाला। अहिरावण चित डोल पताला॥
लागेउ करन सो मन अनुमाना। केहि कारन दशमुख अकुलाना॥
निशिचर नाह भुवन वश जाके। जीतन कहँ न वीर कोउ ताके॥
मन क्रम वचन आन नहिं सेवी। धरेउ ध्यान उर कामद देवी॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहवाँ। शिव मराड़प रावण रह जहवाँ॥
निशिचर पति कहि तेहि शिर नायउ। कर गहि निज आसन बैठायउ॥
दो० अहिरावण तब रावणहिं बूझी कुशल सप्रीति।
प्रथम कही तेहि सब कथा जैसे भगिनि अनीति॥
वध खर दूषण जिमि सुधि पाई। मृग मारीच कपट कृत गाई॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरणा। लंक दहन हनुमत कर वरणा॥
सेतु बाँधि जिमि प्रभु चलि आयउ। वालि कुमार विवाद सुनायउ॥
अनी अकम्पन अरु अति काया। परे समर महि सुनु अहिराया॥
तात कुशल अब सब इसि रानी। कटक निशाचर सकल नशानी॥
कुम्भकरण घननाद हु मारे। राम लषण दुइ मनुज विचारे॥
आनेहु बोलि तोहि निज पासा। कहहु सो यतन होय रिपु नासा॥
सुनत शोच भा अहिरावण मन। बोला वचन सुहावन पावन॥
सुनु रावण जग नीति पियारी। करे अनीति होय भय भारी॥
बिना बिचार गारि तुम ठानी। कीन्हेसि नकुल सर्वस हानी॥
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ। सब तें बड़ तेहि लघु की मानेउ

यदपि न योग मोहिं अस बाता। तदपि हरहुँ तब लगि दोउ भ्राता॥
लै पताल देविहि बलि देहौं। यश पूरण निशिचर कुल लेहौं॥
लै जैहौं तुम जानेउ तबहीं। रबि सम तेज होइ निशि तबहीं॥
दो० कहि अस बचन प्रबोध करि शीश नाइ बल भाखि।
आयउ रघुपति कटक तब निज देविहि उर राखि॥
सूझन निज कर अति अँधियारी। मर्कट भट जागहिं तहँ भारी॥
कहहिं जयति जय जयति कृपाला। अतिहि अगम जहँ नहिं गति काला॥
तहँ मारुत सुत रचेउ उपाई। करि लंगूर कोट कठि नाई॥
सो शोभा इहि भाँति सुनाई। भुजग राज कुण्डली लगाई॥
देखिय उन्नत शैल समाना। द्वार जहाँ तहँ मुख हनुमाना॥
देखि हृदय अहिरावण हारा। किमि रवि गृह कर तिमिर पसारा॥
एको युक्ति न मन ठहरानी। कपट भेष तेहि कीन्ह भवानी॥
वेष विभीषण सब अनुहारी। पवन तनय पहँ गा छलकारी॥
दो० सहज प्रतापी पवन सुत पुनि सुरपति पति दास।
तिनहिं निदरि चल राम पहँ मूढ़ हृदय नहिं त्रास॥
मरसन जान प्रभंजन जाता। कीन्हेसि गमन विभीषण भ्राता॥
ठाढ़ होउ बोलउ सुनु भ्राता। चलेउ जहाँ कृपालु जन त्राता॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई। सन्ध्या करन गयउँ सुनु भाई॥
तेहि ते तुरित चलेउ प्रभु पाहीं। भइ बिलम्ब जनि राम रिसाहीं॥
सत्य वचन कपि निज मन माना। सुनु खगेश भावी बलवाना॥
कपट चतुर गति जानि न जाई। पर मन हरै रहइ गहि धन भाई॥
आयसु पाइ गई सो तहवाँ। रहे फणीश अरु प्रभु दोउ जहवाँ॥
कपि पति जामवन्त नल नीला। बाली सुत सुषेण बल सीला॥
दो० द्विविद मयन्द रु कीश गण गय गवाक्ष कपि वीर।
सहित विभीषण अपर भट सोये सब रणधीर॥

तिनहिं मध्य रावण शशि राहू। एक संग सोवत फणि नाहू॥
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा। अनुज वाम दिशि तेहि पर हाथा॥
प्रभु कर कर पर राजत कैसे। जात रूप पंकज फणि जैसे॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा। तहँ सोये मानहुं दोउ बीरा॥
सुभग शाण जनु धरे बनाई। लक्ष्मण सहस मीप रघुराई॥
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा। देखि राम सुन्दर घनश्यामा॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं। मुनि महेश पूजा मन लावहिं॥
करहिं विविध जप योग विरागी। जपहिं निरन्तर निशिदिन जागी॥
सो प्रभु तेहि देखा भरि लोचन। कृपासिन्धु सेवक भय मोचन॥
बहुविधि हृदय तेहि कीन्ह विचारा। करहुं काज रावण अनुसारा॥
कछु जियमाया कृत गुण आई। कवनी भांति जाहिं दोउ भाई॥
दो० मोहन ते मोहे सकल मंत्रण ते मुख मूँदि।
भयउ अहश्य उठाइ करि प्रभुहि चलेउ लै कूदि॥
इहि विधि गयउ दुहुन लै सोई। नभ मारग प्रकाश अति होई॥
सो प्रकाश जब रावण देखा। किय प्रणाम तेहि वचन विशेखा॥
मन महँ हर्ष करहिं अति भारी। अहिरावण लैगा असुरारी॥
लै निज लोक गयउ पल माहीं। भयउ शोर तब कपि दल माहीं॥
जागे वानर भो हत भारी। देखिय जिमि सरिता बिनु वारी॥
पुनि देखिय जिमि निशि विन इन्दू। भे वानर जिमि उडु बिन चन्दू॥
रवि बिनु दिवस जीव विनु देहा। जिमि देखिय दीपक बिन गेहा॥
एकहि एक लगे तब बूझन। कहाँ गये त्रैलोक्य विभूषन॥
दो० खोजेउ सब मिलि करक तिन्ह नहिं पाये दोउ बीर।
भे व्याकुल सब भालु कपि जिमि जलचर गत नीर॥
सकल कहहिं बहुविधि कह कीन्हा। रघुपति विरह प्राण कत लीन्हा॥
शोक ग्रसित धरि सकहिं न धीरा। कहँ राम लक्ष्मण दोउ बीरा॥

करुणा करहिं कपीश अपारा। बनीबात विधि कहा बिगारा॥
कटक निशाचर सकल संघारी। रहा एक रिपु रावण भारी॥
सोउ न रहत राम शर लागे। भाइउ हम सब परम अभागे॥
कबहुं जो दशशिर अरिरण जीतहिं। उत्तर कवन देब हम सीतहिं॥
असकहि विकल मूर्छि महि परे। लागत बज्र शैल जिमि गिरे।
दशा विभीषण कही न जाई। विगतवत्स जनु धेनु लवाई॥
दो० सहित पवन सुत ऋच्छपति दुख मन भा वड़ि भांति।
खगपति सूझत कतहुं कछु तम अपार तेहि राति॥
पवन तनय पुनि कह सब पाहीं। विस्मय एक होत मन माहीं॥
कोउइक आव विभीषण वेखा। प्रभु के निकट जात हम देखा॥
पूँछत बचन कहेसि अति नीका। कपट न जानिय निश्चर जीका॥
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा। अहिरावण लैगा अवधेशा॥
पन्नगलोक निवासी सोई। मम तनु बेष और नहिं कोई॥
महा बली जानै सब माया। निश्चय तेहि दशशीश पठाया॥
जेहि बलु होइ तहां सोइ जाई। ताहि जीति आनै दोउ भाई॥
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना। तव बल तात सकल जग जाना॥
वेगि सो यत्न विचारहु ताता। कृपा सिन्धु आनहु दोउ भ्राता॥
दो० बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि सुनु मारुत सुत तात।
बिन रघुनायक जन्मधिक पल युग सरिस बिहात॥
यथा तृषित बिनु वारिद वारी। रवि बिनु जलज मीन बिनु वारी॥
भट अश्व शस्त्र रण अनी अनाथा। बन्हि अग्नि धन गात अमाथा॥
दीप अवर्त्ति सकल क्षण भंगी। तिमि हम सब देखिय बजरंगी॥
जिमि सीता सुधि भेषज आनी। तेहि प्रकार आनहु सुख दानी॥
सुनत बचन मारुत सुत बोला। राखहु चित्त थिर कटक अडोला॥
भुवन चारि दश तीनहु लोका। आनहुं प्रभु बल प्रभु तजु शोका॥

अब तुम सजग रहेउ सब भाई। लरेउ काल सन जो चढ़ि आई॥
अस कहि सकुत चले हनुमाना। गर्जत प्रलय पयोधि समाना॥
चलत बाट इक तरु तर अयऊ। गीधिन गीध कहत अस भयऊ॥
दो० नारि गर्भिणी ग्रद्ध कर बोली पति सन बैन।
आनहु आमिष मनुज पिय खाहुं होय जिय चैन॥
तासु वचन सुनि खग अस कहेऊ। अहि रावण रामहिं लै गयेऊ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई। सो आमिष बड़ भागन पाई॥
कवनेउं यतन देब मैं आनी। अस कहि विहँग बाम सन मानी॥
जबहिं पवन सुत अस सुधि पाई। चलेउ तहाँ सुमिरत रघुराई॥
अभय प्लवग पातालहि गयऊ। अहिरावण पुर प्रविशत भयऊ॥
द्वारपार मकरध्वज कीशा। कपि सन डाटि कहत बहु रीशा॥
निदरि जात मोहिं तोहिं डर नाहीं। दीपहिं जिमि न पतंग डराहीं॥
जानेसि मोहिं न मरुत सुत बालक। स्वामि भक्त भंजन मुख कालक॥
सो० सुनत वचन हनुमान बोलत भे विस्मय विवश।
अरे मूढ़ अज्ञान मोर सुत स्वपनेहु नहीं॥
कहत वचन शठ संयुत खोरी। काम विवश कब भइ मति भोरी॥
मम सुत बनसि मूढ़ केहि काजा। इतना कहत तोहिं नहिं लाजा॥
केहि प्रकार तुव मम सुत भयऊ। निज उत्पति मोसन न किन कहेऊ॥
सुनत कहहि मकरध्वज बचना। किहेउ दाह रावण पुर रचना॥
जब आयउ चलि उदधि समीपा। बहेउ स्वेद तब तन कपि दीपा॥
सो प्रस्वेद सागर महँ गयऊ। पियउ मीन तेहि तें मैं भयऊ॥
यहि प्रकार मैं तव सुत ताता। गोबहु नहिं निज पिता न माता॥
अहिरावण सेवा मैं करहूं। राखेहु द्वार न कबहूं टरहूं॥
दो० सत्य वचन हनुमान कहि पुनि पूछी सब बात।
लावा लक्ष्मण राम कहँ कह करत सो तात॥

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊँ। जान चहऊं मैं तव प्रभु ठाऊं ॥
यह वृतान्त असजानहु ताता। यह मैं अवण सुनेउं कछु बाता॥
सीतापति अरु फणिपति साथा। सो लै आयउ निशिचर नाथा ॥
करत होम तेहि कारण आजू। देविहि बलि देई नृप राजू॥
जो कछु निज श्रवणन सुनि पायउं। तात सकल सो तुमहिं सुनायउं॥
निज प्रभु काज लागि दुख सहेऊं। तुम सन सत्य बचन मैं कहेऊं॥
जान कहहु तुम जानन देऊं। प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊं॥
सुनि अस पेलि चलेउ हनुमाना। भयउ क्रोध मकरध्वज जाना॥
दो॰ तेहि मुष्टिक कपि कहं हनेउ पुनि मारेउ कपि ताहि।
हनहिं परस्पर एकइक बल समान घटि नाहि ॥
एकहि एक सकहि नहिं पारी। पिता पुत्र दोऊ भट भारी॥
सुतहि लूम सन बाँधि भवानी। चलेउ बात सुत बिलंब न आनी॥
धरि लघु रूप होम गृह देखा। जीव सजीव परे नहिं लेखा॥
तहँ देवी कर मण्डप रहई। शोणित घट बहु को कहि सकई॥
विविध भांति मेवा पकवाना। धरे आनि देवी अस्थाना॥
मालिनि तहं प्रसून ले आई। सुमन मध्य प्रविशेउ कपि राई॥
सुमनहु ते करि अति हलुकाई। लेत पानि जेहि जानि न जाई॥
जब देविहि सो पुष्प चढ़ायउ। विकट रूप तब कपि दिखरायउ॥
दो॰ छुवत चरण देवी तुरत धरणी रही समाइ ।
मुख बगारि ठाढ़े भये कपि छबि लखत डराइ ॥
देवी प्रकट समुझि खल भारी। करहिं विचार हृदय अति भारी॥
कहहिं कि देव प्रकट भइ आजू। बड़ भागी भा निशिचर राजू॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करही। जो चढ़ाव सो कपि मुख परही ॥
जो जहँ रही वस्तु समुदाई। बची न कछु सकल कपि खाई॥
कपि खिलारि कौतुक विस्तारा। भा चह निशिचर कुल संहारा॥

अहिरावण उर भा सुख कैसे। चढ़े कांध पर बलि पशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना। लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना ॥
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी। निशिचर बहु आयुध धरि पानी ॥
कोउ गदा कोऊ धनु बाना। शक्ति शूल धरि कोउ कृपाना ॥

दो० तोमर मुद्गर परशु असि पाश परिघ अरु बेत।
शूल भुशुण्डी पट्टि परशु देखत बिसरत चेत ॥

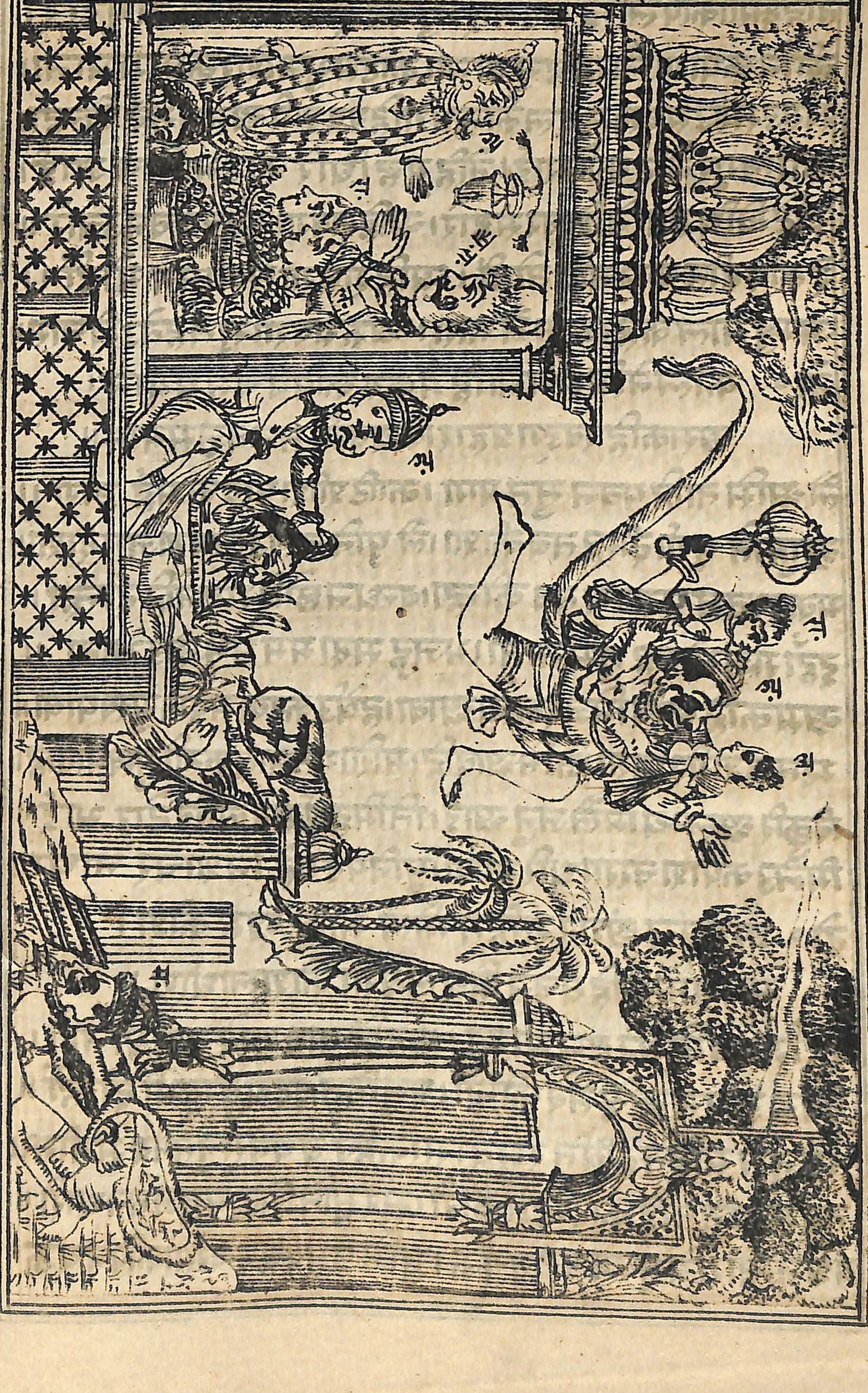
मायाबल ते सकल विचक्षण। अति विकार मय मूढ़ कुलक्षण।
इहि विधि सकल वीर तहँ रहहीं। अहिरावण आज्ञा दृढ़ गहहीं ॥
आयसु पाय खड्ग तिन काढ़े। मारन कहँ प्रभु पर भे ठाढ़े ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू। भारि भयद राउ बिलँब अरु करहू ॥
पुनि अस वचन मूढ़ मति कहहीं। सुमिरहु जो तुम्हरे हित अहहीं ॥
नाहिं त काल आय नियराना। निशा स्वप्न सम दोउ जन प्राना ॥
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी। सकुच लगे सोक हत भवानी ॥

दो० फ सापोते चितवत राम तन राम चितव अहिराज।
प्रभु कर कौतुक कहिय किमि सुनौ दशा खग राज ॥

विहँसि कीन्ह प्रभु हृदय विचारा। जपै सकल जग नाम हमारा ॥
जाना देवि रूप हनुमाना। विहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
काल कौर तुम सुमिरहु रक्षक। भई तुम्हार देवि तुम भक्षक ॥
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ। दानव समान कपि गर्जत भयऊ ॥
निशिचर सकल त्रसित भे भारी। कहहिं वचन मम हृदय विचारी ॥
अहिरावण भल कीन्ह न काजू। आने कपट भेष सुर राजू ॥
तेहि ते देवि क्रुद्ध कृत आजू। अब भा सब कर मरण समाजू ॥
संभ्रम वश सब निशचर भारी। बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी ॥

दो० प्रकट रूप करि पवन सुत अट्टहास गम्भीर।
अति भय भासित रजनिचर सुनहु उमा मतिधीर ॥

अहिरावणकरि राम लक्ष्मण का पाताल में हरि जाना और हनुमान जी को पाताल में जाकर मक
रध्वज को युद्ध में पराक्त करि अहिरावण को मारि श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण जी को ले आना



डगमगान निशिचर अभिमानी। मारुतवेग यथा नदि पानी ।।
तेहि क्षण कपि लीन्हे दोउ भाई। धुनत तूल निशिचर समुदाई।
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना। काटत भुज शिर कृषी समाना।
खण्ड खण्ड सब खल दल कीन्हा। गहि पद डारि अनल महँ दीन्हा।
करि लंगूर कोट कपिराई। तेहि महँ घिरि कोउ भागि न जाई।
इहि विधि सब निशिचर संहारे। अहिरावण लखि बचन उचारे ।।
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं। अहि रावण तैं जानन मोहीं ।।
जम्बु माल कहँ जिमि तैं मारा। अरु रावण सुत हतेउ विचारा।।
दो० कालनेमि सम नाहिं मैं करु कपि बचन प्रमान।
असकहि खड्ग प्रहार किय कपि तन बज्र समान।।
लै असि ताहि पवन सुत मारा। काटि शीश पावक महँ डारा ।।
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा। लै पुनि चलेउ लषण जगदीशा।।
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा। बन्धन छोरि राज तेहि दीन्हा ।।
इहाँ राज भोगहु तुम ताता। भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता ।।
अस कहि कपि निजदल सो आवा। हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा।।
म्रतक शरीर प्राण जिमि आवहि। मणि गत पाय फणी सुख पावहि।।
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई। तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई ।।
मिलेउ कपीश चरण धरि माथा। पुनि पद गहे निशाचर नाथा।।
दो० जामवन्त अंगद सहित मिले भालु अरु कीश।
सनमाने कहि वचन प्रिय लषण कोशलाधीश ।।
बहुरि सबहि भेंटे हनुमाना। कहहिं तात राखे तुम प्राना ।।
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं। प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं।।
अनुज सहित हर्षित रघुबीरा। कहेउ वचन सुनु तनय समीरा।।
तव समान नहिं कोउ हितकारी। सुर मुनि सिद्ध मनुज तनधारी ।।
यश तुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ। सुनि प्रभु वचन चरण कपि नयऊ।

नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे। तरणी चलत अगम जल देखे
तैसे सब प्रताप तव नाथा। सुनि अस मिले कपिहि रघुनाथा
कटक सहित हर्षे दोउ भाई। तेहि अवसर सुख किमि कहि जाई
छं॰ कहि जाय सुख किमि तेहि समय कर सुनहु गिरिजा चित धरे
रघुवीर रुख अवलोकि हर्षित आरती सुरगण करे ।
अति प्रेम सों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन अस कहा
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ॥
दो॰ करि बहु विधि हरि आरती वाणी सत्य सुनाय
राम चरण अनुरागेउ अमर सुमन झरि लाय।
देव निडर प्रभु गुणगण गावहिं। आरत हर कहँ विनय सुनावहिं
विबुध विनय रघुपति सुनि काना। कह प्रभु सत्य सिंधु भगवाना
चतुरानन वर दीन्ह अपेला। तेहि कारण यह बाढ़्यो खेला।
नाहि त लघण एक पल माहीं। राखत यातुधान कुल नाहीं
अजहुं होइ रण कौतुक भारी। निरखहु तुम सब शोच विसारी
अब जो रहेउ निशाचर शेषा। भट महँ जासु भुजा कर रेखा।
तेरण महि महँ हतहुं प्रचारी। बिनु श्रम सब सों कहत खरारी
शंभु कृपा अब संशय नाहीं। सुनि सुर अति हर्षे मन माहीं
दो॰ सत्य वचन सुनि राम के आनन्दित सुर यूह ।
चले कहत जय जय ति प्रभु वर्षे सुमन समूह ॥
यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा। खगपति राम कृपा मैं गावा
अब हिय हरषि सुनहु द्विजराई। मानस कहउं सुमिरि रघुराई
यज्ञवल्क्य पद वन्दि सप्रीती। भरद्वाज बोले शुचि नीती ।
यह चरित्र अति रुचिर सुहावा। सुनि मम नाथ परम सुख पावा
अहिरावण वधान्त भगवाना। चरित किये सो करहु बखाना
सुनि मुनि विनय अपय पुलकाई। बोले हृदय सुमिरि गिरिराई

प्रश्न तुम्हार तात श्रुति पावन। सहज सुभग सज्जन मन भावन
मानस हरि चरित्र सुठि नीका। सुनत करत जो कोउ मन फीका
दो० सोई जग वंचक सुनहु तेहि मानस न सुहाइ ।
भवसागर महँ भ्रमत सो अमित कल्प चलि जाइ
मानस सुनत न मनहिं अघाहीं। तासम धन्य अवर कोउ नाहीं
धन्य धन्य तुम सम कोउ आना। ललित चरित अति सुनहु सुजाना
राम लषण दल सहित विराजे। जयति राम कहि कपि गण गाजे
राम सेन सुखमा अधिकाई। निगमागम जानेउ बुध भाई।
उहाँ दशानन सब सुधि पाई। दूत सँदेश दीन्ह सब जाई।
अहिरावण कर वध सुनि काना। भयउ तेज हत अति दुख माना
वचन वज्र सम लागेउ ताही। संभ्रम मूर्च्छि परेउ महि माही
कटे पंख जिमि विहँग विहाला। रंक चीर गत निशि हिम काला
सुख सुखान लोचन जल बहई। वचन न आव शीश धुनि रहई।
दो० मय तनया तब आय पुनि बहु प्रकार समुझाइ
मान न मूरख काल वश परम क्रोध कहँ पाइ ।
नारि वचन सुनि तेहि रिसि बाढ़ी। उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी।
तेहि अवसर मंत्री इक आवा। करि आदर दशमुख बैठावा
सिन्धुर नाद नाम बलवाना। वृद्ध ज्ञान मय परम सुजाना
सदा बिभीषण कर संग उयऊ। कबहुं दशमुख सभा न गयऊ
आवा सो भल अवसर पाई। कहेसि नीति रावणहिं बुझाई
ज्ञान कथा दशमुख न सुहानी। तब अहिराइ बात कह आनी
करिवर नाद हृदय अस गुनेऊ। प्रभु दुहु ताग हृदय पट बुनेऊ
अब यहि कहौं सो सहज उपाई। जेहि यहि मूल समूल नशाई
दो० यह विचारि बोले सचिव सुनहु दनुज कुल राउ।
धीर धरहु संशय विगत कहहुं सो करिय उपाउ।

असादिकनि सुतन बल दूना। कस सुरारि मानहु मन ऊना
सचिव वचन सुनि दशमुख कहई। अब हमरे कुलको भट अहई
अपने मन महँ करहु विचारा। हैं नारान्तक तनय तुम्हारा।
मूल अभुक्त माहिं भा सोई। दियो बहाइ मरा नहिं सोई।
शम्भु प्रसाद ताहि कछु भयऊ। पुर विहवाबल नृप ता स्यऊ।
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ। राजा प्रजा भेद नहिं काऊ।
दूत पठाइ बुलावहु ताही। जीतिहि सो रिपु रण महि माही।
दनुज अधीश चतुर चर पठवो। धरहु धीर चित चिन्ता घटवो
दो० तासु मंत्र सुनि दश वदन हृदय प्रमोद अमान।
धूमकेतु कहँ बोलि ढिग समझायउ सनमान।
धूमकेतु तुम परम सयाना। लै मम पाती करहु पयाना
बसत जहाँ नारान्तक राजा। तहाँ न तात अवर कर काजा
अवसर पाइ हेतु समुझाई। सपदि ताहि लै आनो भाई।
आयसु पाइ चार तहँ गवना। यह सुनि विहँसि कह्यो अहिदवना
काक नाथ यह गाथ सुहाई। मो सन तात कहहु समुझाई
नारान्तक उतपत्ति यथा विधि। पुर विहवल गा कवनी सिधि
सुमिरि काक पति उर अवधेशा। मन प्रसन्न कर कह काकेशा
अति सुन्दर खचि यह सम्वादू। चित थिर करि सुनिये उरगादू
दो० नख चौगुण वसु ऊन तहँ सम अकाश मिलाइ
इतने निशिचर एक दिन भे रावण पुर आइ।
पुर महँ उपजे खल इक साथा। तब सुनि हर्षा निशि वर नाथा
निज गुरु बोलि चरण शिर नाई। बूझा सुदिन सो कलश धराई
भृगुनन्दन तब तेहि सन कहेऊ। आज बाल सब मूलन भयऊ
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं। भये आजु जे तब पुर माहीं
भे सुत सब निज निज पितु घाती। मुख देखत सुनु सुर आराती

घरणखेधन सहित विनाशा। होइ अवशि नहिं उवरन आशा
शुक्र वचन सुनि डरे निशाचर। कहु करिये अति वाद परस्पर
निश्चय कीन्ह असच शिशु आजू। सौंपिय सिन्धुहिं अवर न काजू
दो॰ सपदि करहु सब काज यह लावहु बाल बटोर ।
राखे होइ हानि अति यह दशवदन बहोर ॥
सेवक दश मुख आयसु पाई। धाये तुरित चरण शिर नाई
रावण आयसु नगर पुकारी। सुनहु सकल पुर नर अरु नारी
आजु अभुक्त मूल भव बालक। डारहु सागर सब कुल घालक
बोरे सबनि बाल इक ठाईं। भावी वश मधु माखी नाईं।
पाय अधार वृक्ष बट बोरा। पावन लगे क्षीर चहुँ ओरा
पीवत क्षीर अघ्ध भरि राती। पुष्ट भये खल निश्चर जाती
पुनि सब एक संग तहँ जाई। सुरसरि संगम भाजेहि ठाईं।
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा। सबनि विलोकि मुदित शिर नावा
छं॰ शिर नाइ मुदित विलोकि शिव मन्दिर सुहावन पावनं
कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठि चले सुनु अहि दावनं
रावण पुरी तें दिशा प्राची कोश शत रस चलि गये ।
बैठे जलधि महँ पाइ थल वर शम्भु चरणन चित दये ।
दो॰ जानत नहिं उतपत्ति निज मन महँ करत विचार
गे तेहि ढिग जा कार विदित रवि तें छठवीं बार ।
हरि अरि गुरु निज शिष्यन चीन्हा। करत प्रणाम आशिवा दीन्हा
कहि निज नाम सबनि सनुभावा। कुलगुरु जाना विनय सुनावा
निज उतपति बूझी शिर नाई। भृगु नन्दन सो सकल सुनाई
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने। लखि रुख भृगु नन्दन सनमाने
करा प्रतीव मंत्र गुरु दीन्हा। शिक्षा पाइ गमन तिन्ह कीन्हा
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी। भे विरंचि पद सब अनुरागी

निराहार बैठे इक आसन। वर्ष सहस तप किय उरगासन
स्वास धार शत वर्ष हज़ारा। रहे ऊर्ध्व मुख बिना अहारा
दो॰ एक पाद पुहमी दये अपर अंग अनयास।
सकल पुष्ट तन मन हरष स्वपनेहु भूख न प्यास।
तप अति उग्र विचारि विधाता। तिन ढिग गमने सुख मुसकाता
हंसारूढ कमण्डलु हाथे। श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे।
आनन चारि नयन वसु नीके। चारिउ भाल भस्म शुभ टीके।
उपमा मय प्रभु सब जग ऐना। भाखेउ दया सदन वर वयना
माँगहु वर जो सब मन भावा। सुनेउ सबनि विधि पद शिर नावा
नाथ चहत हम यह वरदाना। हमहिं न कोउ जीतै मयदाना
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी। आन पाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी
हरि सुत है तुम्हार गुरु भाई। तेहि सन किहेउ न कबहुं लराई
दो॰ जो तेहि सन करिहौ समर मरिहौ वचन प्रमाण।
एकहि कह वरदान यह दै कह कृपानिधान॥
दियउ नराम्तक कहँ वरदाना। रहे अपर जे धरि उर ध्याना।
तिन्ह सन वर मांगहि विधि कहेऊ। सुनत प्रमोद सब निउर लहेऊ
सुनि विधि गिरा सबनि कह स्वामी। देहु एक वर अन्तरयामी।
देवासुर संग्रामहिं माहा। जीतहिं हम यह वर सुर नाहा।
अस कहि दनुज रहे शिर नाई। तिन्ह सन कहेउ विरंचि बुझाई
तुम अजीत सब सन सब भाँती। वानर भालु त्यागि दुइ जाती।
यहि विधि सब कहँ दै वरदाना। ब्रह्मलोक गे ब्रह्म सुजाना
विधि तें लहि वर तिन सुख बाढ़ा। लागे करन बहुरि तप गाढ़ा
दो॰ गिरा गिरीश समेत सब जपहिं निरन्तर नाम।
जोरि युगुल कर एक पद निशिदिन आठों याम
बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई। क्षुधा तृषा निद्रा विसराई

गुण सहस्र संवत सब ऐसे। गये बीति प्रथमहिं तप जैसे
सब निशीश पुनि अवनी दीन्हा। उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा
जोरे कर निरोध कर श्वासा। जपहिं मंत्र शंकर वर आशा
मुनिगण तिन कर साधन देखी। मन महँ मानत सकुच विशेषी
हरि इच्छा बल हृदय विचारी। निरखि चले मुनि जपत पुरारी।
अयुत अब्द बीते खगनायक। भे प्रसन्न शिव जन सुखदायक।
चढ़े वरद हिम सुता समेता। आये तिन्ह तट कृपा निकेता।
दो॰ बोले तिनहिं प्रशंसि शिव माँगहु वर मन भाव।
नारान्तक करि दण्डवत बोला सुनु सुरराव॥
मैं तप किहेउं दरश तव लागी। नाथ दीन जन चित अनुरागी
अब माँगत आवत मोहिं लाजा। ठाढ़ रहा कहि निशिचर राजा
माँगु सकुच तजि अस हर कहेऊ। नारान्तक तब माँगत भयऊ।
मोहिं विभव अस देहु गुसाईं। भूप प्रजा नहिं परहुं लखाईं
पुर अनयास बसहिं मम नाथा। यह कहि रहा जोरि युग हाथा
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा। गवने भवन सहित वागीशा।
शिव प्रसाद नारान्तक पावा। अन्तरिक्ष पुर सपदि बसावा
पुर विचित्र बल की रुचिराई। कहत कछू इक तुम सन गाई
दो॰ अतनु रवि दूने कोटि सों भवन बसे इक ठौर।
जातरूपमय नग जटित अति शोभित चहुँ ओर
योजन ढाई शत चकलाई। चौंसठ कोस उतंग सुहाई।
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा। विस्मय विश्वकर्म मन घेरा
चारि दुवार कुलिश पट रूरे। गढ़ भीतर चौदह निधि पूरे।
वणिक पदुम धन तुच्छ बखाना। बन उपवन सरिता सुर नाना
बसत प्रजा पुर सघन अपारा। नारान्तक गढ़ मध्य सँवारा।
षोड़श कोश कोट चहुँ ओरा। मणि माणिक लागे नहिं थोरा

हय गय रथ खच्चर समुदाई। कहि न जाय खग म्रग बिपुलाई॥
कोटि बहत्तर एकै साथा। विद्या पढ़न लगे खग नाथा॥
दो॰ हरि प्रेरित तेहि काल महँ दधिबल पहुँचा आइ।
पुर बिलवावल निरखि सो कछु दिन रहा लुभाइ॥
भावी वश निशिचर सँग कीशा। वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा॥
गुरु इक बार कहेउ रिसियाई। हतिहैं सित आपन गुरु भाई॥
बिनु अघ सुनि दधिबल गुरु शापा। बिदा कीन्ह गवना करि दापा॥
मारग मिले देवऋषि तेही। गहे सुकराठ सुवन पग नेही॥
लखि अशीष दै बूझा तेही। दधिबल कथन काज गे जेही॥
तब नारान्तक पुर प्रभुताई। दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई॥
सुनी निशाचर सम्पति भारी। रहे ब्रह्म सुत हृदय बिचारी॥
स्राक देवऋषि कीन्ह गुमाना। बार बार सुमिरे भगवाना॥
दो॰ दधिबल तें नारद कहेउ सुनहु तात चित लाइ।
तनु धरि जे हरि भक्ति नहिं जन्म वादि जग जाइ॥
यह बिचारि भजु रामहिं ताता। उपजेउ सुनत ज्ञान मुनि घाता॥
ऋषि पद परसि आशिषा पाई। कपिपति सुत गवनेउ हरषाई॥
सपदि कीश तब पहुँचा जहँवाँ। पयनिधि मध्य रुचिर गिरि तहँवाँ॥
धवरा गिरि तेहि नाम सुहावा। सुभग देखि कपिवर मन भावा॥
गौरि गिरीश सुमिरि गरा शाई। कीन्ह निवास बैठ हरषाई॥
नारद ताहि देइ उपदेशा। गये बिरंचि धाम खग ईशा॥
उत दश सुख सुत विद्या पाई। जहाँ तहाँ की बिबिध लराई॥
बिन्दु नाम इक निशिचर आहा। सो खल रहा बितल थल माहा॥
सो॰ अति रणधीर जुझार चढ़े शक्र पर बलि बिपुल।
कीन्हेउ समर अपार अब्द एक श्रुति सन्त कहा॥
सप्त कोटि निशिचर सँग ताके। असित मेरु सम खल भट बाके॥

सुनासीर कोपेउ इक बारा। सब कहँ समर मध्य संहारा
भाजि विन्दु केवल गृह गयऊ। तासु नारि निशिचर सुख दयऊ
सब निशि भोग करा खल पापी। उपजे बहु बालक परतापी।
सप्त कोटि सुत नाना नामा। उदर वक्र सकल बल धामा।
कोटि बहत्तर तनया जाके। लाजहिं मृगलोचनि लखि ताके
तिन्ह महँ विन्दुमती इक सुन्दरि। नभ चारिणि रति रूप निरंतरि
निरखि विन्दु निज मन अनुमाना। नहिं नारान्तक सम कोउ आना
दो॰ यह विचारि चित विन्दु तब नारान्तकहि बुलाइ।
विन्दुमती आदिक सुता सुन्दर साज सजाइ॥
सकल सुता इक संग बिवाही। यथायोग जेहि कहँ जस चाही
नारान्तक सब सेन समेता। करि विवाह फिरि गयउ निकेता
पुर विह्वावल कीन्ह बसेरा। प्रजा सहित सुख करत घनेरा।
जो तिय वह्निय विबुध गृह भाई। सो भावी बश निशिचर पाई।
नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं। तेहि प्रताप निज अमर डेराहीं
विन्दुमती विद्या सम ताता। बुध जन सभा चरित विख्याता।
नारान्तक उतपति मैं गावा। सुनु खगेश पुनि चरित सुहावा।
पुनि पुनि हरि हर पद शिर नाई। गुरु सन सुनेउं सो कहब बुझाई
दो॰ चारन दश मुख को तुरत मग चलि पहुँचो जाइ
ग्रामान्तर योजन युगल ठाढ़ भयउ हरषाइ॥
तेहि मारुत दिशि कानन भारी। परन लेत देखेउ जहँ बारी
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा। बूझेसि ताहि धीर धरि गाढ़ा
कवन रीति यहि पुर महँ भाई। तरु पर चढ़त भूप सुत आई
चार बचन सुनि सो मुसकाना। कवन नगर तुव बसत अयाना
नारान्तक नृप कै पन्न चारी। तेहि कर सेवक मैं लघु चारी।
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा। कछु डरि पुनि निज मारग लीन्हा।

लिये कनक घट सुखमा रूरी। वारि लेन आईं तिय रूरी।
देखि भयउ तेहि संशय भारी। बूझा सत्य कहहु सुकुमारी।
दो॰ तुम्हरे पुर कहँ चेरि नहिं रानी कहहु स्वभाव।
आइउ तुम जल भरन कहँ बोलेउ त्याग दुराव।
दूत वचन सुनि निशिचर चेरी। बोली हँसि करि एकहि बेरी।
नारान्तक रानिन की दासी। हम ताकी दासी विश्वासी
सदा भरें यह सागर पानी। इहँ आवहिं केहि कारण रानी।
कहिहहु अवर काहु अस बाता। पैहहु मार मुष्टिका लाता
अस कहि गवनी ले जल नारी। तिन्ह सँग धूमकेतु मग धारी
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी। निरखे विपुल कूप सर वारी
नाना गज रथ खच्चर घोरा। फिरत विलोकत पुर चहुँ ओरा
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुवारा। तहाँ न चर पावहिं पैसारा।
छं॰ पावत नहिं पैसार चर गति द्वार लगि फिरि आयऊ।
यहि भाँति रावण दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ
मन महँ विसूरत ठाढ़ चोहट मध्य सो जब रहि गयो
निशिचर निकन्दन होन लगि विधि ताहि इक अवसर दयो
सो॰ गवनेउ भूपति द्वार नृत्य करन इक कौतुकी
लीन्ह धरि तेहि भार गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर।
बैठेउ सभा नरान्तक जाई। कोटि बहत्तर संयुत भाई।
व्योम तीनि रस गुण वसु एका। अंक रीति लिखि गुणी विवेका
वन्दी जन नट कौतुक करहीं। प्रति दिन कवि कोविद उचरहीं
रावण दूत सभा सो देखी। मन महँ चकित भयउ विशेषी।
तब चारण मन अस अनुमाना। कोटि बहत्तर रूप न आना
भूषण वसन सु आसन जोहा। देखि सुखद चारण मन मोहा
याम दिवस गत अवसर पावा। नारान्तक कहँ शीश नवावा

दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई। कुशल तासु बूझी हरषाई॥
दो॰ नारान्तक निज कुशल कहि बूझा दशमुख हेतु।
समाचार गढ़ लंक कर बरणेउ दूत सचेतु॥
चरभाषित नारान्तक सुनेऊ। क्षणक माहिं मन कारण गुनेऊ॥
पुनि पत्री निशिचर पति बाँची। मानी चार बात सब साँची॥
उठेउ सभा तें हृदय रिसाई। गा निज भवन शोच सरसाई॥
बिन्दुमती कहं बाँचि सुनाई। पितु पर भीर पत्रिका आई॥
समाचार सुनि कह तेइ नारी। तुम जनि करहु राम सन रारी॥
गहहु चरण प्रिय अवसर जाई। रसन सुफल करि विनय सुनाई॥
माँगि भक्ति वर प्रेम दृढ़ाई। निर्भय राज करहु गृह जाई॥
नारि वचन तेहि मन छिन भावा। तब उठि कोट द्वार चलि आवा॥
दो॰ कहत बजाव निशान घन सजहु सेन चतुरंग।
जन्म भूमि जावा चहहुं पितु चारन के संग॥
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा। लगे निशाचर सजन समाजा॥
अमित बाजि गज उष्ट्र नाना। रथ खच्चर खेचर बहु जाना॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी। निशिचर अनी न जाइ बखानी॥
जे सब संयुत साज सजाई। विविध निशान हने हरषाई॥
कन्त जात निश्चय जिय जानी। बिन्दुमती निज चित अनुमानी॥
राम विरोध न यहि कल्याना। महूं संग अब करहुं पयाना॥
भूषण बसन सुअंग बनाई। कन्त चरण गहि विनय सुनाई॥
सासु श्वसुर दर्शन हित नाथा। हमहूं चलब प्राणपति साथा॥
दो॰ दशमुख सुत सुनि तिय वचन हृदय परम सुख मानि।
कहेउ चलहु सब सखिन पहँ प्रमुदित छाँड़ि गलानि॥
सुनि पति वचन नारि हरषानी। चली संग लै सखी सयानी॥
लै दल नारान्तक पग धारा। अमित सेन को कहि सक पारा॥

बुधजन कहत सुनहु खगराजा। अद्भुत सतावनबाजन बाजा
धूमकेतु कहँ डिग सँग लीन्हे। अति आतुर गवना रिस कीन्हे
चलत सगुन भल ताहि न होई। गनइ न मृत्यु विवश शठ सोई
तासु पयान जानि दिगपाला। जिय महँ संशय करत विशाला
कोल कूर्म अहिपति अति डरहीं। पुनि पुनि रामचरण चित धरहीं
समुझि राम बल संशय त्यागी। सुर दिगेश प्रभु पद अनुरागी
दो॰ नारान्तक लंका तुरत दल समेत नियरान ।
दिग योजन दल रहेउ जब सुनु मुनीश सज्ञान॥
इहाँ कृपाल रमेश खरारी। असित जलद सम सेन निहारी।
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतु। सचिव बोलि कह रघुकुल केतू
सखा बिलोकहु दससिर ओरा। गर्जत घन आवत नहिं थोरा
उमा राम सब अन्तरयामी। चरित हेतु बूझा अस स्वामी।
रामवचन सुनि दश मुख भ्राता। कहहँसि गहि प्रभु पद जलजाता
देव देव नहिं दल जल वाहू। अहहिं नरान्तक निशिचर नाहू
विहवावलपुर बसत गुसाँई। पठवा तेहि दशकण्ठ बुलाई
आवत धूम्रकेतु चर संगा। करत कुलाहल नाद उतंगा।
दो॰ तेहि सँग गुरशी अनेक प्रभु गावत हनत निशान
सेन संग चतुरंग खल डोलत विविध दिशान॥
कह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना। विहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना
पाइ राम रुख पवनकुमारा। उठे हर्षि हिय गर्जि प्रचारा।
सहित लषण प्रभु पद शिर नाई। धाये कहि जय जय रघुराई।
बात जात निशिचर समुदाई। देखि सपदि डिग पहुँचे जाई।
कटकटाइ गरजे अति भारी। देखेउ इमि आवत बन चारी
बूझेउ दूतहि निशिचर भ्राता। यह आवत धावत को भ्राता
स्वर्ण शैल विकरार शरीरा। गर्जत प्रलय जलद सम बीरा

तब नारान्तक सन कह दूता । यहै पवन सुत बली अकूता ।
सो० सिन्धु लाँघि लंकहि दहेसि पुनि हति अक्षकुमार
कालनेमि कहँ मारि मग लावा मेरु उपार ॥
पुनि अहिरावण सह परिवारा । पैठि पताल सदल संहारा ।
लै आवा तापस दोउ भाई । आवत अब तव ढिग सोइ भाई ।
यहि कर भुज बल अहै अपारा । सुनि रिसान दशकंठ कुमारा ।
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना । तजन न पाव गहेउ हनुमाना ।
सो शर धनुष तोरि कपि डारा । पुनि रिसाइ उर मुष्टिक मारा ।
परा दशानन सुत महि कैसे । मिश्र रसातल गो गिरि जैसे ।
पवन पूत बल रूप पसारा । कोटिन्ह रथ गहि ता पर डारा ।
रथ सारथी चूर्ण सम भयऊ । विधि वश तेहि कर प्राण न गयऊ ।
दो० एक दण्ड अति विकल खल रह भूतल धुनि माथ
पुनि शठ उठा सँभारि तन धायउ धनु धरि हाथ ॥
छाँड़ेसि अगणित शायक कोपी । सरा इक कीश कटक गा तोपी ।
राम प्रताप प्रभंजन जाया । कर गहि अरि शर तोरि बहाया ।
देखि पवन सुत की प्रभुताई । बरषत सुमन विबुध झरि लाई ।
जय जय पिंग असुर भाषा । सुनि दशकन्ध तनय मन माखा ।
नारान्तक अति हृदय रिसाई । कपि तन पहुँचा आतुर धाई ।
कह खल कीश जो कछु बल धरहू । मो सन मल्ल युद्ध रण करहू ।
गावहिं विबुध तोरि भुज जोरा । निज उर सहहु इक मुष्टिक मोरा ।
लागत ठाढ़ रहै जो बानर । तौ जानहु तव भुज बल आगर ।
सो० हरि सुनि ता कर बात राम दूत रिस रोकि उर ।
अति समीप सुसकयात शठ आकठाढ़ सन्मुख रहेउ ।
तब तेहि कपि कहँ मुष्टिक मारा । भयउ तड़ित सम शब्द अपारा ।
टरा न तहँ ते पग हनुमाना । हृदय न निशिचर नेकु लजाना ।

दुइ मुष्टिक तेहि फेरि चलावा। तब मारुत सुत कोप बढ़ावा।
किलकिलाय लंगूर लपेटा। डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा।
बिकल ताहि करि कपि अति गाजे। भे व्याकुल बहु निशिचर भाजे
कोटिन्ह निशिचर कपि कर गहहीं। रामदूत कर कौतुक कहहीं।
मर्दि मर्दि बहु बारिधि डारे। देखि देव जय जयति पुकारे
एक दण्ड गत निशिचर जागा। बहु बिधि समर करन सो लागा।
छं० लागेउ करन पुनि समर बहु बिधि निज सुभट बहु फेरि कै
खल कोटि कोटि प्रचण्ड शायक काधि हिरदा महँ घेरि कै
रदा रंग रंजित बीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्ज्जही ।
गहि गहि बिपुल दनुजहिं पछारत उर बिदारत तर्जही
दो० सघन बाहिनी जलज बन जिमि करि कतउत थाल ।
रिपुन हनत तिमि बायु सुत बिनु श्रम प्रमुदित गात
करत समर आयउ तेहि ठामा। जहँ नित होत रहा संग्रामा
लरत अकेल तहाँ हनुमाना। धायउ बालि तनय बलवाना।
ता पाछे कपि चमू अपारा। चले कहत जय कथा अपारा।
लीन्हे गिरि बर रुज पाषाना। जहँ तहँ करन लगे मैदाना।
अंगद आइ पवन सुत पाँहा। कहि जय रघुबर भुज छिन माहा
दोउ भट इक सँग करि जूहा। हतन लगे अरि सेन समूहा
देखत भालु कीश कटक भारी। भागि चले निशिचर भय भारी।
देखि अनी निज ग्रसित बहूला। भा अति कुपित दशानन पूता
छं० अति कुपित भा दशमुख सुवन निज भटन शपर दिवाइ कै
फिरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहँ पराइ कै ।
बिधि दीन्ह बिबिध अहार कपि दल खात कसन अघाइ कै
बिनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापस धाइ कै
दो० सुनि नारान्तक मरुरव बच रजनीचर समुदाय।

लागे करन सकोप सब माया कपट कुभाय ॥
माया तिमिर पसार अपारा। अस्त्र शस्त्र बहु भाँति प्रहारा
शक्ति शूल बर बिशिख कराला। डारहिं रुज तरु शैल बिशाला।
गिरत ऋक्ष कपि लागत शायक। उठहिं बहुरि कहि जय रघुनायक
निज दल बिकल बिलोकि खरारी। सत्य सिन्धु इक शर संचारी
रिपु शर काटि तिमिर करि दूरी। प्रभु शर हते निशाचर भूरी।
हरि निषंग महँ पुनि सो तीरा। प्रविशे आइ सुनहु मुनि धीरा
निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा। गहि गिरि तरु कहि जय जगदीशा
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं। दिये डारि गिरि रुज तरु तबहीं।
दो० मरे तमीचर कोटि घट जानि निशा परिवेश।
दल युत अंगद पवन सुत चले जहाँ अवधेश
अंगद हनुमदादि कपि भालू। आये जहँ रघुबीर कृपालू
प्रभुहिं बिलोकि चरण शिर धरे। भे श्रम रहित सकल सुख भरे
अति आदर प्रभु किय सनमाना। सब कहँ बैठन कह भगवाना।
पुनि रजाय ले थलनि सिधाये। छबि बारिधि प्रभु पद शिर नाये
अंगद हनुमत निकट निवासी। राम चरण सुख भा गुण राशी
दोउ भट कर परसत प्रभु पाऊं। देखि सुरन मन भा अति चाऊ
लखहं होत जग कीश स्वरूपा। पद गहि नित्य रहत नर भूपा
हरिन सिहाहिं सुमन झरि लाये। निज निज आश्रम अमर सिधाये
दो० बन्धु सचिव सेना सहित शोभित श्री भगवान।
तुलसिदास ते धन्य नर जो यह ध्यान लुभान।
उत नारान्तक सेन समेता। गयउ जहाँ दश कन्ध निकेता
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई। कुशल बूझि बैठेउ हरषाई।
देखि नरान्तक के मनुसाई। दश मुख शठ सब शोच दुराई
जेहि बिधि हरि लाया जग माता। ताहि आदि करत कत बिख्याता

कुम्भकर्ण घननाद निपाता। कहि बिलखाश्रुहि रावण धाता
पितु मन मलिन नरान्तक देखा। बोला खल उर गर्ब्ब बिशेषा।
तजहु सकल संशय बिबुधारी। करिहहुं प्रात समर अतिभारी
चमू कीश बिनु क्षिति करि ताता। धरिहौं तापस होत प्रभाता
छं० धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार न लाइहौं ।
धरि धरि बिपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं
भुजबल कहहुं निज नहिं बहुत करि रिपुन प्रकट दिखाइहौं
बिनु श्रमहिं तातन को बयर ले तव चरण शिर नाइहौं।
दो० सुनत बीस भुज सुत बचन बार बार उर लाइ ।
लागु करावन नृत्य जड़ गुणी समूह बुलाइ ॥
बिधुमती आदिक रनिवासू। सब चलि गईं मन्दोदरि पासू।
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी। मय तनुजा करि आदर भारी
बूझि परस्पर रावण घरनी। प्रभु यश ताहि सुनायउ बरनी
देइ पतोहुन बास सुहावन। आपु लगी सुमिरण जग पावन
शयन करहु कह सुतहि निशाचर। उठा आपु मतिमन्द अघाकर
गा तेहि भवन कुटिल दशग्रीवा। जहं मय तनया सद्गुण सींवा
आयउ पिय मन्दोदरि जानी। पाइ सुअवसर गहि पग पानी
तिय सुनाय अति कोमल बयना। लगी कहन जल भरि युग नैना
दो० नाथ निगम आगम बिबुध कहत प्रकट यह बात
बुध जन सो जो आधेहू राखै सरबस जात ॥
तजहि न हठ शठ सरबस खोवै। यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै
सो बिचारु प्रभु परम सुजाना। मोर बचन सुनि कीजिय काना
अजहुं करहु हठ दूरि गुसाँई। अनुज भाँति मिलिये प्रभु जाई
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई। पुनि तुम रावनहु पुत्र लखाई
प्रभु पद गहि माँगहु वर एहू। पद पंकज रति बिमल सनेहू

प्रियावचन तेहि विषसम लागा। सो गृह तजि गा अनत अभागा।
निजनारी कहि बहु अभिमानी। कीन्ह शयन निशि गइ बड़ि जानी।
सो रजनी गत भयउ प्रभाता। जागे रघुवर भय जग त्राता।
दो० अस कीश जगदीश पद शीश नाइ रख पाइ।
धरि गिरि तरु धावत भयउ कहि जय जय रघुराइ।
कपि घेरा गढ़ सुनि यह काना। रावण सुत लखि निपट रिसाना।
साजि विपुल दल हनत निशाना। गढ़ ते चला निकर बलवाना।
चारि द्वार करि कठिन लराई। विशिख बरषि कपि दल बिचलाई।
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे। सलभ समूह शैल ते जैसे।
मारुतसुत देखा कपि भाजे। कटकटाइ मति विक्रम गाजे।
कपि लंगूर चहुँ ओर भवाई। रोके खल निशिचर समुदाई।
पटकत महि निशिचर फल बेलू। केतिन देत विदिशि दिश मेलू।
इक दिशि इमि हरि कृत संग्रामा। दिग दूजी अंगद बल धामा।
दो० निशिचर सेना उदधि सम मन्दर इव दोउ कीश।
मथत देखि जय रतन लगि हँसे विबुध सुर ईश॥
पद्धति-
काछंद इमि निरखि पराक्रम करि कीश। भा क्रोध परम रजनी चरीश
करि प्रलय घन्द ते घोर शोर। धर कुधर शस्त्र धाये कठोर।
इक बार मार कर शर समूह। किय विकल अस्त्र हनि कीश जूह
कोउ देखत कपिपति चित उचाट। कोउ सुरति करत निज धाम बाट
बहु चले कन्दरा शैल ताक। कोउ दबकत इत उत ताक झाँक
कोउ देत दुहाई लखण राम। कोउ कहत विधाता भयो बाम।
यहि बीच नरान्तक कर प्रधान। तेहि धाय गहेउ युवराज पानि
बहु भट लपटाने अंग संग। सब संग उठेउ अंगद उतंग।
नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत। रवि मण्डल पहुँचे बालिपूत
अंग झारे जारत पनि आँच। पुनि आयउ जहँ संग्राम राच

यह निरखि अपर यूथप पिशाच, तुरत आइ गयउ सेना समाच ॥
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड उर लागि आनि अति कठिन दंड ॥
महि परेउ तनय तारा तुरन्त, लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचण्ड, होइ गिरेउ यूथपति सहस खंड ॥
सब चरित सुनेउ रविकुल दिनेश, कह जाहु वेगि अहिराज शेष ॥
चले नाइ माथ शंकर मनाइ, धनु बाँधि बाण विकराल लाइ ॥
उर अंगद कर धरि सुमिरि राम, अस विगत भय उबल अतुलधाम ॥

दो॰ विगत भई मूर्छा सुरति बहुरि चलेउ युवराज ।
लक्ष्मण चाप टकोर सुनि फिरा कोश दल साज ॥

सुनत टंकोर शरासन निशिचर। बधिर भये नहिं सुनत शब्द पर
वर्षा विशिष कीन्ह अहिनाथा। काटे पाणि पाँय बहु माथा ॥
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे। धुनकल तूल रोम गण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रण धरणी। यथा अकाल क्षुधारत करणी
इत कपि भालु विजय अभिलाषे। उतहिं निशाचर जय हित राखे
मारुत सुत अंगद बल बीरा। समर बाँकुरे अति रण धीरा ॥
सिंह नाद कीन्हा हरि दोऊ। भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं। प्रमुदित भट कायर हिय डरहीं।

छं॰ कायर डरहिं प्रमुदित सुभट सब लरत हारि न मानहीं ।
जहँ तहँ गिरहिं पुनि उठि फिरहिं दुहुँ ओर जैयति बखानहीं ॥
कौतक बिलोकत विबुध गण विस्मय हरष उर आनहीं।
रघुबीर सेननि पर सुमन झरि लाय विनती ठानहीं ॥

दो॰ अति अद्भुत करणी करहिं उरग कीश बल भूरि।
कर पद बिनु कर रैनिचर तिन सुख डारहिं धूरि ॥

बहुतनि के शिर तोरि चलावहिं। निज भुजबल रवणहिं जनावहिं
गये याम युग दिवस भवानी। नारान्तक अध सेन सिरानी ॥

मरे निशाचर अमित निहारी। रावण सुवन कोप करि भारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई। भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई ॥
क्षण महँ कोरमूर्छित कपि सैना। पुनि शठ गा जहँ राजिव नैना ॥
गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई। कहन लगा कटु वचन रिसाई ॥
होसि न जग निशिचर कुलद्रोही। वन्धु वैर लगि मारहुं तोही ॥
प्रभु कहँ कटुक कहत सुनि काना। कोपेउ जामवंत बलवाना ॥
दो॰ शूल एक तेहि छाँड़ेहु सो कर गहि ऋक्षेश।
धाय तासु उर मारेऊ भाषि जयति अवधेश॥
लागत शूल सो मूर्छित भयऊ। जामवन्त तब कर गहि लयऊ॥
बार अमित महि माहँ पछारा। बाँधि गाड़ि वारू महँ डारा ॥
जागे सकल बली सुख अच्छा। लगे करन रण निज निज इच्छा
जामवन्त यह हृदय विचारा। मरै नहीं यह खल मम मारा ॥
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी। मुष्टि चारि उर माहिं प्रचारी॥
गहि पद संचारी गढ़ माहा। सपदि परा जहँ निशिचर नाहा ॥
दशो बदन हाहा करि धावा। नारान्तक हि हृदय तब लावा॥
निरखि निशाचर गण समुदाई। गढ़ कहँ गे सब संभ्रम धाई॥
दो॰ कपि गण सभय प्रदोष लखि राम चरण धरि माथ।
ठाढ़ भये सब तन वितय दया दृष्टि रघुनाथ ॥
बिनु श्रम कीन्ह सबनि जगदीशा। गये सुवास भालु अरु कीशा॥
रुचिरासन आसीन रमेशा। ढिग बीरासन उरग नरेशा ॥
अंगद मारुत सुत प्रभु चरणा। लाग पलोटन सुनहु अपरणा॥
पुण्य पुंज अरु भाग्य निधाना। जिन पर नित प्रसन्न भगवाना॥
वहाँ सुरारि सुतहि पोढ़ाई। विलखहिं तासु नारि समुदाई ॥
होत प्रभात नरान्तक जागा। पितु विलोकि लज्जा रस पागा ॥
रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा। नभ पथ समर पोहमी आवा ॥

कीश कटक यह मर्म न जाना। होइ लोप कीन्हेसि भरि बाना ॥
दो० धावहिं व्योमहिं भालु कपि ताहि न हेरैं नैन।
धायल होइ होइ गिरहिं महि भाषत आरत बैन॥
बारा एक शत तडित समाना। छांड़ेसि शठ जहँ कृपा निधाना ॥
लागत विपुल कीश मुरझाने। बहुतक कायर देखि पराने ॥
भागि सेन ढिग एक अयाना। टेरे फिरहिं न ; सुन हरि याना॥
मारुत सुत अंगद सुग्रीवा। कुमुद मयन्द द्विविद बलसीवा॥
ये सब वीर हाँक दै धावहिं। नभ पथ ताहि न खोजत पावहिं॥
तब सब वीर एक मत ठाना। लै गिरि तरु किय लंक पयाना ॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा। बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥
करते डारि देहिं पाषाना। बहुत दनुज भे चूर्ण समाना ॥
तो० छं० भे चूर्ण निशिचर यूथ। गे निशिचरी भय मूथ॥
मुखवीन आरत दीन्ह। भइ भवन रावण लीन्ह॥
सुनि बोलि भट दशभाल। कह खाहु कीश कराल॥
करि यत्न भागें कीश। अस कहेउ वच दशशीश॥
मसलहु आयसु वीर। तुम हो सकल रणधीर॥
सो शूर मोकहँ प्यार। जो खाइ मर्कट धार ॥
जो जाइ आयसु छोर। सोइ जानिहौं रिपु मोर॥
दो० एतु सेतु गुण रयन चर एक एक भुज जोरि।
रावन पावँन राखि शिर धाये करि रव घोरि॥
देखि लँगूर सकल हरषाने। मधु माखी सम सब लपटाने ॥
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा। डारे सबनि पटकि करि दापा ॥
काँचे घट सम दनुज बिदारी। जयति राम जय लषण खरारी ॥
सुभट ढहनि पुनि फेरि लँगूरा। भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा ॥
अति विशाल गहि कंचन खंभा। जिमि प्रयास बिनु करु आरंभा॥

लिहहन अपक्क घट जूहा। कपि तिमि तोरत दनुज समूहा ॥
पुनि विचार करि हरि घट धाये। निशिचर निकर मध्य चलि आये
करिकोटिन बिनु नासा काना। कर पद हीन कीन्ह रिपु नाना ॥
छं० रिपु कीन्ह कर पद हीन आगरि आत दीन वचन पुकारहीं।
गढ़ तें निकरि निशिचर अखिल खल विपिन बाट सिधारहीं ॥
पीपर परग सम धरणि लंका कम्प घर कीश निकरा।
तोरि कपाट निपाटि अरि तिय केश खैंचत गहि करा ॥
दो० भयउ कुलाहल लंक अति नारान्तक सुनि कान।
नभ ले स्यंदन सहित शठ प्रकटि परम रिसियान ॥
निरखि दशा निज नारिन केरी। कहन लागु कटु गिरा घनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई। लरत तियन संग लाज न आई ॥
अबलन पै बल भट न कराहीं। छोंड़ह तियन लरह मम पाहीं ॥
सुनि मरकट निभयउ सुख भारी। तजी निशाचरि दीन पुकारी ॥
भाजे भवन भय युत गइ नारी। लीन्ह कपिन कर शिला उपारी ॥
शिल प्रहारि हय स्यन्दन भंजा। आयुध तोरि सारथी गंजा ॥
धरि पछारि रावण दृग देखा। कौतुक कीशन कीन्ह विशेखा ॥
लागे पद गहि खलन फिरावन। नाचहिं गाइ राम यश पावन ॥
दो० तोरत तिन तन पटकि महि कहत जयति रघुवीर।
करत युद्ध गत याम युग कीश छोहो रण धीर ॥
अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा। वन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तन देखी। पद धरि शिर सुख लहेउ विशेखी ॥
राम सबन सादर सनमाना। को दयाल रघुवीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना। आयसु पाय भये श्रम हीना ॥
भये विगत श्रम बानर भालू। अनुज सहित मन मुदित कृपालू ॥
सुनहु उमा तानिशि रघुनायक। रावत जन गुण सब गुण दायक ॥

याम तीनि यामिनि गत जबहीं। उत्तनारान्तक जागेउ तबहीं ॥
शोच विवश मींजत दोउ हाथा। लज्जित हृदय निशाचर नाथा ॥
छं॰ लाजि कै रथै सँभारि वाजि साजि रुष्ट पुष्ट।
शंक छाँड़ि शस्त्र मांड़ि गाढ़ वीर संग दुष्ट ॥
भरि दुन्दुभी निशान गान काइ कै त कर्त्त ।
धीर वीर अग्रगौन गाजि गाजि शब्द भर्त्त ॥
जीव आशत्रास नाशबाज मोह छराड छराड।
वंक शूर शंक दूर बीरता सपूर चराड ॥
बाजि नाम शोर घोर पूरि गे दशो दिशान ।
धूरि पूरि मेघ बोध शोधना परो अपान ॥
कूदि कूदि व्योम पंथ जाइ आइ जाइ भूमि।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काटि क्रुद्ध कुद्ध भूमि भूमि॥
सो॰ प्रलय मनहुँ चाहत करन अनी तमीचर चराड।
सुनु खगेश मर्कट विकट जिमि धाये बर बराड ॥
छं॰ निहारि हर्षि कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैल भे।
बजाइ कटकटाइ हूह एक बार कै अभे ॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अस्म शृंग हू ।
मरे निशाचरा निरुराड भुराड शुराड भंग हू ॥
रदी हरी मृगावनी सवार उष्ट्र मराड हू ।
मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज खराड हू॥
हलै धरा बलै बिचारि भार धारि को सकै।
सुनै पुकारि जयति राम शत्रु सेन ही धकै॥
लंगूर शूल से अकाश भीत उच्च औ चट्यो।
गिरे पयोद पौन ते झपेट मेद ते कट्यो ॥
सो॰ शब्द करत अति घोर ; दुमि पहुँचो दल भालु कपि।

आयुध झरि अति जोर प्रेरे लागि घन प्रलय सम॥
सजग होन कपि भालु न पाये। अतिशय निकट तमीचर आये॥
असित निशाचर अति अँधियारी। तापर करहिं शत्रु की मारी॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे। जहँ तहँ एकन एक पुकारे॥
सन्मुख कोउ न करत लड़ाई। कपिन्ह मारि रण भूमि सोवाई॥
गे अनेक भजि सिन्धु समीपा। सेन विकल लखि रघुकुल दीपा॥
सजि शारंग तजा इक बाना। भा प्रकाश दिग तरणि समाना॥
लखि तम विगत भालु कपि हरखे। कटकटाइ धाये रिपु धरखे॥
भिरे एक सन एक प्रचारी। लागे करन कठिन हठ भारी॥
दो॰ शीश शिला तरु करनि धरि काँख न भरि भरि धूरि।
गरज भालु बली बदन धाय धाय नभ दूरि॥
डारहिं गिरि तरु निशिचर शीशा। दधि घट सम फोरहिं भट कीशा॥
चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई। काटहिं कान दशनि रजनाई॥
तोरहिं शूल चाप नाराचा। अरि दल अस्त्र न एको बाचा॥
शस्त्र हीन रिपु सेन पराई। देखि पवन सुत हँसेउ ठठाई॥
बैठि अवनि अति लूम लफाई। अतिउतंग दीरघ चौड़ाई॥
तकित खसे निशाचर कैसे। पक्ष हीन नभ ते खग जैसे॥
गिरत कीश गहि चरण फिरावहिं। पटकि भूमि गाड़हिं बिहँसावहिं
तुम्बुरि सम अगणित भुज तोरत। अगणित रुंड सिन्धु महँ बोरत
दो॰ कोटि बयालिस तमीचर नारान्तक कर भ्रात।
राम कृपा बल हति खलनि कपिन बिताई रात॥
प्रभु तुणीर महँ हरि शर जबहीं। प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबहीं॥
देखि कटक निज परम विशाला। नारान्तक भट कोटि कराला॥
करि दृढ़ शपथ लिये सँग बीरा। बरषत शक्ति उपल गण तीरा॥
शर अस्त्रन्ह मन विपुल पनारे। भये अचल कपि टरहिं न टारे॥

लैलै पाश निशाचर धाई। बाँधत जिमि चुँगली शुक पाई॥
व्याधि पींचरा सम बहु जाना। भरे यान प्रति अयुत प्रमाना॥
जे कपि लखें विपुल बल बंका। ते मूर्छित फेंकें गढ़ लंका॥
रावण देखि तनय की करणी। वन्दी जन जिमि भुज बल वरणी॥
दो॰ हरि इच्छा जानै न कस सुतहि सराहत मूढ़।
कालविवश मति संभ्रमित सुनहु ऋषय बुधि गूढ़॥
अंगद हनूमान जब जागे। नारान्तक मन जूझन लागे॥
क्षण इक कीशन पायउ लरई। पुनि शर हति मूर्छा बश करई॥
याम युगल तेहि कर वरदाना। राखेउ तेहि कारण भगवाना॥
रिपुहि खिलावत रघुकुल केतू। पालत बुधि वानी श्रुति सेतू॥
सो युग याम गये जब बीती। तब रघुवीर सजी जय रीती॥
हाँक देइ कपि भालु जगाये। भये विगत मूर्छा सब धाये॥
हनूमान अंगद जब जागे। राम लषण चरनन अनुरागे॥
प्रभु पद शीश रहे धरि कीशा। तब हँसि बोले श्रीजगदीशा॥
सो॰ विधिवाचा लगि आज तात तुमहिं मूर्छा भई।
पुनि कहि प्रभु रघुराज अब अस स्वपनेहु अनत नहिं॥
तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना। जितिहैं जगत मनुज संग्रामा
अस वर जबहिं रमापति भाखा। सुनत गिरा हरखे मृग शाखा॥
कहेउ बहोरि बचन रघुवीरा। सुनु अंगद हनुमत रण धीरा॥
तात तुरत तुम उभय सिधावहु। लंक गये कपि तिनहिं छुड़ावहु
सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला। सुमिरि कोशलाधीश कृपाला॥
सपदि कीश गढ़ पर चढ़ि गये। देखि लंक [illegible]॥
सकल कपिन कै मूर्छा बीती। तोरि पास भजि राम सप्रीती॥
वायु सूनु युवराज निहारी। हरषे कहि जय जयति खरारी॥
दो॰ मेघ वरूथहि पाइ जिमि वृक गण करहिं सिंगार।

तिमि मर्दहिं दनुजन सुभट कीश भालु बरियार ॥

याम एक बासर अब शेषा। कह अंगद कीशन तन देखा ॥
चलिय तात अब जहँ सुर भूपा। देखिय पद पाथोज अनूपा ॥
अंगद वचन पवन सुत भाये। सपदि सहित दल प्रभु पहँ आये ॥
निशिचर कोटि नरान्तक संगा। करत रहे बहु बिधि रण रंगा ॥
माया करि निज गात बजावहिं। जहँ तहँ खल रावण यश गावहिं ॥
अदिति नन्द लखि तिनकर माया। सभय भये जाना रघुराया ॥
दीन नाथ अनुजहिं अनुशासन। उठे निमित गहि विशिख शरासन ॥
अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षण एका। तैं कीन्हे रण खेल अनेका ॥

छं० तैं कीन्ह खेल अनेक विधि अब तिष्ठ खल रण भूथला।
इमि कहि अहीश चढ़ाइ धनु शर करन निशिचर दल मला॥
निज अनी निरखि निदान हरिहर सुवन दावा रिसि भरा।
डारत अनेक नराच प्रभु पर शिला तरु वर भूधरा ॥
रघुवीर अनुज प्रवीण खल बल दलन श्रुति यश गावहीं ;
तरु उपल गिरि अरि तीर उर रहि वारा लषण चलावहीं ॥
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं।
सुर गण प्रफुल्लित सुमन भरि करि जयति लषण पुकारहीं ॥

दो० मायापति के अनुज सन माया करत अयान।
लगत न एको जानि जिय तब खल निकट तुलान ॥

हनाल लषण उर पवि सम शायक। लगत गिरे रण महि अहिनायक ॥
पुनि खल दल भा प्रबल अपारा। भक्षण लाग भालु कपि धारा ॥
चले पराय कीश भय भीता। अबन बचब करि काल प्रतीता ॥
निशिचर धारि भालु कपि वेषा। लागे खान कपिन अस लेषा ॥
कपि डर कीश भालु उर अच्छा। आपु अपु भय मिलन अनिच्छा ॥
कोउ न काहु निकट नियराई। जो जेहि पाव ताहि नोहिं खाई ॥

पुनि शठ साधि विभीषण रूपा। गहि अंगद हनुमत कपि भूपा॥
काहु न यह माया कछु जानी। कपट मिलापि विभीषण ठानी॥
दो० तेहि अवसर जागे लषण देखा सेन विनाश।
अहि रावण छल पवनसुत समुझत उड़ा अकाश॥
गरजेउ जाइ भयंकर भारी। फटेउ हृदय सुनि निशिचर भारी॥
माया हृत शर लषण पवारा। उघरे कपट कपाट अपारा॥
नारान्तक के माया बीती। गयउ यज्ञशाला अति प्रीती॥
खोजसि सकल समिग्री ताकी। कीन्ह अरंभ विजय निज ताकी
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना। पशु समूह बलिकारण आना॥
भये निशा सुख अस वश सैना। फिरे सुमिरि सब राजिव नैना॥
तुरित अहीश राम पहँ आये। सहित अनी प्रभु पद शिर नाये॥
कृपा अयन निरखे मृगशाखा। प्रभु श्रम छीन दीन्ह अभिलाखा॥
दो० टिकहु थलनि सब सन कहा सुखसागर रघुनाथ।
पाय सु आयसु भालु कपि चले सुमिरि श्री नाथ॥
तब रघुराज अनुज उर लावा। निज आसन समीप बैठावा॥
मघवा सुत सुत अरु हनुमाना। इन सम भाग्यवंत नहिं आना॥
अमलाम्बुज पद गहि निज पानी। परसे सबनि सनेह भवानी॥
जामवन्त लंकेश हरीशा। प्रभु समीप सब मुदित मुनीशा॥
अनुज सखा नारान्तक करणी। युद्ध प्रबलता बहु विधि वरणी॥
शिव प्रसाद तेहि अमित प्रतापा। मरत न दीन्हे बहु सन्तापा॥
सुने बचन रघुपति मुसकाने। अति सनेह हर चरित बखाने॥
सुनहु सकल हम शंभु न आना। जिनहिं भेद ते वश अज्ञाना॥
दो० जे सुमिरहिं शिव सह उमा ते जानहु मम प्रीय।
शंकर भजहिं सो मोहि भजैं मोहिं सो शंभु अतीय॥
वारिपरारथ कर नल नाके। बसहिं महेश उमा उर जाके॥

जो मम प्रण शिव सदा निबाहा । सो जयदेव न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जय विजय विभूती । शंकर सुमिरत होइ अकूती ॥
भक्ति मोर शंकर आधीना । जलाधीन जिमि जीवन मीना ॥
कह आश्चर्य्य नरान्तक एहा । सो पर गिरिपति परम सनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इक नाथा । कपट त्यागि सब नावहु माथा ॥
होइहि विजय धीर मन धरहू । वेगि उपाव पाव सुख करहू ॥
शम्भु उपासन कर मम दासा । तात हृदय धरि दृढ़ विश्वासा ॥
दो॰ जो नर चाहत भक्ति मम सो छल कपट दुराइ ।
शिवा समेत गिरीश पद निशि दिन रहु मन लाइ ॥
मन क्रम वचन शंभु पद आशा । करहिं ताहि उर सब गुण वासा ॥
निर्भय करि जो हरि पद नेहू । ताउर रमा सहित मम गेहू ॥
भव वारिधि लांघहि बिनु खेवहिं । यहि विचारि बुधजन भव सेवहिं ॥
भव भंजन यह हित उपदेशा । अनुजहिं सबहिं बुझाव रमेशा ॥
ध्रुव वाणी सुनि अति सुख पावा । अहिपति राम चरण शिर नावा ॥
अंगद हनूमान नल नीला । कपि पति अरु वरऋक्षेश सुशीला ॥
सहित विभीषण राजन साता । सुनि श्री मुख हर यश विख्याता ॥
रामहिं शिवहिं एक जे जाने । भय तजि नाम जपत हर थाने ॥
दो॰ कहत सुनत इतिहास शुचि निशि बीती युग याम ।
खगपति आगत देव ऋषि जित शोभित श्री राम ॥
राम लषण सुख सीव बिराजें । मार अपार निहारत लाजें ॥
निरखि मानि मुनि हृदय सनाथा । उठे हर्षि प्रभु रघुकुल नाथा ॥
शीश नाय प्रभु आसन दीन्हा । आशिष पाइ हर्षि हित कीन्हा
मुनि नीके हरि रूप विलोका । यथा इन्दु लखि सुख लह कोका
पुलक गात तब कह ऋषि राजा । सुनहु नाथ आयेउँ जेहि काजा
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी । यदपि कृपानिधि अन्तर यामी ॥

सदा अनाथ नाथ भगवाना। विनय विरंचि करिय परमाना॥
जब लगि होत प्रभात न पावहि। तब लगि हरि हर सुत लै आवहि॥
दो० जपत निरन्तर नाम तव सो जानहु भगवान।
विधि वर हित इत आनिये तेहि कहँ कृपानिधान॥
नारान्तक बध है तेहि हाथा। दधिबल नाम भक्त तव नाथा॥
नाथ बहुत यहि खलहि खिलावा। रण विलोकि देव न दुख पावा॥
अब रघुवीर करहु सोइ बाता। बिनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता॥
तेहि सन तुमहिं न सोहु लराई। दधिबल सन्मुख करहु बुलाई॥
सविनय नाइ शीश वर भाखी। गवने मुनि प्रभु छवि उर राखी॥
नारद गये जबहिं विधि लोका। वायुतनय तन राम विलोका॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ। वारिधि महँ धौरागिरि जहवाँ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये। बहुत दिवस चलि गये सुभाये॥
दो० अहै तपोबल तेज सो तात तासु ढिग जाइ।
मन प्रसन्न करि चतुरई आनहु बेगि बुलाइ॥
पवन कुमार पाइ अनुशासन। चले वन्दि पद रघु उदासन॥
बेगवन्त धावा कपि केसे। वरनराच दधि सुत तें तैसे॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा। पहुँचे वायु पुत्र बल धामा॥
तेहि नगरी सम तासु प्रकाशा। ठाढ़ भयउ कपि मन्दिर पासा॥
दण्ड युगल कपि इस्थित रहेऊ। हिय महँ राम राम अस कहेऊ॥
उतरण होई होत प्रभाता। इत इन करचित हरिपद राता॥
स्मरण इक कपि मन कीन्ह विचारा। प्रभु पहँ चलिये कवन प्रकारा॥
जो रह सहित चलहु लै रुही। नहिं श्रम आय सुभक्त सनेही॥
दो० बुधजन शीश शिरोरतन अति लजात मुनिराव।
ताहि जगावन हेत तब कीन्हे अमित उपाव॥
अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना। नहिं छूटी नत भजि भगवाना॥

राम चरण चित कपिवर दयऊ। हणउ एक ओरो चलि गयऊ ॥
विधि प्रेरित दधिबल लघु शंका। करन उठेउ देखा भट बंका ॥
जय श्री राम वायु सुत बोला। सुनि दधिबल निज लोचन खोला
बूझि हरिहि कीशहि उरलाई। कहो परस्पर दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता। चलहु विलोकन त्रिभुवन त्रात
सानुज नाथ सुखद पद कंजा। जिन मकरन्द शिला अघ गंजा ॥
जेहि लगि तप कीन्हेउ बहु काला। सो तुम पर अनुकूल कृपाला
दो० धूरजटी हृद मानसर बसत हंस इव जोइ।
सादर तुम कहँ लेन लगि पठवा सोहि प्रभु सोइ॥
सुनि शुभ वचन सुकंठ कुमारा। हरि यहँ हरि सँग तुरत सिधारा ॥
आये नाथ निकट मग शाखा। देखे पद जेहि हर हिय राखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता। दधिबल निरखेउ कृपा निकेता॥
सानुज हरषि मिले सुख कंजा। तासु पाणि गहि निज कर कंजा॥
बैठे ताहि निकट बैठावा। तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा ॥
निरखि तनय कपिपति हरषाना। मिलत प्रेम नहिं जाय बखाना॥
गइ मणि पन्नग जनु पुनि पाई। देही देह मीन जल आई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे। अवगुण तेनि ताहि क्षण मेटे॥
सो० दधिबल बालिकुमार मिले परस्पर हरषि हिय।
भयउ आय मिनुसार न्हाइ सबनि प्रभु पद गहे॥
जहँ तहँ समर करन बनचारी। चले कहत जय लषण खरारी॥
उहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा। रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा॥
निशिचर कहो सुभट सँग ताके। आयुध अखिल भयानक वाके
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े। अमित मेघ सम अति रिस बाढ़े ॥
करि माया तेहि गात छिपावा। भयउ प्रकट तब प्रभु ढिग आवा॥
दधिबल लखि सखा चलि आयउ। भुजा पसारि हरषि उठि धायउ

नारान्तक कह दीख गुरु भाई। मुदित मिले उर उभय अघाई ॥
भेटि सप्रेम बूझि कुशलाता। निज निज दशा कीन्ह विख्याता ॥

दो० हरिपति पूत प्रवीश अति सुनि तेहि अति विख्यात।
लगे बुझावन मित्र कहँ सुनहु पीय पति बात ॥

वंश स्वभाव सत्य कवि कहहीं। फल पियूष विष बेलि न लहहीं ॥
समझहु तात विचारि निदाना। किहे अनीति न जग कल्याना ॥
पितु चरित्र समझहु मन माहीं। राम विरोधक तहु जय नाहीं ॥
तुव प्रवीश भा मति भ्रम कैसे। कूपध सत विक बाद अनैसे ॥
तुमहु कीन्ह दिन चारि लड़ाई। जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र संभव अज्ञाना। कहहु पाहि रघुबर भगवाना ॥
सफल करहु भव प्रभु पद परसी। करिहैं अभय तोहिं समदरसी ॥
मानहु सीख मोरि सुख कारी। प्रगत पाल रघुबीर खरारी ॥

दो० शारंगी शर तरशि सम दश मुख वपु खग लोय।
जरत राख यह समय तुव करि विज्ञान विशेष ॥

सुनत वचन गुरु भ्राता केरा। नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहन लाग खल ताहि कुभाँती। सहज सभीत कीश दिनराती ॥
बालि हिहते उ जब बन तप धारी। भा अंगद तिन आज्ञा कारी ॥
दधिबल यह बानर कुल रीती। हमरे करहिं न अरिसन प्रीती ॥
यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा। दधिबल लूम लपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ बानर। तव तन नहीं मोर डर कादर ॥
छोड़हु मूढ़ समुझि गुरु भाई। अस कहि पेल चला कठिनाई ॥
तब सुकाठ सुत क्रोधित भयऊ। सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥

दो० नारान्तक दधि बल भिरे निरखि भालु अरु कीश।
लगे करन संग निशिचर न कहि जय श्री जगदीश ॥

छं० कपि शूर संहारे शिला निगारे बहु मर्दि क ग्रसकता पहारी।

भटविहवा बलवासी। जितेक कपि मारि गिराये बचन एक ॥
रह एकाकी मनुजाद वीर। कियद्वन्द्व युद्ध उरगाद धीर।
दोउ लरत लौहं छवि एक भाँति गिर कज्जल कंचन उभय वाति॥
युग घटिका ऊपर एक याम। दोउ भिरे समर बल योग धाम।
पुनि भाग्वलक्ष सो करत युद्ध बल वन्त उभय श्रमगत सक्रुद्ध
कह षट प्रकार श्रुति युद्ध रीति। सुख मानेउ सुर देखत सु प्रीति॥
लखि पुत्र इकाकी पुलकि तात कह बालि अनुज अति हर्षगात॥
दो० जाम्बवन्त सन बचन मृदु कहेउ सुकराठ पुकारि।
कहहु तात दधिबल कबहिं दनुजहिं डारिहि मारि॥
समर करत लागी अति बारा। यह सुनि बोलेउ ऋक्ष भुवारा॥
क्षराक हृदय धरु धीर कपीशा। दधिबल गुरु सन लही अशीशा॥
सो अवसर अब आय तुलाना। एक पलक महँ मरिहि अयाना॥
सुनि हरीश मन महँ अति हर्षे। तबही विबुध सुमन बहु बरषे॥
दधिबल धन्य भुजा बल तोरा। रण कौतूहल कीन्ह न थोरा॥
हरि अस्तुति सुनि हरि अरि कोपा। कपिहि सहित खल भयउ अलोपा॥
योजन अयुत अष्ट नभ जाई। दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई॥
गहि मनुजाद भूमि पर डारा। करि चिकार तेहि मरती बारा॥
छं० मरती समय अति शब्द करि दशमुख तनय हरि हरि कही।
तजि अधम तन धरि सुभग वपु द्विजनाथ सुनि सो गति लही॥
जेहि हेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भाँति जप तप मख किये।
श्री राम करुणा सिन्धु सो फल सहज ही दनुजै दिये।
दो० देखि तासु गति विबुध गण अभय भये खगराइ।
प्रमुदित वर्षे पुहुप झरि राम चरण चित लाइ॥
मरा नरान्तक दधिबल जानी। तोरि तासु शिर गहि निज पानी॥
रुंड तासु गहि लंक संचारी। आप चले जहँ नाथ खरारी॥

रावण के न रान्तक आदि पुत्रों की उत्पत्ति व नरान्तक अंगद हनुमतादि वानरों का घोर युद्ध और
दधिबल नरान्तक के घोर संग्राम में दधिबल करके नरान्तक बध॥



निशा प्रवेश भूत बेताला। चढ़ि चढ़ि वाहन वेष कराला ॥
जाइ समर महि सुखद समेता। उदर अघाय गये मुनि केता ॥
आयउ दधिबल प्रभु के पासा। देखि हरषि उठि रमा निवासा ॥
सानुज राम मिले अति प्रीती। परम प्रसाद नाथ नित रीती ॥
बैठे रघुकुल मणि दोउ भाई। सखा सुतहि निज ढिग बैठाई ॥
हनुमतादि मरकट प्रभु पाहीं। नाइ माथ प्रमुदित मन माहीं ॥
दो० राम रजायसु पाय पुनि होइ विगत श्रम कीश।
तब दधिबल प्रभु चरण गहि आगे धरि अरि शीश ॥
समुझि कौतुकी रिपु सुत शीशा। सुनहु सुकंठ कहा जगदीशा ॥
नारान्तक कर शीश धरावहु। यतन समेत न सेंत चलावहु ॥
नाथ रजाय पाइ कपि राई। राखेउ सो शिर यतन कराई ॥
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई। श्रीपति श्रीमुख बहु विधि गाई ॥
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा। सबहि सराहत सो जगदीशा ॥
दधिबल प्रभु अनुकूल बिलोकी। सुफल जन्म लखि भयउ बिशोकी ॥
प्रेम वारि लोचन कर जोरी। बोलेउ गिरा भक्ति रस बोरी ॥
जगदात मः तुम्हार यह बाना। सन्त न करहु दीन मन माना ॥
दो० बनचर पाँवर सहज जड़ बुद्धि विषम अज्ञान।
विरद स्वभाव कृपाल प्रभु सेवक सुयश बखान ॥
तव यश विमल विदित अवधेशा। कहत न पार पाव श्रुति शेशा ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुं न कैसे। पशी वणिक गज मणि गुण जैसे ॥
अस कहि हरि हरि पद लपटाने। देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने ॥
मन अभिमान नाहि प्रभु जाना। दीन दयालु बहुरि सनमाना ॥
माँगु बच्छ जो वर मन भावा। सुनि दधिबल करि विनय सुनावा ॥
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा। करहिं निरन्तर मम उर धामा ॥
होइ मोहि प्रिय पद पंकज कैसे। कामिहिं बाम सूम धन जैसे ॥

एवमस्तु तुम कहं बर मूहू। मम इच्छा कछु औरो लेहू॥
सो० बिहवाबलपुर राज करहु तात मम मुदित मन।
छोड़ि अवर सब काज शिवा शम्भुपदभक्ति दृढ़॥
यहै काज शुभ सन्तत चहई। जोइ सोइ प्राणी मम मन रहई॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ। जन पर प्रेम न कबहुं दुराऊ॥
मोहिं निज रूप रमापति जानैं। तातें बारम्बार बखानैं॥
जानेउ श्रीरघुबर स्वभाव जिन। सब तजि प्रेमभक्ति मांगी तिन॥
रामभक्ति वारीश जासु उर। महिमा तासु कहत श्रुति बुध वर॥
सरसरिता सब सुखद सुहाये। सहजहि आवत विनहि बुलाये॥
ताहि शुद्ध सिख दे रघुनाथा। पुनि प्रभु तिलक कीन्ह निज हाथा॥
शारंगी रुख सबही पावा। अंगदादि ताकहं शिर नावा॥
दो० पाइ भक्ति वर राज वर प्रभु चरणन शिर नाइ।
दधिबल पठयउ तुरत हठ सुनहु ऋषय शुभ भाइ॥
तन मन राम चरण अनुरागे। दधिबल राज करत भय त्यागे॥
सेन सहित श्री राजिव नयना। राजत देखि विबुध चित चयना॥
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा। पुहुप माल भरि करत अपारा॥
करि अस्तुति वर बिनय पुकारे। अदिति सूनु निज गेह सिधारे॥
उनहि जहां बैठा दशभाला। बिनु शिर बपु सो परा विशाला॥
देखि बिकल आपहि उठि धावा। पहिचानत नहिं अति दुख पावा॥
हा नारान्तक कहि खल परा। महा खभार लंकगढ़ परा॥
मयतनया आदिक निशिचरी। शोक समाज बिषादहि भरी॥
दो० बिन्दुमती आदिक सकल नारान्तक की नारि।
व्याकुल महि लोटहिं परी निज निज दशा बिसारि॥
करि बिलाप जिमि निशिचर नारी। सोन जात कहि सुनु नभचारी॥
शोक जलधि लंका लघु तरणी। चढ़ीं सकल निशिचर की घरणी॥

बूड़त जानि न कतहुं निबाहा। कहत मँदोदरि तब सब पाँहा॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई। नाग सुता के कथा सुनाई॥
सुनत सुनयना की शुचि करणी। धरि धीर नारान्तक घरणी॥
तब निबु भाय सासु पग लागी। तजि धन धाम स्वामि अनुरागी॥
मातु करहु सो यतन उताहुल। मिलहुं जाइ जेहि पद निज राउल॥
सुन सुत बधून आन उपाऊ। जाउ जहाँ राजत रघुराऊ।
दो० जेहि विधि गई सुलोचना तेहि गति तुम भय त्यागि।
निरखहु रघुपति पद कमल लावहु पति शिर माँगि॥
तासु बचन सुनि जानि प्रभाता। उठि निशिचर तिय पुलकित गाता॥
जातरूप मय यान मँगाई। निज कर गहि पति देह चढ़ाई॥
चली अकेलि यान चढ़ि जबहीं। तासु सखी इक आई तबहीं॥
नाम चित्ररेखा अस तासू। गुण गण सुभग बसै तन जासू॥
सो करि विनय चढ़ी तेहि संगा। कीन्ह पयान रँगी सत रंगा॥
रथ अकेल आवत कपि देखा। कायर डरपे हृदय बिसेखा॥
आवत जान सबल रिपु कोऊ। नल अरु नील सुभट वर दोऊ॥
आये धाय सपदि तब आगे। युगल नारि तन निरखन लागे॥
दो० समुझि बूझि वृत्तान्त दोउ फिर आये प्रभु पास।
बंदि कंज पद उभय कह सुनिये रमा निवास॥
नाथ नरान्तक की दोउ नारी। आवत शरण प्रणत भय हारी॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने। उनहिं टिकावहु सखा सयाने॥
सुनि प्रभु बचन बहुरि सो धाये। कटक विगत रथ दूरि टिकाये॥
बिन्दुमती चित्ररेखा दूनो। विनय हमारि कीश अस सूनो॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई। केहि कारण हम दरश न पाई॥
हम अबला कपि विनवें तोहीं। बूझि नाथ सन कहहु मोहीं॥
नारि विनय सुनि कपि दोउ भले। नीति विचारि राम पहँ चले॥

बिनती नारि जाइ नल बरणी। सुनि बिहँसे प्रभु तिनके करणी ॥
दो० परम मृदुल रघुनाथ चित कहत सकल बुध वेद।
ताकहँ देत न दरश प्रभु सुनु खगेश सो भेद ॥
प्रेम परीक्षा हित रघुनायक। कौतुक करत अमर सुख दायक ॥
नाथ सखा सब बहुरि बुझाई। पुनि नल नारिन पास पठाई ॥
कह कपि सुनहु नरान्तक नारी। दरशन तुमहिं देत खरारी ॥
तुम गृह जाउ वचन मम मानी। बोली सो तिय वचन सयानी ॥
हम अबला दरशन हित आई। नयन सफल बिनु किमि गृह जाई ॥
यहि बिधि करत बिनय दोउ नारी। कीशन कटक कीन्ह पैसारी ॥
आवत निकट जानि रिपु रवनी। यदपि पतिव्रत हैं सुख भवनी ॥
तदपि नाथ तेहि दरश न देहीं। जाइ निकट बिनती की तेहीं ॥
दो० प्रभु सीतापति जगतपति सुर नरपति रघुनाथ।
देउ दरश करुणायतन दीनबन्धु श्रुति गाथ ॥
बोले राम न सो तिय बोली। बिमल ज्ञान पतिव्रत अनु डोली
नाथ सत्य यह नीति बखाने। पुरुषन पर तिय स्वपनेहु जाने ॥
प्राकृत पुरुषन की यह रीती। जिनके हृदय कपट पर प्रीती ॥
सम दरशी कछु दोष न स्वामी। सो विचारु प्रभु अन्तर यामी ॥
आरत बन्धु बिलम्ब न कीजे। करुणाकर बरु दरशन दीजे ॥
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई। नव यश अस श्रुति गावत अहई ॥
गौतम नारि राम तुम तारी। अधम जाति भिल्लनी निस्तारी ॥
सुनि मम हृदय परी परतीती। अब प्रभु कस देखिय बिपरीती ॥
दो० तारे तारे अधमनि अमित बार बार अस जान
तातें करत अनाकनी मोरि ओर भगवान ॥
प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं। ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं ॥
बिकल उभय नारान्तक वाला। बारबार करि बिनय बिशाला ॥

धर्म्म धुरन्धर प्रभु अवतारा। केवल पतिव्रत धर्म्म हमारा ॥
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी। द्रवहु वेगि उर अन्तर यामी ॥
वृथा करतकत प्रभु अस्तुति भाखा। पूजत नाथन मन अभि लाखा ॥
लीन भयउ पति प्राण राम महँ। अर्द्ध भाग हम कहहु जायँ कहँ ॥
वृन्दा चरित नाथ सुधि करहू। विनय हमारि वेगि उर धरऊ ॥
विनय प्रीति सत धर्म जनाई। परी प्रेम वश महि अकुलाई ॥
दो० पाहि पाहि रघुवंश मणि हतहु न विरद प्रतीति।
प्रीतम प्रीति न नरक डर तुम कहँ नाथ अनीति ॥
सनी निराश विनय सुनि रानी। पुलके दीन दयाल भवानी ॥
दुहुन लीन्ह निज कटक बुलाई। परीं युगल प्रभु पद तर आई ॥
तिन्हें उठाय राम बैठावा। जगदीश्वर मृदु वचन सुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी। पति पद रति दृढ़ हृदय समानी ॥
बहुत करहुं कह तव गुण गाना। माँगु वेगि जो बर मन माना ॥
सुनत वचन लोचन जल बाढ़ी। जोरि युगल कर दोऊ ठाढ़ी ॥
प्रभु तव दानि वेद तरवर से। पद जल जात देखि सुर सरि से ॥
परम पवित्र भईं हम दोऊ। हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ ॥
छं० को धन्य हम सम नारि जग महँ सुनहु श्री रघुनायकम्।
दै दरश कीन्हो पतित पावन नाथ सुर अरि घायकम् ॥
कृपा सागर यश उजागर देहु वर सुर भावरम्।
जेहि मिलैं पति कहँ जाइ विनु श्रम वढ़इ तव यश श्रीधरं ॥
सो० वह कहि विन्दु कुमारि सहित सौति प्रभु पद परी।
तिन्हें उठाइ खरारि जग त्राता इमि कहत पुनि ॥
धरहु धीर तुम जनि अब डरहू। निज पति लेहु भवन सुख करहू ॥
कहेउ देव हम कहँ यह नीका। हमहूं कहत अब भावत जीका ॥
गिरिजा सहित गिरीश विरागी। नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥

नारदादि सनकादिक जेते। जपतप करहिं विविध विधि तेते॥
तेउ न कबहुं हमारी नाईं। देखहिं पदजल जात अघाई॥
हरिदरशन लवलेश प्रमाना। जग के सब सुख नाहिं समाना॥
अमिय अघाइ गरल को खाई। विनय हमारि येहै सुर साँई॥
देहु कन्त शिर सपदि मँगाई। दयाशील सागर रघुराई॥
दो० नारान्तक कर शीश तब दीन्ह मँगाइ रमेश।
पाइ स्वामि शिर मुदित ह्वै बोलीं देउ उर गेश॥
नाथ विनय हम अवरो करहीं। दाह विना हम केहि विधि जरहीं॥
सुखसागर सुनि बचन प्रमाना। हनुमत अंगदादि भट नाना॥
कह प्रभु सखा लंक महँ धावहु। चन्दन अगर भार बहु लावहु॥
पाइ राम अनुशासन धाये। लंका गढ़ गृह गृह सचु पाये॥
कपिन्ह शोधि चन्दन बहु भारा। लाये जहँ श्री नाथ उदारा॥
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा। तात येहै बड़ हित उपदेशा॥
बिन्दुमती जहँ चाहत ठांऊ। दाह भार सँग तुम तहँ जाऊ॥
दशकन्धर कर बयर विहाई। चिता चारु शुचि देहु बनाई॥
दो० रघुवर आज्ञा धारि शिर उठे दशानन भाइ।
अयुत भार चन्दन अगर तेहि सँग चले लिवाइ॥
जहां जरी मघवाजित नारी। तेही ठहर चिता सँवारी॥
उहवां अपर सौति मनु नारी। विन्दुमती मन भाव पियारी॥
मूर्छित परी प्रथम सुधि नाहीं। चली सुनत गति दुख मन माहीं॥
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे। निरखि दवा सम्मृगी गण जैसे॥
हाहा विन्दुमती पति प्यारी। कहां गई तुव हमहिं विसारी॥
पहुंचीं सहै विलाप तहँ सोऊ। हरषीं हृदय विलोकत दोऊ॥
षोडश निशिचरि भई सभागी। मन वच क्रम पति पद अनुरागी॥
सकल अन्हाइ मृतक अन्हवाई। सुमिरत हृदय राम गति दाई॥

दो० उत दशकंधर जगेउ शठ सुनेउ श्रवन सब हेतु।
संग मंदोदरि आदि तिय गवना ले खग केतु॥
बाजत ढोल कपिन सुनि काना। अपने मन तिन्ह अस अनुमाना
आव युद्ध हित उत कोउ बीरा। हम कहँ लाहु करत यहि तीरा॥
कीश अयुत तब प्रभु पहँ आये। पूरण प्रेम चरण शिर नाये॥
नाथ उतहिं दशकंधर आता। कीश एक कह सुनु जन त्राता॥
प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु। वेगि विभीषण कहँ लै आवहु॥
राम रजायसु शिर धरि धाये। सपदि विभीषण पहँ सो आये॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा। सुनत लंकपति आतुर आवा॥
हेतु पतो कुन काहँ समुझावा। कुमुद सहित रघुपति पहँ आवा॥
दो० मोह निशा नहँ तरणि रवि तिन चरणन शिर नाइ।
भागवन्त रावण अनुज बैठेउ प्रभु रुख पाइ॥
दशमुख तिय न सहित गा जहँवाँ। बिन्दुमती चित्ररेखा जहँवाँ।
देखत अति बिलखा विबुधारी। करुणा करत निशाचरि भारी
सासु श्वसुर कहँ देखि दुखारी। ज्ञान नवीन नरान्तक नारी॥
कहि शुचि गाथ सब निसमुझाई। स्वामि समेत चिता पर आई॥
यथा योग्य बैठीं सब तैसे। पति गृह रहत रहीं नित जैसे॥
अग्नि दीन्ह ज्वाला अति धाई। पहँचीं सब तिय सुरपुर जाई॥
देखि दशा तिनकी सुर रवनी। लिनहिं सराहि भवन निज गवनी
रावण सहित युवति निज गेहा। गयउ भरोसा सति सन्देहा॥
छं० सन्देह सासत भरेउ रावण सहित दार न गृह गयो।
इमि मय सुतादिक निशिचरिन लखि बिकल बलमूर्च्छित भयो
दशमाथ गनि देखत बिपुल बिलखैं निशाचर निशि बरी॥
सन्ताप शोक बिलाप भय भ्रम करक लंका महँ परी॥
दो० राम बिरोधहिं जस उचित तस दिन पहुँचा आइ॥

सो विचार करि लंक गढ़ उतरी विपति बजाइ ॥

इहाँ देव देवाय सुजाना। वर आसन्न शोभित भगवाना॥
यथा योग्य बैठे सग शारवा। सब कीन्हे प्रभु पद अभिलारवा॥
रिपु बड़ मरेउ हर्ष सबके मन। पुनि पुनि हेरत सुभग श्यामतन
तिनकी रुचि लखि दीन दयाला। शिव यश गावहु कहा कृपाला॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई। गावहिं कपि कल कराट लजाई॥
डमरु संगि शृंगी करतारी। धारा धारि मुख ते बन चारी।
गोंडर तन्तु वेणु मंजीरा। शंख मृदंग नाद गम्भीरा ।।
नृत्यत कीश भाव दिखरावत। शिवा सहित शिव कीरति गावत।

छं० शिव शिवा कीरति विमल गावत भालु वानर सुख भरे।
अहिनाथ युत रघुनाथ छवि निरखत सकल चित पद धरे॥
प्रभु देखि कौतुक अनुज सहित सखन वरवानत श्रीमुखं।
तुलसी पगे जेहि ध्यान जे जन पाइहैं नित यश सुखम्॥

सो० गत रजनी युग याम तब कीशन करुणा अयन ॥
करि पूरन मन काम सबनि कहेउ रजहु थलन ॥

बैठे निज निज थल रण धीरा। अनुज सहित राजत रघुवीरा॥
सुग्रीव सेन युत राजें। जय जय धुनि कपि भालु समाजें।
उमा रुचिर यह चरित सुहावा। नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा।
अपर चरित गिरिराज कुमारी। सुनहु कहत तव प्रीति निहारी
वहाँ मध्य निशि रावण जागा। कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा
उग्र सिखावन कहि बुध वाके। थके न कछु मन मानै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई। मेटि को सकै जो विधि उर बसई॥
प्रभु विरोध करि चह कल्याना। मोह विवश सो शठ अज्ञाना ॥

इति ॥

वचन सुनत तेइ कछु सुख माना। काल विवश जस तीरथ जाना॥

इहिविधिजल्पत भा भिनुसारा। लगेभालु कपि चारिहु द्वारा॥
सुभटबोलाइ दशानन बोला। रण सन्मुख जाकर मन डोला॥
सो अबही बरुजाउ पराई। रण सन्मुख भागे न भलाई॥
निजभुजबल मैं बैर बढ़ावा। देहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा॥
अस कहि मरुत बेग रथ साजा। बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा॥
चले वीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल गिरि आँधी चली॥
अशकुन अमित होइं तेहिं काला। गनै न भुजबल गर्व्व विशाला॥

छं० अतिगर्व गनत न शकुन अशकुन स्रवहिं आयुध हाथते।
भट गिरहिं रथते बाजि गज चिक्करत भाजत साथते॥
गोमायु गृद्ध कराल खर रव श्वान बोलहिं अति घने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं सकल परम भयावने॥

दो० ताहि कि सम्पति शकुन शुभ स्वपनेहुँ मन विश्राम।
भूत द्रोह रत मोह वश राम विमुख रत काम॥

चली निशाचर अनी अपारा। चतुरंगिनी चमू बहु धारा॥
विविध भाँति वाहन रथ याना। विपुल वरण पताक ध्वज नाना॥
चले मत्त गज यूथ घनेरे। मनहु जलद मारुत के प्रेरे॥
वरण वरण वर दैत्य निकाया। समर शूर जानहिं बहु माया॥
अति विचित्र वाहनी विराजी। वीर वसन्त सेन जनु साजी॥
चलत कटक दिगसिन्धुर डगहीं। क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं॥
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई। पवन थकित वसुधा अकुलाई॥
पणव निशान घोर रव बाजहिं। महाप्रलय के जनु घन गाजहिं॥
भेरि नफीरि बाजु सहनाई। मारू राग शूर सुखदाई॥
केहरि नाद वीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष अनुसरहीं॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा। मर्द्दहु भालु कपिन कर ठट्टा॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई। अस कहि सन्मुख फौज चलाई॥

यह सुधि सकल कपिन जब पाई। धाये करि रघुबीर दुहाई ॥
छं० धाये बिशाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहु सपक्ष उड़ाहिं भूधर वृन्द नाना बाण ले ॥
नख दशन शैल महा द्रुम आयुध सबल शंक न मानहीं।
जय राम रावण मत्त गज मृगराज सुयश बखानहीं ॥
दो० दुहु दिशि जय जय कार करि निज निज जोरी जानि।
भिरे बीर इत रघुपतिहि उत रावणहिं बखानि ॥
रावण रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषण भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा सन्देहा। बन्दि चरण कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नाहीं पद त्राना। केहि बिधि जीतब रिपु बलवाना ॥
सुनहु सखा कह कृपा निधाना। जेहि जय होइ सो स्यंदन आना ॥
शौरज धर्म्म जाहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। क्षमा दया समता रजु जोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना। बिरति चर्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचंडा। बर बिज्ञान कठिन को दण्डा ॥
संयम नियम शिलीमुख नाना। अमल अचल मन त्रोण समाना ॥
कवच अभेद बिप्रपद पूजा। इहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
दो० महा घोर संसार रिपु जीति सकै सो बीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मति धीर ॥
सुनत बिभीषण प्रभु बचन हर्षि गहे पद कंज।
इहि बिधि मोहिं उपदेश किय राम कृपा सुख पुंज ॥
उत पचार दशकन्धर इत अंगद हनुमान।
लरत निशाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन ॥
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखहिं रण नभ चढ़े बिमाना ॥

मैहूं उमा रहेउं जेहि संगा। देखत राम चरित रण रंगा॥
सुभट समर रस दुहुं दिशि माते। कपि जय शील रामबल नाते॥
एकएक सन भिरहिं प्रचारहिं। एक एक मर्दहिं महि पारहिं॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं। शीश तोरि गहि भुजा उपारहिं॥
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं। गहिपद अवनि पटकि भट डारहिं॥
निशिचर भट महि गाड़हिं भालू। ऊपर ढारि देहिं बहु बालू॥
बीरबली मुख युद्ध विरुद्धा। देखिय विपुल कालजनु क्रुद्धा॥

छं॰ क्रोधे कृतान्त समान कपि तन श्रवत शोणित राजहीं।
मर्दहिं निशाचर कटक भटबलवन्त जिमि घन गाजहीं॥
मारहिं चपेटनि काटि दांतनि डारि लातनि मीजहीं।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं॥
धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अंतावरि मेलहीं।
प्रहलाद पति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।
जय राम जो तृणते कुलिश करु कुलिश ते करु तृण सही॥

दो॰ निजदल विचल विलोकि तब बीस भुजा दश चाप।
चला दशानन कोप करि फिरहु फिरहु करि दाप॥

धावा परम क्रोध दशकन्धर। सन्मुख चले हूह दै बन्दर॥
गहि कर पादप उपल पहारा। डारहिं तेहि पर एकहि बारा॥
लागहिं शैल वज्र तन तासू। खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू॥
चला न अचल रहा रथ रोपी। रणदुर्मद रावण अति कोपी॥
इत उत झपटि दपटि कपि योधा। मर्दै लाग भयो अति क्रोधा॥
चले पराइ भालु कपि नाना। त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना॥
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं। यह खल खाव काल की नाईं॥
तेहि देखे कपि सकल पराने। दशहु चाप शायक सन्धाने॥

छं० सन्धानिधनु शरनिकर छांड़ेसिउरगजिमिउड़िलागहीं।
रह पूरि शर धरणी गगन दिशि विदिशि कहँ कपिभाजहीं॥
भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहिं आतुरे।
रघुवीर करुणा सिंधु आरत बन्धु जन रक्षक हरे॥
दो० बिचलत देखा कपिकटक कटि निषंग धनु हाथ।
लक्ष्मण चले सकोप तब नाइ राम पद माथ॥
रे खल कामारसि कपि भालू। मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू॥
खोजत रहेउं तोहि सुत घाती। आजु निपाति जुड़ावौं छाती॥
कहि असछांड़ेसि बाण प्रचण्डा। लक्ष्मण कियस्रहति शत खण्डा॥
कोटिन आयुध रावण डारे। तिल प्रमाण प्रभु काटि निवारे॥
पुनि निज बाणन्ह कीन्ह प्रहारा। स्यन्दन भंजि सारथी मारा॥
शतशत शर मारे दशभाला। गिरि शृंग निज नु प्रवशहिं व्याला॥
पुनिशत शर मारेउर माहीं। परेउ अवनि तन सुधि कछु नाहीं॥
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी। छांडसि ब्रह्म दत्त जो सांगी॥
छं० जो ब्रह्म दत्त प्रचण्ड शक्ति अनंत उर लागी सही।
पर्यो बिकल वीरउठाव दशमुख अतुल बल महिमा रही॥
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिर जिमि रज कनी।
सो चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी॥
दो० देखत धावा पवन सुत बोलत वचन कठोर।
आवत तेहि उर महँ हनेउ मुष्टि प्रहार प्रघोर॥
जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ। उठा सम्हारि बहुरि रिसि भरेऊ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा। परेउ शैल जिमि बज्र प्रहारा॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा। कपि बल विपुल सराहन लागा॥
धिक धिक धिक बल पौरुष मोही। जो तैं जियत उठा सुरद्रोही॥
असकहि कपि लक्ष्मण कहँ लावा। देखि दशानन विस्मय पावा॥

कहरघुवीर समुझि जियभ्राता। तुम कृतान्त भक्षक सुत त्राता॥
सुनत वचन उठि बैठु कृपाला। गगन गई सो शक्ति कराला॥
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये। रिपु सन्मुख अति आतुर आये॥

छं० आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन मारि तेहि व्याकुल कियो।
गिरयो धरणि दशकंधर विकल तनु बाण शत वेध्यो हियो॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो।
रघुवीर बन्धु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरणन नयो॥

दो० उहाँ दशानन बहुरि उठि करन लाग कछु यज्ञ।
जय चाहत रघुपति विमुख शठ हठवश अति अज्ञ॥

इहाँ विभीषण सब सुधि पाई। झपटि जाइ रघुपतिहि सुनाई॥
नाथ करै रावण इक यागा। सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा॥
पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर। करहिं विध्वंस यज्ञ दशकंधर॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये। हनुमतादि बन्दर सब धाये॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका। पैठे रावण भवन अशंका॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा। सकल कपिन भा क्रोध विशेषा॥
रणते भाजि निलज गृह आवा। यहाँ आय बक ध्यान लगावा॥
असकहि अंगद मारेउ लाता। चितव न शठ स्वारथ मद राता॥

छं० नहिं चितव जब कपि कोपि तब गहि दशन लातन मारहीं।
धरि केश नारि निकारि बाहेर जब सो दीन पुकारहीं॥
तब उठा कोपि कृतान्त सम गहि चरण बानर डारहीं।
इहि भांति यज्ञ विध्वंस करि कपि नेकु मन हिं न हारहीं॥

दो० मख विध्वंस करि कपि सकल आये रघुपति पास।
चला दशानन क्रोध करि छांडि जियकी आस॥

चलत होहिं नेहि अशुभ भयंकर। बैठहिं गृध्र उड़ाहि शिरनि पर॥
भयउ कालवश कहा न माना। कहेसि बजाबहु युद्ध निशाना॥

रावणको जयार्थ यज्ञ करना और श्री रामचन्द्रकी आज्ञानुसार हनुमदादि कपियों कोजाकर अनेक उपाधि करि यज्ञ विध्वंस करना ॥



चली तमीचर अनी अपारा। बहु गज रथ पद चर असवारा॥
प्रभु सन्मुख खल धावहिं कैसे। शलभ समूह अनल कहँ जैसे॥
इहाँ देव सब विनती कीन्हीं। दारुण विपति हमहिं इन दीन्हीं॥
अब जनि नाथ खेलावहु रही। अतिशय दुखित होत वैदेही॥
देव बचन सुनि प्रभु मुसकाना। उठि रघुवीर सुधारेउ बाना॥
जटाजूट बाँधी दृढ़ माथे। सोहत सुमन बीच बिच गाथे॥
अरुण नयन नवारिद तन श्यामा। अखिल लोक लोचन अभिरामा॥
कटितट परिकर कसे निषंगा। कर कोदण्ड कठिन शारंगा॥

छं० शारंग कर सुन्दर निषंग शिलीमुखाकर कटि कस्यो।
भुज दण्ड पीन मनोहरा अति उरधरा सुर पद लस्यो॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्माण्ड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे॥

दो० हर्षे देव विलोकि छबि वर्षहिं सुमन अपार।
जय जय प्रभु गुण ज्ञान बल धाम हरण महि भार॥

इहि के बीच निशाचर अनी। कसमसाति आई अति घनी॥
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। प्रलयकाल के जिमि घन घट्टा॥
शक्ति शूल तरवारि चमक्कहिं। जनु दश दिशि दामिनी दमक्कहिं॥
गजरथ तुरंग चिकार कठोरा। गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा॥
कपि लंगूर विविध नभ छाये। मनहुँ इन्द्रधनु उगेउ सुहाये॥
उठी रेणु मानहुँ जल धारा। वाण बुन्द भइ वृष्टि अपारा॥
दुहुँ दिशि पर्वत करहिं प्रहारा। वज्रपात जनु बारहिं बारा॥
रघुपति कोपि वाण झरि लाई। घायल भे निशिचर समुदाई॥
लागत वाण वीर चिक्करहीं। घूमि घूमि अगणित महि परहीं॥
श्रवहिं शैल जनु निर्झर बारी। शोणित सरि कादर भयकारी॥

छं० कादर भयंकर रुधिर सरिता वादि परम सुहावनी।

दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी॥
जल जन्तु गज पद चर तुरंग रथ विविध बाहन को गने।
शर शक्ति तोमर परशु चाप तरंग चर्म्म कमठ घने॥

दो॰ बीर परे जनु तीर तरु मज्जा बह जनु फेन।
कादर देखत डरहिं जिय सुभट न के मन चैन॥

मज्जहिं भूत पिशाच बैताला। केलि करहिं योगिनी कराला॥
काक कंक धरि भुजा उड़ाहीं। एक ते एक छीनि धरि खाहीं॥
एक कहहिं ऐसी सो धाई। शठहु तुम्हार दरिद्र न जाई॥
कहरत भट घायल तट गिरे। जहँ तहँ मनहुँ अर्द्ध जल परे॥
खैंचहिं आँत गृद्ध तट भये। जनु बनसी खेलत चित दये॥
बहु भट बहे चढ़े खग जाहीं। जिमि नावरि खेलहिं जल माहीं॥
योगिनि भरि भरि खप्पर साँचहिं। भूत पिशाच विविध विधि नाचहिं॥
भट कपाल कर ताल बजावहिं। चामुण्डा नाना विधि गावहिं॥
जम्बुक निकर तहाँ कट कटहीं। खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं॥
कोटिन रुण्ड मुण्ड बिनु डोलहिं। शीश परे महि जय जय बोलहिं॥

छं॰ बोलहिं जो जय जय रुण्ड मुण्ड प्रचंड शिर बिनु धावहीं।
परिगाम युद्ध अगुहय बोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं॥
निशिचर बरूथनि मर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये।
संग्राम अंगनि सुभट सोहहिं राम शर निकरनि हये॥

दो॰ हृदय बिचारेसि दशबदन भा निशिचर संहार।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार॥

देवन प्रभुहि पयादेहि देखा। उर उपजा अति क्षोभ विशेषा॥
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हर्षसहित मातलि लै आवा॥
तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा॥ बिहँसि चढ़े कोशलपुर भूपा॥
चंचल तुरँग मनोहर चारी। अजर अमर मनु सम गति चारी॥

रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी । धाये कपि बल पाइ विशेखी ॥
सही न जाइ कपिन की मारी । तब रावण माया विस्तारी ॥
सो माया रघुवीरहिं बांची । सब काहू मानी करि सांची ॥
देखी कपिन निशाचर अनी । बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी ॥

छं० बहु वालिसुत लक्ष्मण कपीश विलोकि मर्कट अपडरे ।
॥ जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवत खरे ॥
॥ निज सेन चकित विलोकि हँसि धनु तानि श्री कोशल धनी ।
॥ माया हरी हरि निमिषि महँ हर्षी सकल मर्कट अनी ॥

दो० बहुरि राम सब तन चितै बोले वचन गँभीर ।
॥ द्वन्द्व युद्ध देखहु सकल श्रमित भये अति बीर ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरण पंकज शिर नावा ॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा । गर्जि तर्जि प्रभु सनमुख आवा ॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना । लोकपाल जेहि के बंदिखाना ॥
खर दूषण विराध तुम मारा । हतेउ व्याध इव वालि बिचारा ॥
निशिचर सुभट सकल संहारे । कुम्भकरण घननादहि मारे ॥
आजु वैर सब लेउँ निवाही । जो रण भूमि भागि नहिं जाही ॥
आजु करौं खल काल हवाले । परेउ कठिन रावण के पाले ॥
सुनि दुर्वचन काल वश जाना । कहेउ विहँसि तब कृपानिधाना ॥
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई । जनि जल्पसि देखब मनुसाई ॥

छं० जनि जल्पना करि सुयश नाशहि नीति सुनि शठ कर क्षमा ।
॥ संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस: समा ।
॥ इक सुमन प्रद इक सुमन फल इक फलै केवल लागहीं ।
॥ इक कहहिं करहिं न अपर इक करहिं कहत न बागहीं ॥

दो० राम वचन सुनि विहँसि कह मोहिं सिखावहु ज्ञान ।

बैर करत तब नहिं डरेउ अब लागत प्रिय प्रान ।
कहि दुर्बचन क्रोधि दशकन्धर । कुलिश समान लाग छाँड़न शर
नानाकार शिलीमुख धाये । दिशि अरु विदिशि गगन महँ छाये
अनल बाण छाँड़े रघुबीरा । क्षण महँ जरे निशाचर तीरा ॥
छाँड़ेसि तीव्र शक्ति खिसियाई । बाण संग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पँवारे । तृण समान प्रभु काटि निवारे ॥
निफल होइँ रावण शर कैसे । खल के सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शत बाण सारथिहि मारेसि । परे भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध कर पावा ॥
छं० भये क्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोण शायक कसमसे ।
कोदंड ध्वनि सुनि चण्ड अति मनुजादि भय मारुत ग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पत कमठ भूधर अति त्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गज दशन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥
दो० तान्यो चाप जो श्रवण लगि छाँड़े विशिख कराल ।
राम बाण नभ मग चले लहलहात जनु व्याल ॥
चले बाण सपक्ष जनु उरगा । प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हति केतु पताका । गर्जा अति अन्तर बल थाका
तुरत आनि रथ चढ़ि खिसियाना । छाँड़ेसि अस्त्र शस्त्र विधि नाना
विफल होंय सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥
तब रावण दश शूल चलाये । बाजि चारि महि मारे गिराये ॥
तुरत उठाय कोपि रघुनायक । छाँड़े अति कराल बहु शायक
रावण शिर सरोज बन चारी । चले रघुनाथ शिलीमुख धारी ॥
दश दश बाण भाल दश मारे । निसरि गये चलु रुधिर पनारे ॥
स्रवत रुधिर धावा बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु शर संधाना ॥
तीस तीर रघुबीर पँवारे । भुजनि समेत शीश महि पारे ॥

काटतही पुनि भये नवीने । राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥
काटत झटित पुनि नूतन भये। प्रभु बहु बार बाहु शिर हये ॥
पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुज शीशा। अति कौतुकी कोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू । मानहु अमित केतु अरु राहू ॥
छं० जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत शोणित धावहीं।
रघुवीर तीर प्रचण्ड धावहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शर शिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहई।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुंतुद पोहई ॥
दो० जिमि जिमि प्रभु हत तासु शिर तिमि तिमि होहिं अपार।
सेवत विषय विवर्द्ध जिमि तिमि नित नूतन मार ॥
दशमुख दीख शिरनि की बाढ़ी। बिसरा मरण भई रिसि गाढ़ी ॥
गरजेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायेउ दशहु शरासन तानी ॥
समर भूमि दशकन्धर कोपा। वर्षि बाण रघुपति रथ तोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ। जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन्ह सब कीन्हा। तब प्रभु कोपि धनुष कर लीन्हा
शर निवारि रिपु के शिर काटे। ते दिशि विदिशि गगन महि पाटे ॥
काटे शिर नभ मारग धावहिं। जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा। कहँ रघुवीर कोशलाधीशा
छं० कहँ राम कहि शिर निकर धावहिं देखि मर्कट भजि चले।
सन्धानि शर रघुवंश मणि तब शरनि शिर वेधे भले ॥
शिर मालिका गहि कालिका तहँ वृन्द वृन्दनि सों मिलीं।
करि रुधिर शर मज्जन मनहुँ संग्राम वट पूजन चलीं ॥
दो० पुनि रावण अति कोप करि छाँड़ी शक्ति प्रचण्ड।
सन्मुख चली विभीषणहिं मनहुँ काल को दण्ड ॥
आवत देखि शक्ति कर धारा। प्रणतारत हर विरद सँभारा ॥

श्रीरामचन्द्र और रावण के परस्पर घोर युद्ध में श्रीरामचन्द्रजी करके रावण के सारथी को मार कर रथ को भंजन कर अनेक बार रावण के शिर और भुजा खण्डन करना।



तुरत विभीषण पाछे मेला। सनमुख राम सहेउ सो शेला॥
लगी शक्ति मूर्छा कछु भई। प्रभु कृत खेल सुरन्ह विकलई॥
देखि विभीषण प्रभु श्रम पायउ। गहिकर गदा क्रोध करि धायउ॥
रे कुभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे। तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे॥
सादर शिव कहँ शीश चढ़ाये। एक एक के कोटिन्ह पाये॥
तेहि कारण खल अब लगि बाचा। अब तव काल शीश पर नाचा॥
राम विमुख शठ चहसि सम्पदा। अस कहि हनेसि मांझ उर गदा॥

छं० उर मांझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्यो।
दश वदन शोणित स्रवत पुनि सँभारि धायो रिसि भर्यो॥
दोउ भिरे अति बल मल्लयुद्ध विलोकि एकहि इक हनै।
रघुबीर बल गर्ब्बित विभीषण घाल नहिं ताकहँ गनै॥

दो० उमा विभीषण रावणहिं सन्मुख चितव कि काउ।
भिरत सो काल समान अब श्री रघुबीर प्रभाउ॥

देखा श्रमित विभीषण भारी। धावा हनूमान गिरिधारी॥
रथ तुरंग सारथी निपाता। हृदय मांझ मारेउ तेहि लाता॥
ठाढ़ रहा अति कम्पित गाता। गयउ विभीषण जहँ जनत्राता॥
पुनि रावण तेहि हतेउ पचारी। चला गगन कपि पूँछ पसारी॥
गहेसि पूँछ कपि सहित उड़ाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना॥
लरत अकाश युगल सम योधा। हनत एक एकहि करि क्रोधा॥
शोभित नभ छल बल बहु करहीं। कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं॥
बुधि बल निशिचर परै न पारा। तब मारुत सुत प्रभुहिं सँभारा॥

छं० सँभारि श्री रघुबीर धीर पचारि कपि रावण हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन युगल कहँ जय जय भन्यो॥
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधा तुर चले।
रण मत्त रावण सकल सुभट प्रचण्ड भुजबल दलि मले॥

दो० राम प्रचारे वीर सब धाये कीश प्रचण्ड ।
कपिदल विपुल विलोकि तेइ कीन्ह प्रकट पाखंड ॥
अन्तरधान भयो क्षण एका । पुनि प्रकटेसि खल रूप अनेका ॥
रघुवर कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दशशीशा । भागे भालु विकल भट कीशा ॥
चले बली मुख धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा ॥
दह दिशि कोटिन धावहिं रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई । जय की आश तजहु रे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकन्धर । अब बहु भये तकहु गिरिकन्दर ॥
रहे विरंचि शंभु मुनि ज्ञानी । जिन जिन प्रभु की महिमा जानी ॥
छं० जानहिं प्रताप ते रहे निर्भय कठिन रिपु माने उफुरे ।
चल विचल मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अति रण बाँकुरे ।
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन कपट भट के अंकुरे ॥
दो० सुर बानर देखे विकल हँसे कोशलाधीश ।
साजि शरासन निमिष महँ हरे सकल दशशीश ॥
प्रभु क्षण महँ माया सब काटी । जिमि रवि उदय जाय तम फाटी ॥
रावण एक देखि सुर हर्षे । विपुल सुमन पुनि प्रभु पर वर्षे ॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकनि के टेरे ॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये । तरल तमकि संयुग महँ आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेइ देखे । भयउँ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदा तुम मोर मरायल । अस कहि गगन पंथ कहँ धायल ॥
हाहाकार करत सुर भागे । शठहु जाउ कहँ मोरे आगे ॥
देखि विकल सुर अंगद धावा । कूदि चरण गहि भूमि गिरावा ।
छं० गहि भूमि पार्यो लात मार्यो बालिसुत प्रभु पहँ गयो ।

संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर करि गर्जत भयो ॥
करि दाप धनुष चढ़ाइ दश सन्धानि शर बहु वर्षई।
किय सकल भट घायल बियाकुल देखि निज बल हर्षई ॥

दो० तब रघुपति लंकेश के शीश भुजा शर चाप।
काटे भये बहोरि जिमि कर्म्म मूढ़ के पाप॥

शिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी। भालु कपिन रिसि भई घनेरी॥
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा । धाये कोपि भालु अरु कीशा॥
बालि तनय मारुत नल नीला। द्विविद मयन्द महा बल शीला॥
विटप महीधर करहिं प्रहारा। सोइ गिरि तरु गहि कपिन सो मारा॥
एकन नख गहि वपुष विदारी। भागि चलहिं एक लातन मारी॥
तब नल नील शिरनि चढ़ि गयऊ। नखन ललाट विदारत भयऊ॥
रुधिर विलोकि सकोपि सुरारी। तिनहिं धरन कहँ भुजा पसारी॥
गहे न जाहिं शिरनि पर फिरहीं। जनु युग मधुप कमल वन चरहीं॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी। महि पटकेसि गहि भुजा मरोरी॥
पुनि सकोपि दश धनु कर लीन्हा। शरनि मारि घायल कपि कीन्हा॥
हनुमतादि मूर्च्छित सब बन्दर। पाइ प्रदोष हर्ष दश कन्धर॥
मूर्च्छित देखि सकल कपि वीरा। जामवन्त धावा रणधीरा॥
संग भालु भूधर तरु भारी। मारन लगे प्रचारि प्रचारी॥
भयो क्रोध रावण बलवाना। गहि पद महि पटके भट नाना॥
देखि भालुपति निज दल घाता। कोपि मांझ उर मारेसि लाता॥

छं० उर लात घात प्रचण्ड लागत विकल रथ ते महि गिरा।
गहि भालु बीसहु करनि मानहुं कमल निशि बस मधुकरा।
मूर्च्छित बहोरि विलोकि पद हति भालुपति प्रभु पहँ गयो।
निशि जानि स्यन्दन घालि तेहि तब सूत यत्न करत भयो॥

दो० मूर्च्छा गइ कपि भालु तब सब आये प्रभु पास।

सकल निशाचर रावणहिं घेरि रहे अतित्रास ॥
तेहि निशिमहं सीता पहं जाई। त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई ॥
शिरभुजबाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिन्ता। त्रिजटा सन बोली तब सीता
होइहि कहा कहसि किन माता। केहि विधि मरिहि विश्व दुखदाता ॥
रघुपति शर शिर कटे न मरई। विधि विपरीति चरित सब करई ॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेहि हौं हरि पद कमल बिछोही ॥
जेहि कृतकनक कपट मृग झूंठा। अजहुं सो दैव मोहिं पर रूठा ॥
जेहिं विधि मोहिं दुख दुसह सहावा। लक्ष्मण कहँ कटु बचन कहावा
रघुपति विरह विषम शर मारी। तकि तकि बार बार मोहिं मारी ॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना। सो बिधि ताहि जिआव न आना
बहु विधि करत बिलाप जानकी। करि करि सुरति कृपानिधान की
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी। उर शर लागत मरिहि सुरारी ॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही। इहि के हृदय बसत वैदेही ॥
छं० इहि के हृदय बसु जानकी मम जानकी उर वास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत बाण सब को नाश है ॥
अस सुनत हर्ष विषाद उर अति देखि पुनि त्रिजटा कहा।
अब मरिहि रिपु इहि भांति सुन्दरि तजहु तुम संशय महा ॥
दो० काटत शिर होइहि विकल छूटि जाय तव ध्यान।
तब रावण के हृदय शर मारहिं राम सुजान ॥
अस कहि बहु प्रकार समुझाई। पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई
रामस्वभाव सुमिरि वैदेही। उपजी विरह विथा अति तेही ॥
निशिहि शशिहि निन्दत बहु भांती। युग सम भई विहात न राती
करत विलाप मनहिं मन भारी। राम विरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो विरह उर दाहू। फरकेउ वाम नयन अरु बाहू ॥

शकुनविचारिधरीउरधीरा। अबमिलिहहिंकृपालुरघुबीरा॥
इहाँअर्द्धनिशिरावण जागा।निज सारथिसनखीजनलागा।
शठरणभूमिछुड़ायहु मोहीं।धिकधिक अधमसन्दमति तोही॥
तेहूँपद गहि बहु बिधि समुझावा।भोरभयेरथ चढ़िपुनि आवा।
सुनि आगमन दशानन केरा।कपिदलखरभर भयउ घनेरा।
जहँ तहँ भूधर विटप उपारी। धाये कटकटाइ भट भारी॥
छं० धाये जो मर्कट विकट भालु करालकर भूधर धरा।
अतिकोपिकरहिंप्रहार मारत भजिचले रजनीचरा॥
विचलाइदलवलवंत कीशनघेरिपुनि रावणलियो।
दहुदिशि चपेटन्ह मारिनखनि विदारि तेहिं व्याकुल कियो
दो० देखि महा मर्कट प्रबल रावण कीन्ह विचार।
अन्तर हित ह्वै निमिष महँ कृत माया विस्तार॥
छं० जब कीन्ह तेइ पाखंड। भये प्रकट जन्तु प्रचंड॥
बेताल भूत पिशाच। कर धरे धनु नाराच॥
योगिनि गहे कर बाल। इक हाथ मनुजकपाल॥
करि सद्य शोणितपान नाचहिं करहिं गुणगान॥
धरु मारु बोलहिं घोर। रहि पूरि ध्वनि चहुँ ओर॥
मुख बाय धावहिं श्वान। तब लगे कीश परान॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिं आगि॥
भये विकल बानर भालु। पुनि लागु बर्षण बालु॥
जहँ तहँ थकित करि कीश। गर्जेउ बहुरि दशशीश॥
लछमण कपीश समेत। भये सकल बीर अचेत॥
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मींजहिं हाथ॥
इहि विधि सकल बल तोरि। तेहि कीन्ह कपट बहोरि॥
प्रकटे विपुल हनुमान। धाये गहे पाषान॥

तिन घेरि रामहिं जाइ। चहुँ दिशि बरूथ बनाइ।
मारहु धरहु जनि जाइ। कटकटहिं पूँछ उठाइ।
दश दिशा लंगूर विराज। तेहि मध्य कोशलराज
छं० तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तन शोभा लही।
जनु इन्द्र धनुष अनेक किय बरबारि तुंग तमालही।
प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर बदति जय जय जय करी।
रघुबीर एकहि तीर कोपित निमिष महँ माया हरी।
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे
शर निकर छाँडे राम रावण बाहु शिर महि महँ गिरे
श्रीराम रावण समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं
शत शेष शारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं
दो० कहे तासु गुण गण कछुक जड़मति तुलसीदास
निज पौरुष अनुसार जिमि मशक उड़हिं आकाश
काटि शीश भुज बार बहु मरै न भट लंकेश
प्रभु क्रीड़त सुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेश
काटत बढ़हिं शीश समुदाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा। राम विभीषण तन तब देखा।
उमा काल मरु जाकी इच्छा। सो प्रभु जन कीलेव परिच्छा।
सुनु सर्वज्ञ चराचर नायक। प्रणतपाल सुर मुनि सुख दायक।
नाभी कुण्ड सुधा बस याके। नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण वचन कृपाला। हर्षि गहे प्रभु बाण कराला।
अशकुन होन लगे विधि नाना। रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना।
बोलहिं खग जग आरत हेतू। प्रकट भये जहँ तहँ नभ केतू
दश दिशि दाह होन तब लागा। भयेउ पर्व्व बिनु रवि उपरागा।
मन्दोदरि उर कम्पित भारी। प्रतिमा स्रवहिं नयन मग वारी

छं॰ प्रतिमा अवहिं पवि पात नभ अति बात बह डोलति मही ।
वर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सक को कही
उतपात अमित विलोकि नभ सुर विकल बोलहिं जय जये
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरत भये ॥

दो॰ आकर्षेउ धनु श्रवण लगि छांड़े शर इकतीस
रघुनायक शायक चले मानहुं काल फणीश ।

शायक एक नाभि सर शोषा । अपर लगे शिर भुज करि रोषा ।
ले शिर बाहु चले नाराचा । शिर भुज हीन रुण्ड महि नाचा
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा । तब शर हति प्रभु कृत युग खण्डा
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहां राम रण हतौं प्रचारी ।
डोली भूमि गिरत दशकन्धर । क्षुभित सिन्धु सरि दिग्गज भूधर ।
परेउ भूमि युग खण्ड बढ़ाई । चापि भालु मर्कट समुदाई ।
मन्दोदरि आगे भुज शीशा । धरि शिर चले जहां जगदीशा
प्रविशे सब निषंग महं जाई । देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई ।
तासु तेज समान प्रभु आनन । हर्षे देव शम्भु चतुरानन
जय ध्वनि पूरि रही नव खण्डा । जय रघुवीर प्रबल भुज दण्डा
वर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा । जय कृपालु जय जयति मुकुन्दा

छं॰ जय कृपाकन्द मुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मद प्रभो
खल दल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो
सुर सिद्ध मुनि गन्धर्व हर्षे बाज दुन्दुभि गहगही
संग्राम आंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही ।
शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं
जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगण भ्राजहीं ।
भुज दण्ड फेरत शर शरासन रुधिर कण तन अति बने ।
जनु राय मुनिय तमाल तरु बर बैठि बहु सुख आपने ।

श्रीरामचन्द्रजी औ रावणका परस्पर घोर युद्ध और श्रीरामचन्द्र करके रावणवध ॥



कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किये सुर वृन्द ।
हर्षे बानर भालु कपि जय सुख धाम मुकुन्द ।

पति शिर देखत मन्दोदरी । मूर्छित विकल धरणी खसि परी ॥
युवति वृन्द रोवति उठि धाईं । तेहि उठाय रावण पहँ ल्याईं ॥
पति गति देखि सो करत पुकारा । छूटे केश न हृदय सँभारा ॥
उर ताड़ना करै बिधि नाना । रोदन करै प्रताप बखाना ॥
तव बल नाथ डोल नित धरणी । तेज हीन पावक शशि तरणी ॥
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा । सो तनु आजु परा महि छारा ॥
वरुण कुबेर सुरेश समीरा । रण सन्मुख धरि काहु न धीरा ॥
भुज बल जीतेउ काल यम साईं । आजु सो परेउ अनाथ कि नाईं ॥
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई । सुत परिजन बल बरणि न जाई ॥
राम विमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कुल कोउ रोवनि हारा ॥
तव बश विधि प्रपंच सब नाथा । सभय दिगपति नावहिं माथा ॥
अब तव शिर भुज जम्बुक खाहीं । राम विमुख यह अनुचित नाहीं ॥
काल विवश पति कहा न माना । अग जग नाथ मनुज करि जाना ॥

छं० जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयम् ।
जिहि नमत शिव ब्रह्मादि सुर प्रिय भजेहु नाहिं करुणामयं ॥
आजन्म ते पर द्रोह रत पापौघ मय तव तनु अयम् ।
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयम् ॥

दो० अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिन्धु को आन ।
मुनि दुर्लभ जो परम गति तुमहिं दीन्ह भगवान ॥

मन्दोदरी बचन सुनि काना । सुर मुनि सिद्ध सबहिं सुख माना ॥
अज महेश नारद सनकादी । जे मुनि वर परमारथ बादी ॥
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भये सुखारी ॥
रोदन करत बिलोकेउ नारी । गये विभीषण मन दुख भारी ॥

बन्धुदशा देखत दुखभयऊ। तब प्रभु अनुजहि आयसु दयऊ।
लक्ष्मण तेहि बहु विधि समुझाये। सहित विभीषण प्रभु पहँ आये
कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका। करहु क्रिया परिहरि सब शोका
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी। विधिवत कालदेश गति जानी।

दो० मय तनयादिक नारि सब देइ तिलांजुलि ताहि
भवन गई रघुवीर गुण गण वरणति मन माहि

आइ विभीषण पुनि शिर नावा। कृपासिन्धु तब अनुज बुलावा।
तुम कपीश अंगद नल नीला। जामवन्त मारुत सुत शीला।
सब मिलि जाहु विभीषण साथा। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा
पिता वचन मैं नगर न जाऊं। आपु सरिस कपि अनुज पठाऊं
तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना
सादर सिंहासन बैठारी। तिलक कीन्ह अस्तुति अनुसारी।
जोरि पाणि सबही शिर नाये। सहित विभीषण प्रभु पहँ आये
तब रघुवीर विलोकि कपि लीन्हे। कहि प्रिय वचन सुखी सब कीन्हे

छं० कीन्हे सुखी सब कहि सुबाणी बल तुम्हारे रिपु हयो।
पायो विभीषण राज तिहुँ पुर यश तुम्हारो नित नयो॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहै
संसार सिन्धु अपार पार प्रयास बिनु तरि जाइहै॥

दो० सुनत राम के वचन मृदु नहिं अघात कपि पुंज
बारहिं बार विलोकि मुख गहहि सकल पद कंज।

तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुशल लै तुम चलि आवहु
तब हनुमान नगर महँ आये। सुनि निशिचरी निशाचर धाये।
पूजा बहु प्रकार तिन्ह कीन्हीं। जनक सुता दिखाय पुनि दीन्ही
दूरिहि ते प्रणाम कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकी चीन्हा

श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञानुसार लंका में लछमणजी करके विभीषणको राजगद्दी पर
बैठा कर राज तिलक करना ॥



कहहु तात प्रभु कृपानिकेता। कुशल अनुज प्रभु सेन समेता।
सब विधि कुशल कोशलाधीशा। मातु समर जीत्यो दशशीशा।
अविचल राज विभीषण पावा। सुनि कपि वचन हर्ष उर छावा

छं॰ अति मन तन पुलक लोचन जलज पुनि पुनि कह रमा।
का देउं तोहिं त्रैलोक्य महँ कपि किमपि बाणी नहिं समा
सुनु मातु मैं पायउं अखिल जग राज आजु न संशयम्
रण जीति रिपुदल बन्धु युत पश्यामि राम नमामियम्।

दो॰ सुनु सुत सतगुण सकल तव हृदय बसौ हनुमन्त
सानुकूल रघुवंश मणि रहहिं समेत अनन्त ॥

अब सोइ यतन करहु तुम ताता। देखौं नयन श्याम मृदु गाता।
तब हनुमन्त राम पहँ आये। जनकसुता कर कुशल सुनाये
सुनि बाणीपतंग कुलभूषण। बोलि लिये कपिराज विभीषण।
मारुत सुत के संग सिधावहु। सादर जनकसुता लै आवहु।
तुरतहि सकल गये जहँ सीता। सेवहिं सब निशिचरी विनीता
वेगि विभीषण तिनहिं सिखावा। सादर तिन सीतहि अन्हवावा
दिव्य वसन भूषण पहिराये। शिविका रुचिर साजि पुनि ल्याये
तेहि पर हर्षि चढ़ी बैदेही। सुमिरि राम सुख धाम सनेही।
वेत पाणि रक्षक चहुँ पासा। चले सकल मन परम हुलासा
देखन भालु कीश बहु धाये। रक्षक कोटि निवारण आये
कह रघुवीर कहा मम मानहु। सीतहि सखा पयादेहि आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं। बिहँसि कहा रघुवीर गुसाईं
सुनि प्रभु वचन भालु कपि हरषे। नभ ते सुरन सुमन बहु बरषे
सीतहि प्रथम अनल महँ राखी। प्रकट कीन्ह चह अंतरसाखी

दो॰ तेहि कारण करुणानिधि कहे कछुक दुर्वाद
सुनत यातुधानी सकल लागी करण विषाद

प्रभु के बचन शीश धरि सीता। बोली मन क्रम बचन पुनीता ।
लक्ष्मण होहु धर्म के नेगी। पावक प्रकट करहु तुम बेगी ।
सुनि लक्ष्मण सीता की बानी। बिरह बिवेक धर्म्म रति सानी ।
लोचन सजल जोरि कर दोऊ। प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये। पावक प्रकट काठ बहु लाये ।
प्रबल अनल बिलोकि बैदेही। हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही
जो मन क्रम बच मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं
तौ कृशानु सब की गति जाना। मो कहँ होउ श्रीखण्ड समाना
छं० श्रीखंड सम पावक प्रकट किय सुमिरि प्रभु तेहि महँ चली
जय कोशलेश महेश वन्दित चरणरज अति निर्म्मली।
प्रतिबिम्ब अवलोकित कलंक प्रचण्ड पावक महँ जरे
प्रभु चरित काहु न लखेउ सुर मुनि सिद्ध सब देखहिं खरे
तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति बिदित जो
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा रामहिं समर्प्यौ आनि सो।
सोइ राम बाम बिभाग राजित रुचिर अति शोभा भली
नव नील नीरज निकट मानहुं कनक पंकज की कली।
दो० हर्षि सुमन बर्षहिं बिबुध बाजहिं गगन निशान
गावहिं किन्नर अप्सरा नाचहिं चढ़ी बिमान।
श्री जानकी समेत प्रभु शोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हर्षेउ जय रघुपति सुखसार।
तब रघुपति अनुशासन पाई। मातलि चले चरण शिर नाई
आये देव सदा स्वारथी। बचन कहहिं जनु परमारथी।
दीनबन्धु दयाल रघुराया। देव कीन्ह देवन पर दाया
बिश्वद्रोहरत खल अति कामी। निज अघ गयउ कुमारगगामी
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी। सदा एक रस सहज उदासी।

अकल अगुण अनवद्य अनामय। अजित अमोघशक्ति करुणामय।।
मीन कमठ शूकर नरहरी। वामन परशुराम वपु धरी।।
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा। नाना तनु धरि तुमहिं नशावा।।
रावण पाप मूल सुर द्रोही। काम क्रोध मद रत अति कोही।।
सो कृपाल तव धाम सिधावा। यह हमरे मन अचरज आवा।।
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथ रत तव भक्ति बिसारी।।
भव प्रवाह सन्तत हम परे। अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे।।
दो० करि विनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अतिशय प्रेम सरोज भव अस्तुति करत बहोरि।।
छं० जयराम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक शायक चाप धरे।।
भव वारन दारन सिंह प्रभो। गुण सागर नागर नाथ विभो।।
तन काम अनेक अनूप छबी। गुण गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी।।
यश पावन रावन नाग महा। खगनाथ यथा करि कोप गहा।।
जन रंजन भंजन शोक भयं। गत क्रोध सदा प्रभु बोध मयं।।
अवतार उदार अपार गुनं। महिभार विभंजन ज्ञानघनं।।
अज व्यापकमेकमनादि सदा। करुणाकर राम नमामि मुदा।।
रघुवंश विभूषण दूषण हा। कृत भूप विभीषण दीन रहा।।
गुण ज्ञान निधान अमान अजं। नित राम नमामि विभुं विरजं।।
भुजदण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं। खल वृन्द निकन्द महा कुशलं।।
विनु कारण दीन दयाल हितं। छवि धाम नमामि रमा सहितं।।
भव तारण कारण काज परं। मन सम्भव दारुण दोष हरम्।।
शर चाप मनोहर तूण धरं। जलजारुण लोचन भूपवरम्।।
सुख मन्दिर सुन्दर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता शमनम्।।
अनवद्य अखण्ड न गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न मो।।
इति वेद वदन्ति न दंत कथा। रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा।।

कृतकृत्य विभो सब बानरये। निरखन्त तवानन सादरये॥
धृक जीवन देव शरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे॥
अब दीनदयाल कृपा करिये। मति मोरि विभेद करी हरिये॥
जेहि ते विपरीति क्रिया करिये। दुख में सुख मान सुखी चरिये॥
खलखंडन मंडन रम्य क्षमा। पद पंकज सेवित शंभु उमा॥
नृप नायक दे वरदान मिदं। चरणाम्बुज प्रेम सदा शुभदं॥
दो॰ विनय कीन्ह बहु भांति विधि प्रेम प्रफुल्लित गात।
बदन विलोकत राम कर लोचन नाहिं अघात॥
तेहि अवसर दशरथ तहं आये। तनय विलोकि नयन जल छाये॥
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा। आशीर्वाद पिता तब दीन्हा॥
तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ। जीतेउं अजय निशाचर राऊ॥
सुनि सुत वचन प्रीति अति बाढ़ी। नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना। चितै पितहि दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा। दशरथ भेद भक्ति मन लावा॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं। तिनक हं राम भक्ति दृढ़ देहीं॥
बार बार करि प्रभुहि प्रणामा। दशरथ हर्षि गये निज धामा॥
दो॰ अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोशलाधीश।
छवि विलोकि मन हर्षि अति अस्तुति कर सुरईश॥
छं॰ जय राम शोभा धाम। दायक प्रणत विश्राम॥
धृत तूण वर शर चाप। भुजदण्ड प्रबल प्रताप॥
जय दूषणारि खरारि। मर्दन निशाचर झारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भे देव सकल सनाथ॥
जय हरण धरणी भार। महिमा उदार अपार॥
जय रावणारि कृपाल। किये यातुधान बिहाल॥
लंकेश अति बल गर्ब। किये वश्य सुर गन्धर्व॥

मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सबके लाग॥
परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फल पापिष्ट॥
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन विशाल॥
मोहिं रहा अति अभिमान नहिं कोउ मोहिं समान॥
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रद दुख पुंज॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव। अव्यक्त जेहि श्रुति गाव॥
मोहिं भाव कोशल भूप। श्रीराम सगुण स्वरूप॥
वैदेहि अनुज समेत। मम हृदय करहु निकेत॥
मोहिं जानिये निज दास। दे भक्ति रमा निवास॥

छं॰ दे भक्ति रमा निवास। त्रास हरण शरण सुखदायकं।
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं॥
सुरवृन्द रंजन द्वन्द्व भंजन मनुज तनु अतुलित बलं।
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं॥

दो॰ अब करि कृपा विलोकि मोहिं आयसु देहु कृपाल।
काह करौं सुनि प्रियवचन बोले दीन दयाल॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निशिचरन्ह जो मारे॥
मम हित लागि तजे इन प्राना। सकल जियाउ सुरेश सुजाना॥
सुनु खगेश प्रभु की यह बानी। अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी॥
प्रभु चह त्रिभुवन मारि जिवाई। केवल शक्रहि दीन्ह बड़ाई॥
सुधा बरषि कपि भालु जियाये। हरषि उठे सब प्रभु पहँ आये॥
सुधा वृष्टि भै दुहुँ दल ऊपर। जिये भालु कपि नहिं रजनीचर॥
रामाकार भये तिन्ह के मन। गये ब्रह्म पद तजि शरीर रन॥
सुर अंशिक सब कपि अरु रीछा। जिये सकल रघुपति की इच्छा॥
राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुक्त निशाचर झारी॥
खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनिबर पावन॥

दो० सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान ।
देखि सुअवसर राम पहँ आये शम्भु सुजान ॥
परम प्रीति कर जोरि युग नयन नलिन बह बारि ।
पुलकित तन गदगद गिरा विनय करत त्रिपुरारि ॥

छं० मामभि रक्षय रघुकुल नायक ।
धृत वर चाप रुचिर कर शायक ॥
मोह महा घन पटल प्रभंजन ।
संशय विपिन अनल सुर रंजन ॥
अगुण सगुण गुण मन्दिर सुन्दर ।
भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥
काम क्रोध मद गज पंचानन ।
बसहिं निरन्तर जन मन कानन ॥
विषय मनोरथ पुंज कंज बन ।
प्रबल तुषार उदार पार मन ॥
भव वारिधि सन्दर पर मन्दर ।
कारय तारय संश्रित दुस्तर ॥
श्याम गात राजीव विलोचन ।
दीनबन्धु प्रणतारत मोचन ॥
अनुज जानकी सहित निरंतर ।
बसहु राम नृप मम उर अन्तर ॥
मुनि रंजन महि मण्डल मण्डन ।
तुलसि दास प्रभु त्रास विखंडन ॥

दो० नाथ जबहिं कोशल पुर होइहि तिलक तुम्हार ।
तब आइब मैं सुनहु प्रभु देखन चरित उदार ॥

करि विनती जब शम्भु सिधारे । तब प्रभु निकट विभीषण आये

नाइ चरण शिर कह मृदु बाणी। विनय सुनिय मम शारंग पाणी॥
सकुल सदल प्रभु रावण मारा। पावन यश त्रिभुवन विस्तारा॥
दीन मलीन हीन मति जाती। मोपर कृपा कीन्ह बहु भाँती॥
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे। मज्जन करिय सकल श्रम छीजे॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा। देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा॥
सब बिधि नाथ मोहिं अपनाइय। पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय॥
सुनत बचन मृदु दीन दयाला। सजल भये हरि नयन विशाला॥

दो० तोर कोश गृह मोर सब सत्य वचन सुनु तात।
दशा भरत की सुमिरि मोहिं पलक कल्प सम जात॥
तापस भेष शरीर कृश जपै निरन्तर मोहिं।
देखौं बेगि सो यत्न करि सखा निहोरौं तोहिं॥
जो जैहौं बीते अवधि जियत न पाऊँ वीर।
प्रीति भरत की समुझि प्रभु पुनि पुनि पुलक शरीर॥

सुनत विभीषण वचन राम के। हरषि गहे पद कृपा धाम के॥
बानर भालु सकल हरषाने। प्रभु पद गहि गुण विमल बखाने॥
बहुरि विभीषण भवन सिधाये। मणि गण वसन विमान भराये॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हँसि के कृपासिन्धु अस भाखा॥
चढ़ि विमान सुनु सखा विभीषण। गगन जाइ बर्षहु पट भूषण॥
नभ पर जाइ विभीषण तबहीं। वर्षि दिये पट भूषण सबहीं॥
जो जेहि मन भावै सो लेहीं। मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं॥
हँसत राम सिय अनुज समेता। परम कौतुकी कृपा निकेता॥

दो० ध्यानन पावहिं जासु मुनि नेति नेति कह वेद।
कृपा सिन्धु सोइ कपिन सों करत अनेक विनोद।
उमा योग जप ध्यान तप नाना व्रत मख नेम।
राम कृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम॥

भालु कपिन पट भूषण पाये। पहिरि पहिरि रघुपति पहँ आये
नाना जिनिसि देखि प्रभु कीशा। पुनि पुनि हँसत कोशलाधीशा
चितै सबनिपर कीन्ही दाया। बोले मधुर वचन रघुराया॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा। तिलक विभीषण कहँ पुनि सारा॥
निज निज गृह अब तुम सब जाहू। सुमिरहु मोहिं डरहु जनि काहू॥
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर। जोरि पाणि बोले सब सादर॥
प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा। हमरे हिय उपजे सुनि मोहा॥
दीन जानि कपि किये सनाथा। तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा॥
सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं। मशक कबहुं खगपति हित करहीं
देखि राम रुख बानर रीछा। प्रेम मगन नहिं गृह की इच्छा॥

दो॰ प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि।
हर्ष विषाद समेत सब चले विनय बहु भाखि॥
जामवन्त कपिराज नल अंगदादि हनुमान।
सहित विभीषण अपर जे यूथप अति बलवान॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमवश भरि भरि लोचन वारि।
सनमुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि॥

अति शय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल विमान चढ़ाई॥
मन महँ विप्र चरण शिर नावा। उत्तर दिशिहि विमान चलावा॥
चलत विमान कुलाहल होई। जय रघुवीर कहैं सब कोई॥
सिंहासन अति उच्च मनोहर। सिय समेत बैठे प्रभु तापर॥
राजत राम सहित भामिनी। मेरु शृंग जनु घन दामिनी॥
रुचिर विमान चला अति आतुर। कीन्ही सुमन वृष्टि हर्षे सुर
परम सुखद चल त्रिविध बयारी। सागर सुरसरि निर्मल वारी॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुं पासा। मन प्रसन्न निर्म्मल आकाशा
कह रघुवीर देखि रण सीता। लक्ष्मण इत्यो यहाँ इन्द्रजीता॥

अंगद हनूमान के मारे। रण महँ परे निशाचर भारे॥
कुम्भकरण रावण दोउ भाई। इहाँ हतेउँ सुरमुनि दुखदाई॥
दो० सुन्दरिसेतू देखु यह थापेउँ शिव सुखधाम।
सीता सहित कृपायतन शम्भुहिं कीन्ह प्रणाम॥
जहँ जहँ कृपासिन्धु बन कीन्ह वास विश्राम।
सकल दिखाये जानकिहि कहि कहि सबके नाम॥
सपदि विमान तहाँ चलि आवा। दण्डकबन जहँ परम सुहावा॥
कुंभजादि मुनि नायक नाना। गये राम सबके अस्थाना॥
सकल मुनिन सों पाइ अशीशा। आये चित्रकूट जगदीशा॥
तहँ करि ऋषिन केर सन्तोषा। चला विमान तहाँ ते चोखा॥
बहुरि राम जानकी दिखाई। जमुना कलिमलहरणि सुहाई॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रणाम करु सीता॥
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा। देखत जाहि पाप सब भागा॥
देखि राम पावनि पुनि बेनी। हरण शोक सुरलोक नसेनी॥
देखी अवधपुरी अति पावनि। त्रिविध ताप भव दाप नशावनि॥
दो० तब रघुनन्दन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम।
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह।
कपिन समेत महीसुरन्ह दान विविध विधि दीन्ह॥
प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई। धरि द्विज रूप अवधपुर जाई
भरतहि कुशल हमारि सुनावहु। समाचार लै पुनि चलि आवहु
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ॥
नाना विधि पूजा मुनि कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्ही
मुनिपद वन्दि युगल कर जोरी। चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी॥
इहाँ निषाद सुना प्रभु आये। नाव नाव करि लोग बुलाये॥

सुरसरि लाँघि यान जब आवा। उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा
तब सीता पूजी सुरसरी। बहु प्रकार करि चरणन परी॥
दीन्ह अशीष मुदित मन गंगा। सुन्दरि तव अहिवात अभंगा॥
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल। आवा निकट परम मन संकुल
प्रभुहि विलोकि सहित बैदेही। परेउ अवनि तलसुधि नहिं तेही
परम प्रीति विलोकि रघुराई। हर्षि उठाइ लीन्ह उर लाई॥

छं॰ लियहृदय लाइ कृपा निधान सुजान राम रमापती।
बैठारि परम समीप पूँछी कुशल सोकरि बीनती॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्य जे।
सुख धाम पूरणकाम राम नमामि राम नमामि जे॥
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उरलाइये।
मति मन्द तुलसीदास सो प्रभु मोह वश बिसराइये॥
यह रावणारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा।
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा॥

दो॰ समर विजय रघुनाथ के सुनहिं जे संत सुजान।
विजय विवेक विभूति नित तिनहिं देहिं भगवान॥
यह कलि काल मलाय तन मन करि देखु विचार।
श्री रघुनायक नाम तजि नहिं कछु आन अधार॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादनो नाम षष्ठः सोपानः समाप्तः